

छत्तीसगढ़ के माटी चंदन

(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)

संपादक
राकेश तिवारी

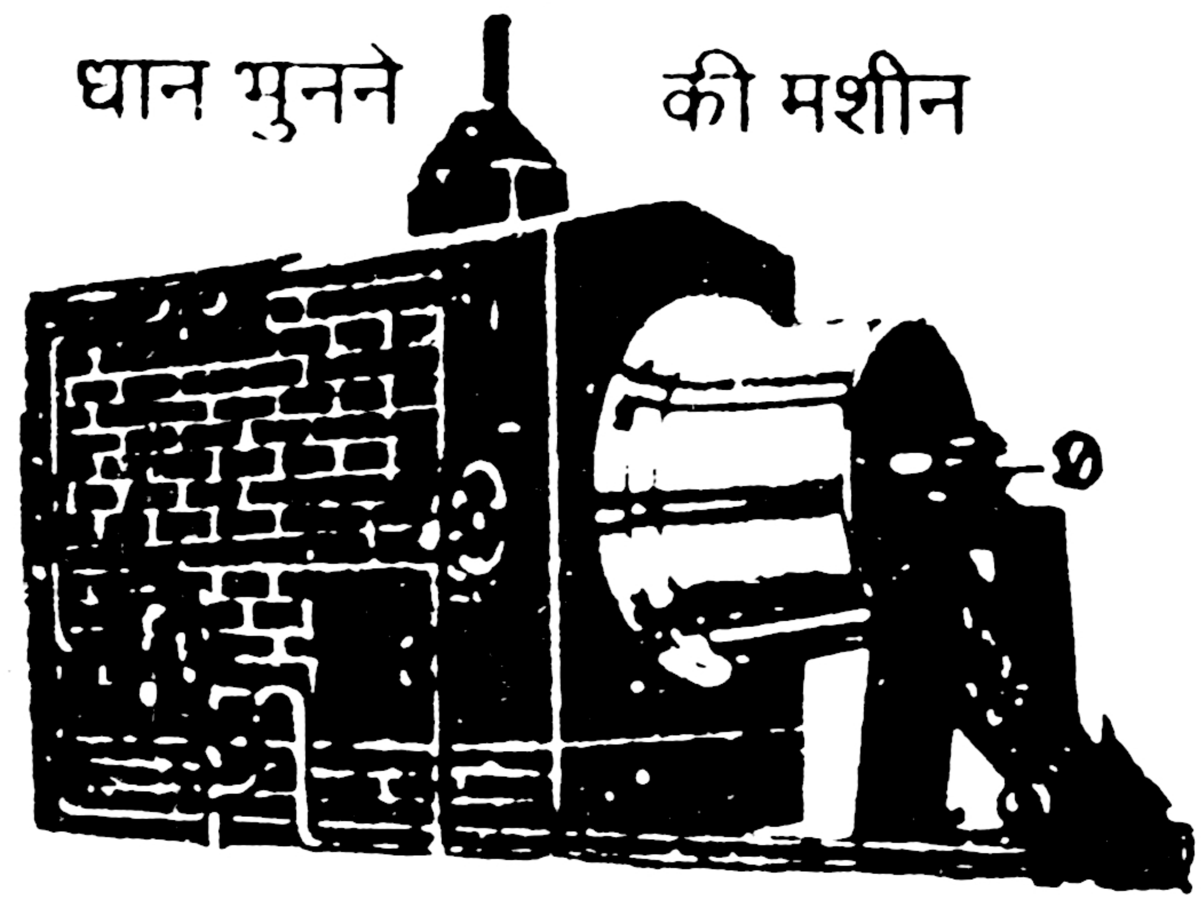
प्रकाशक
चित्रोत्पला लोककला परिषद्, रायपुर (म.प्र.)
(नगर निगम, रायपुर के सहयोग से)

पोहा मिल मालिकों के लिये खुशखबरी

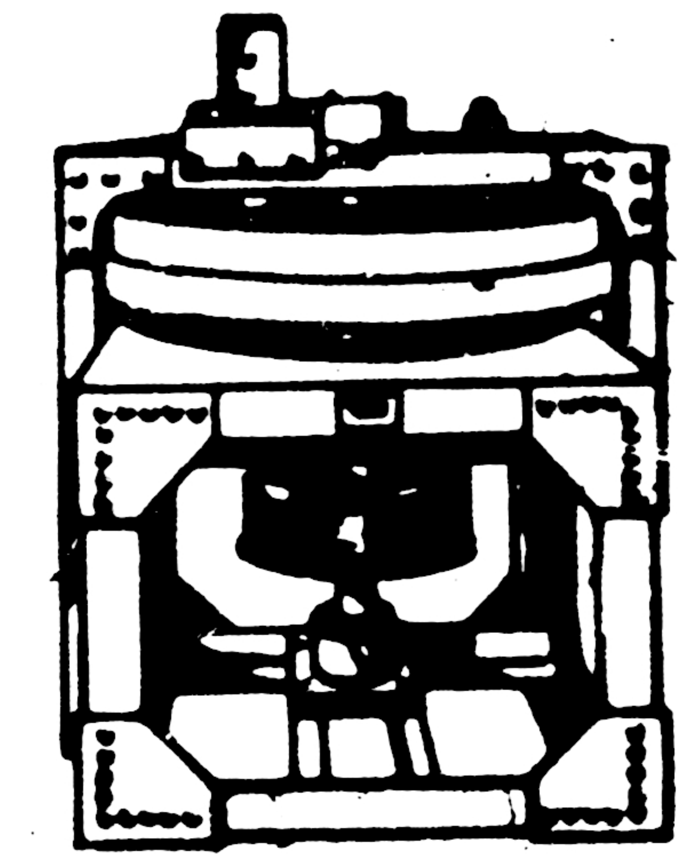
भारत में सबसे अधिक बिकने वाली पोहा/रोस्टर मशीन

मजदूरी की बचत अधिक उत्पादन
आधुनिक तकनीक से निर्मित
रोस्टर मशीन द्वारा धान की सेकाई

धान भुनने की मशीन



ताज ब्रांड रोस्टर मशीन



ताज ब्रांड पोहा मशीन

रोस्टर मशीनों की साईज

स.	वजन कि.ग्रा.	क्षमता	मूल्य
A	550	1 से 3	18,700/-
B	650	2 से 4	22,100/-
C	700	3 से 6	23,800/-
D	1000	4 से 8	34,000/-
E	1200	6 से 10	44,200/-

पोहा मशीनों की साईज

	सेक्शन रिंग/ ड्रम साइज	फ्रेम/मशीन साईज	क्षमता घंटा		मूल्य
A	35	39x39	1.5	बोरा	28,000/-
B	36	39x39	2	बोरा	33,000/-
C	37	40x40	2	बोरा	38,000/-
D	40	45x45	2.5	बोरा	48,000/-
E	45	50x50	3	बोरा	58,000/-

अन्य सुविधाएं

१. मशीनों के साथ आवश्यक पुर्जे भी उपलब्ध
२. कुड आयल, धान भूंसा, सॉ डस्ट से फर्नेस गर्म करने की सुविधा
३. पोहा/रोस्टर एवं पूरे प्लांट फिटिंग की विशेष सुविधा
४. आर्डर देने पर हर प्रकार की मशीनें तैयार करने की सुविधा

निर्माता - ताज इंजीनियरिंग कंपनी

के.के. रोड, मौदहापारा, नहर के पास, रायपुर - 492001 म.प्र. (भारत)
फोन : ऑ. 523399, 524091, 524092, 524093
फैक्टरी : 323949, 32309, निवास : 533766, 534965
एस.टी.डी. कोड नं. 0771 ग्राम - ताजमशीन

नोट - परवायलिंग एण्ड ड्रायर बनाएं जाते हैं ।
राईस मिल से संबंधित किसी भी कार्य के लिए संपर्क करें

छत्तीसगढ़ के माटी चंदन

(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)

संपादक
राकेश तिवारी

प्रकाशक
चित्रोत्पला लोककला परिषद्, रायपुर (म.प्र.)
(नगर निगम, रायपुर के सहयोग से)

प्रथम संस्करण -
स्वतंत्रता दिवस ९६
मूल्य
चालीस रुपये

प्राप्ति स्थान
चित्रोत्पला लोककला परिषद
२९/३८६, लिली चौक
पुरानी बस्ती, रायपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ के माटी चंदन

(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)

संपादक

राकेश तिवारी

प्रकाशक -
चित्रोत्पला लोककला परिषद
(नगर निगम रायपुर के सहयोग से)

अक्षर रचना एवं मुद्रण
आरंग प्रिंटर्स
२१, नवीन बाजार, रायपुर (म.प्र.)

छत्तीसगढ़ के माटी चन्दन

छत्तीसगढ़ में काव्य प्रतिभा के प्रचुरता हे। जउन छत्तीसगढ़ में आदि कवि वाल्मीकि जनम लेइस अउ रामायण असन महाकाव्य के रचना करिस, वो धरती, वो माटी काव्य- प्रतिभा बर उर्वर तो होवे करिही । जइसे धान के दस हजार प्रजाति उपजाये के ये धरती के माटी अउर जलवायु म गुण हे, वइसने इहां आनी-बानी के काव्य प्रतिभा जनमाये के क्षमता घलो हे ।

ये ग्रंथ म छत्तीसगढ़ी भाषा के १२८ कवि मन के कविता के संघरा हे । उनकर थोर-थोर परिचय घलो हे । फेर, कवि के असली परिचय तो ओकर कविता च हर होथे । कविता ल पढ़े ले गम मिलथे कि कोन कवि में कतका प्रतिभा हे । अनेक अनेक कवि अउ उनकर कविता मन ला सकेलना बड़ श्रम साध्य बुता आय । ये काम ला कुशलतापूर्वक भाई राकेश तिवारी ह करे हे । दू-अढ़ई बरिस ले वो हर ये काम म लगे रहिस हे । अब जाके ओला सफलता मिलिस हे । ये ह नान मुन काम नोहे । अतेक बड़ संघरा प्रस्तुत करे बर उन छत्तीसगढ़ी भाषा भाषी मन के बधाई के पात्र हे ।

भाई राकेश तिवारी म अद्‌भुत कार्यक्षमता हे । आरंभ में उन छत्तीसगढ़ लोककला समिति के पदाधिकारी के रुप में सक्रिय रहिन हे । ये समिति के काम जब शिथिल पर गे तो उन चित्रोत्पला नाव के संस्था के निर्माण करिन। आज ये संस्था के साथ लगभग १०० कलाकार जुड़े हवय । ये संस्था ह वो मन ला मंच देवाइस अउ उनकर उत्साह ल बढ़ाइस । एकर सिवाय एक महत्वपूर्ण बुता वो करे हे छत्तीसगढ़ी के ३०० आडियो कैसेट अउ २० वीडियो कैसेट के संघरा । ये हर उनकर बड़ ऐतिहासिक महत्व के काम आय । ये काम मा उन कतका धन अउ श्रम खरचा करिन होही तेकर अन्दाज मोला नइये । ओतके धन अउ श्रम के खरचा ये पुस्तक के प्रकाशन म होवय्या हे । अतके नहीं, राकेश भाई हर लोकगीत, लोककथा, लोक वाद्य के संघरा घलो करे हे । छत्तीसगढ़ी गौरव प्रेमी जनता के सहयोग होही त उनकरो प्रकाशन हो जाही। उनकर चित्रोत्पला संस्था के सबले महत्वपूर्ण काम आय डा० खूबचंद बघेल के लिखे छत्तीसगढ़ी नाटक जरनैल सिंह के उत्कृष्ट मंचन । छत्तीसगढ़ी में अनेक प्रभावशाली नाटक आज ले नइ लिखे गे हे । ये सब काम करे के बाद राकेश भाई रेडियो अउ टेलीविजन म घलो नियमित कार्यक्रम देथे । ओकर कार्यक्षमता ल देख के तो मैं अकबका जाथौं ।

छत्तीसगढ़ी महतारी, छत्तीसगढ़ी भाषा लोक कला अउ लोक साहित्य के जतका समर्पण भाव से सेवा भाई राकेश तिवारी ह करत हे, ओतका कोनो नइ करत हे । सब तो धंधा के पुरती होगे हे। महतारी कोती अउ लोक संस्कृति कोती कखरो चेत नइये ।

ये हर वड़ दुर्भाग्य के वात आय । अपन संस्कृति के सुरक्षा अउ स्वाभिमान के सुरक्षा वर जव तक राकेश भाई असन समर्पण भावना नइ होही, छत्तीसगढ़ के उद्धार नइ हो सकय।

हमर छत्तीसगढ़ी भाषा ह वहुतेच प्राचीन अउ समृद्ध भाषा आय । भाषा च हर लोक संस्कृति ला अभिव्यक्त करथे । ते पायके छत्तीसगढ़ी भाषा के समृद्धि वर जउन भी लिखथे पढ़थे - वोलथे वो मन सिरतोन म छत्तीसगढ़ महतारी के असली सेवा करथें । हम अपन भाषा ल भुला जावो, नइ वोलवो, लिखवो पढ़वो तो हमर छत्तीसगढ़ी पहिचान कइसे होही । छत्तीसगढ़िया होना ओतके गौरव के वात आय जतका भारतीय होना । जउन ला छत्तीसगढ़ से प्रेम नइये ओकर देश प्रेम घलो झूटा है। एकरे सेती जव छत्तीसगढ़ी म लिखैया- पढ़ैया मन ला देखथौं तो मोला वड़ खुशी होथे । ये संघरा के माध्यम से मैं कतको नवा कवि मन से परिचित होय हौं । एकर वर मैं राकेश भाई के आभारी हौ । कवि मन से अतके विनती हे कि उन जउन भी लिखै, छत्तीसगढ़ के हित ल ध्यान म रख के लिखें , अइसे लिखें कि ओकर से छत्तीसगढ़ अउ छत्तीसगढ़ी भाषा के गौरव-गरिमा वाढ़य । जउन भी लिखै चिन्तन - मनन अउ अध्ययन के वाद लिखैं । राकेश भाई हर ये ग्रंथ के सम्पादन के भार मोर उपर डारे रहिस हे । फेर अत्याधिक व्यस्त होय के कारण मैं समय नइ निकाल पायेवं । ते पायके सम्पादन के भार मैं राकेश भाई उपर सउंप देय हौ।

अंत में ये संघरा के अपन पुरखा कवि मन ला प्रणाम अउ नवा कवि मन के हृदय से स्वागत करत हौं । निष्काम भाव से सरस्वती के सेवा म लगे रहव, कल्याण अवश्य होही ।

शुभकामना के साथ --

- हरि ठाकुर

अपन गोट

ये किताव छपवाय के पहिली मोर मन में सपना रहिस, के छत्तीसगढ़ के सवो कवि मन के कविता, फोटो अऊ थोरकुन परिचय, पता टिकाना समेत ऐंमा समो सकव । अपन कोती ले मय दू वछर ले गजवे उदिम करेंव फेर तभो ले ये किताव म दू चार झन कवि मन के रचना नई छप सकीस ये वात के मोला दुख हवय अउ मय उन सवले माफी घलो मांगत हव ।

हमर छत्तीसगढ़ी भाखा जैसे पोट अउ समरथ भाखा में अनगिनित कवि अउ गीतकार हे, अउ उनला सकेलना वहुतेच मुश्कुल काम हे. कावर के कईयों झन अइसे घलो होईन जेकर रचना लोकगीत के रुप में अभी भी चलत हे फेर विचारा मनके नांव वुतागे हे। अइसे घलो छत्तीसगढ़ के मनखे नांव अउ पईसा कमाय के चक्कर म नई रहाय । ओ तो साधु वरोवर दुनियां मं सवके वीच रहिके भी अलग रईथे इही कारन ले एक हजार साल के इतिहास में छत्तीसगढ़ी भाखा में जतका सृजन होइस तेखर आधा हा घलो किताव के रुप नई धर पाइस । अभी घलो कतकोन पांडु लिपि दिंयार खात परे हे । ये सव ला खोज के हम कहुं किताव के रुप दे पातेंन त छत्तीसगढ़ के इतिहास वदल जातिस । गियान, धियान, चिंतन अउ सृजन मं छत्तीसगढ़ कोनो जगा ले पिछू नइये फेर अपने मुंह मं गुन गा गाके जगजाहिर करई ह ओला नई भावय ।

किताव मं कवि और गीतकार मन के जनम तारीख ला लेके ओरी वनायगे हावय जउन साहित्यकार मन के सिरिफ जनम साल भर मिले रहिस वोला एक जनवरी मान ले गे हावय । मंय नगर निगम रायपुर के संगे संग व्यक्तिगत रुप से सर्व श्री हरिठाकुर, गजराज पगारिया, जलील रिजवी, रोहित रजक, डा० प्रवीण शर्मा के आभारी हव जेकर सहयोग ले ये किताव आप मन के हाथ मं पहुंच सकीस।

राकेश तिवारी

कोन जघा कोन


पं० सुन्दरलाल शर्मा

जन्म - पूस अमावस्या सन् १८८१ चमसूर में ।
प्रकृ - लगभग १८ ग्रंथों के रचयिता, दुलरुवा पत्रिका का संपादन, छत्तीसगढ़ी दान लीला (काव्य संग्रह) सर्वाधिक लोक प्रिय छत्तीसगढ़ी कृति।
उप - छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन के पुरोधा सन् १९०५ में बाबू छोटे लाल के साथ कंडेल नहर सत्याग्रह में भागीदारी । आपके प्रयास से ही छत्तीसगढ़ में गांधी जी का आगमन हुआ । अनेकों बार जेल यात्रा, अंतिम समय तक अछूतों के उद्धार के लिए कार्य । देहावसान - सन १९४० में

दानलीला कवितांश

जतका दूध दही अउ लेवना । जोर जोर के दुध हा जेवना ।।
मोलहा खोपला चुकिया राखिन । तउन ला जोरिन हैं सवझिन ।।

दुहना टुकना वीच मढ़ाइन । घर घर ले निकलिन रौताइन ।।
एक जंवरिहा रहिन सवे ठिक । दौरी में फांदे के लाइक ।।

कोनो ढेंगी कोनो वुटरी । चकरेटूठी दीख जइसे पुतरी ।।
एन जवानी उठती सवके । पंद्रा सोला वीस वरिस के ।।

काजर आंजे अंलगा डारे । मूड़ कोराये पाटी पारे ।।
पांव रचाये वीरा खाये । तरुवा में टिकली चटकाये ।।

वड़का टेड़गा खोपा पारे । गोंदा खोंचे गजरा डारे ।।
पहिरे रंग रंग के गहना । ठलहा कोनो अंग रहे ना ।।

कोनो पैरी चूरा जोड़ा । कोनो गठिया कोनो तोंड़ा ।।
कोनो ला घुंघरु वस भावे । छम छम छम छम वाजत जावें ।

खनर खनर चूरी वाजै । खुल के कक्नी हाथ विराजे ।।
पहिरे वहुंटा और पछेला । जेखर रहिस सौंख हे जेला ।।

दोहा

करधन कंवर पटा पहिर, रेंगत हाथी चाल
जेमा ओरमत जात हे, मोती हीरा लाल ।



डॉ० मुकुटधर पांडेय

जन्म - ३०-०९-१८८५, ग्राम बालपुर (रायगढ़)

प्रकृ - पूजा फूल १९१६, हृदयदान १९१८, परिश्रम १९१७, लक्षमा १९१७, शेरबाल १९१६, मामा १९२४, छायावाद एवं अन्य निबंध १९७९, स्मृति पुंज १९८३, विश्वबोध १९८४, छायावाद एवं अन्य श्रेष्ठ निबंध १९८४, मेघदूत १९८४, इसके अलावा सन् १९०१ से १९२७ तक आप लगभग पचास महत्वपूर्ण लेख लिखे

उप - पंडित मुकुटधर पाण्डेय युग प्रवर्तन कवि है । आप न केवल छायावाद के प्रथम कवि है, बल्कि छायावाद के प्रथम समीक्षक भी है । छायावाद नाम भी आप ही का दिया हुआ है । छायावाद के प्रथम कवि के रुप में स्वयं जयशंकर प्रसाद ने आपको स्वीकार किया है ।

उत्तर कांड का एक अंश (छत्तीसगढ़ी में)

अव तो करम के रहिस एक दिन वाकी
कव देखन पावो राम लला के झांकी
हे भाल पांच में परिन सवेच नर नारी
देहे दुवराइस राम विरह मा भारी
दोहा - सगुन होय सुन्दर सकल सवके मन आनंद ।
पुर सोभा जइसे कहे, आवत रघुकुल चंद ।।

महतारी मन ला लगे, अव पूरिस मन काम
कोनो अव कहतेच हवे, आवत वन ले राम
जेवनी आंखी औ भूजा, फरके वारंवार
भरत सगुन ला जानके मन मां करे विचार
अव तो करार के रहिस एक दिन वाकी
दुख भइस सोच हिरदे मंचल राम टांकी
कइसे का कारण भइस राम नई आईन
का जान पाखंडी मोला प्रभु विसराईन
धन धन तै लक्ष्मिन तै हर अस वड़भागी
श्रीरामचंद्र के चरन कवल अनुरागी
चीन्हिन अड़वड़ कपटी पाखंडी चोला
ते कारन अपन संग नई लेईन मोला

करनी ला मोर कभू मन मा प्रभू धरही
तो कलप कलप के दास कभू नई तरही
जन के अवगुनला कभू चित नई लावै
वड़ दयावंत प्रभु दीन दयाल कहावै
जी मा अव मोर भरोसा एकोच आवै
झट मिलहि राम सगुन सुभ मोला जनावै
वीते करार घर मा परान रह जाही
पापी ना मोर कस देखे मां कहूं आही
दोहा - राम विरह के सिन्धु मां, भरत मगन मत होत ।
विप्र रुप धर पवन सुत, पहुंचिन जइसे पोत ।।



प्यारेलाल गुप्त

जन्म - १७-८-१८९१

प्रकृ - सुखी कुटुम्ब और लवंगलता (उपन्यास) पुष्पहार, (गल्प संग्रह) फ्रांस की राज्य क्रांति और ग्रीस का इतिहास, बिलासपुर वैभव, रतनपुर के विष्णु यज्ञ का स्मारक ग्रंथ, एक दिन (प्रहसन) प्राचीन छत्तीसगढ़ सहित दर्जनों ग्रंथ ।

उप - छत्तीसगढ़ विभागीय हिन्दी साहित्य के भिलाई अधिवेशन के अध्यक्ष पद को भी आप गौरवान्वित कर चुके हैं । देहावसान वर्ष ९२-९३ में आपका देहावसान हो गया ।

फूलों घलो गोठियाथैं

गांव मं फूल घलो गोठियाथैं ।
जव सव किसान सो जाथैं

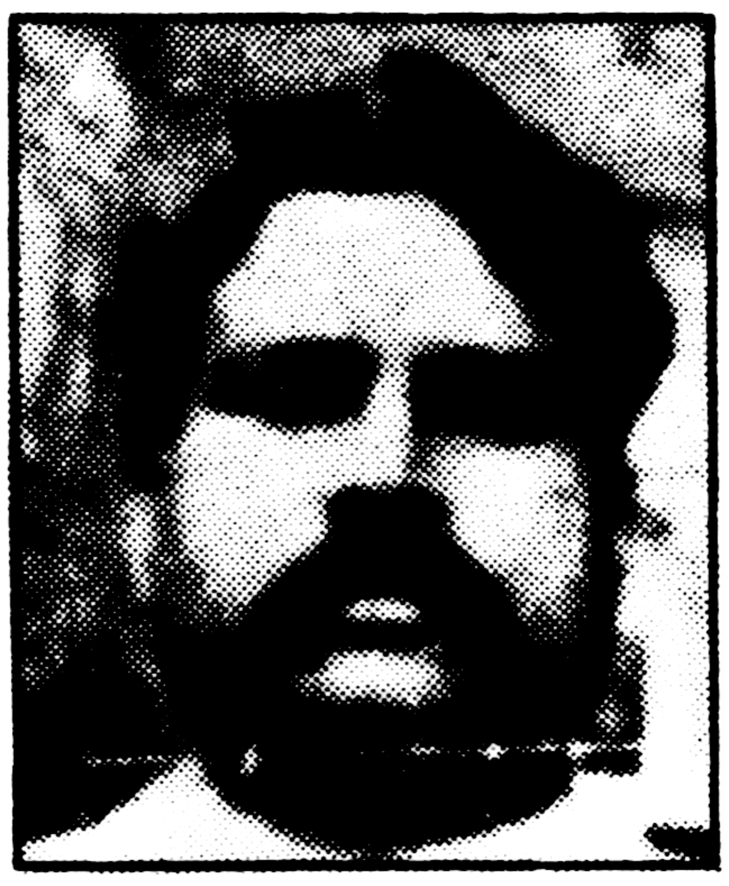
झाई झुई लाल गुलाली
देख चांद मुसकाथै
खोखमा खिल खिल हांसे लगथै ।
कंवल फुल सकुचाथै ।
गांव मां ----

अंग अंग मां सोनहा गहना
लादे गोंदा आथे ।
संग चनैनी गोंदा लेके
घर घर अलग जगाथे
गांव मां ---

दूनों वहिनी सदा सुहागिन
गली गली इतराथै ।
पचरंगा वस चार महीना
मां, हा भाग पराथे ।
गांव मां ---

फल तरोई जगमग जगमग
डेखरा मां लहराथै ।
अइसे लगथे गंज अक सुकुवा
उतर सरग ले छाथे ।
गांव मां ---

सरसों रानी पिंवरा पहिरे
झमक के वाहिर आथै ।
नील वरन के कलगी खोंचे
अरसी नैन चलाथे ।
गांव में फूल घलो गोठियाथै ।



गिरवर दास वैष्णव

जन्म - १८९३ पौष पूर्णिमा, ग्राम माचाभाट (बलौदाबाजार)
प्रकृ - छत्तीसगढ़ी सुराज (काव्य संग्रह)
उप - आपने अपनी रचनाओं में अंग्रेजों के अत्याचार, जमीदारों के शोषण, हरिजनों पर अत्याचार, किसानों के दयनीय हालत जैसे अनेकों समस्याओं को बड़े ही बेखुबी ढंग से वर्णन किये हैं ।

देशद्रोहि ले दुर्दशा

तिनकर कुल मा पैदा होके
अंगरेज मन के गयेन शरन ।
उन्हीं ला भाई वापू बनाके
ऊखरे सेवा हमीं करन।
ऊंकर जूठा काठा खाके
जी हुजूर हम वने रथन
ऊंकरे मुंह ला जोहत जाके
हम वगला में खड़े रथन ।
अपन देश भाई मन के
चूंदी ला उनला धरा दिएन ।
खुरसी पाये के लालच मा
गरुवा वैला कटवायेन ।
मंदिर घलों के भेद वताके
वोहू मा टिक्कस लगवायेन ।
चीज स्वदेशी नइ लेके, भारत
ला कगला करवायेन ।
माल विदेशी अउ विलायती
लेके नकटा कहलायेन ।
हमर देश के माल खजाना
एको वांचे नइ पाइस ।
लेग लेग के सकल चीज ला
विलायत मा भरवाइस ।
अंगरेजवा मन हमला ठगके
हमर देश मा राज करय ।
हम कइसे नालायक वेटा
ऊंकरे आदर मान करय ।।



द्वारिकाप्रसाद तिवारी
"विप्र"

जन्म   ०६-०७-१९०८ विलासपुर, प्र.कृ. राम अउ केंवट संवाद (छत्तीसगढ़ी) कुछु कांही (१९३५) छत्तीसगढ़, कांग्रेस विजय आल्हा (१९४७) शिव स्तुति (१९३७) हिन्दी, गांधी गीत (१९४८) हि., क्रांति प्रवेश (१९५७) हि., सुराज गीत (१९५७) छत्तीसगढ़ी, पंचवर्षीय योजना गीत (१९६१), गोस्वामी तुलसी दास की जीवन (१९७३) फागुन गीत (१९६८)ऋतु महाकवि कालीदास कीर्ति (१९७९)

उप. - सुवा और करमा छंदों का प्रयोग सबसे पहले तिवारी जी ने ही किया। आप अपने निःसर्ग जाल उत्तम प्रतिभा शक्ति एवं अथक परिश्रम से छत्तीसगढ़ी काव्य को मंचों पर प्रतिष्ठित किया ।

छत्तीसगढ़ महतारी

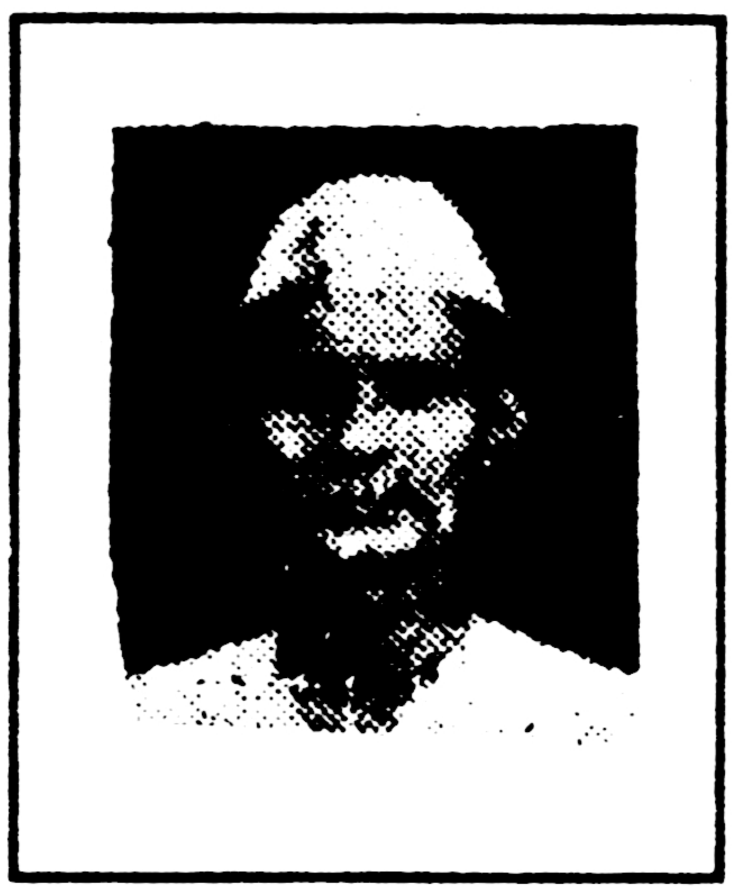
तोला वंदव वो छत्तीसगढ़ महतारी
तोर माटी मां जनम लिहेंव मैं तै मोर परम पियारी

इंहे रतनपुर - शवरी नरायेन, पीथमपुर वेलपान ।
सोमनाथ, सिरपुर, राजिम सव करत हे तोर गुनगान ।
महानदी तो कोख ले ओगरिस, महासमुंद तनधारी

विजली कोईला कोरवा उगलिस लोहा ढारे भिलाई ।
वैलाडीला के वाढ़िस महात्तम, करिस विदेशी कमाई ।
धान तो उपजातेच हस तैं, सवके अस जेवन थारी

विद्या वुद्धि गजव वढ़ाईन, माखन कवि गोपाल ।
भानु कवि, लोचन पांडे अउ पांडे श्री सुखलाल ।
सरस्वती के पुत्र कहाईन, जस पाईन वड़ भारी

शर्मा सुंदर लाल इंहे के, ठाकुर प्यारे लाल ।
छेदीलाल वैलिस्टर, मेघावाले रामदयाल ।
वावू छोटेलाल जनम के, खपगे पारी पारी



कोदूराम दलिल

जन्म - ०५-०३-१९१० ग्राम - टिकरी (दुर्ग)
शिक्षा - विशारद
प्र.कृ. - सियानी गोठ
उप. - अप्रकाशित कृतियां है - हमर देश, कनवा समधी, दू मितान, प्रकृति वर्णन, बाल कवि । मंच के हास्य व्यंग्य कवि ।

ओरी ओरी दिया बारबो

आइस सुग्घर परब सुरहुत्ती अऊ देवारी
चल नोनी, हम, ओरी, ओरी दिया बारबो ।
जउन सिपाही जी- परान होमिन स्वदेश बर
पहिली उंकरे आज आरती, हम उतारबो ।
वो लछमी के पूजा हमला करना हेबय
जेहर राष्ट्र -सुरक्षा-कोष हमर भर देही ।
उही सोन-चांदी ऊपर हम फूल चढ़ाबो
जेकर से बैरी मारे बर, गोली लेही ।
झन लेबे बाबू रे, तैं फूलझड़ी फटाका
बिपदा के बेरा मां दस- पंघरा रुपिया के ।
येखर से तो ऊनी कम्बल लेबे तैंहर
देही काम जाड़ मां, एक सैनिक भइया के ।
राउत भइया, चलो आज सब्बो झिन मिलके
देश जागरण के दोहा हम खूब पारबो ।
सेना मा जाए खातिर जे राजी होही
आज उही भय्या ल हम्म तिलक सारबो ।
देवारी के दिया घलो मन कहत हवयं के
भइया होरे, कब तुम्मन अंजोर मं आहू ?
खेदारो मेंड़ों के रावन मन ला पहिली
फेर सुरहुती अउ देवारी खूब मनाहूं ।



नारायण लाल परमार

जन्म - १ जनवरी १९१७ अंजार (कच्छ) गुजरात
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी), साहित्य रत्न, विक्रम शीला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर (बिहार) द्वारा विद्यावाचस्पति की मानद उपाधि ।
प्रकाशित पुस्तकें - तीन उपन्यास, एक कहानी संग्रह, चार काव्य संग्रह और पन्द्रह बालोपयोगी पुस्तकें ।
उप. - शासकीय महाविद्यालय, धमतरी जिला- रायपुर (म.प्र.) से सन् १९८७ में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद से सेवा निवृत्त।
पता - पीटर कालोनी, टिकरापारा, धमतरी, जिला-रायपुर (म.प्र.) ४९३ ७७३

रेंगना सुहावत हे

नदिया के कुधरी साहीं काबर बइठ जान
पानी कस लहर लहर रेंगना सुहावत हे ।
हिम्मत राखेन, मानेन
आत्मा के कहना ला ।
पहिरेन हम सबर दिन
आगी के गहना ला ।
सुरुज, बिंदिया बन चमकय हमार माथ मां,
करके अब करिया मुंह, अंधियारी जावत हे ।
मितानी चलत हावय
हाथ अउ पांव के ।
हम दुकान नइ खोलेन
घाम अउ छांव के ।
छोटे अउ बड़े फलं, हमर बर बरोबर हे,
उहिच पाय के जिनगी, गजब महमहावत हे ।
चीखे हन, हम सवाद,
नवा-नवा 'डहर के
देखे हन नौटं की
अमृत अउ जहर के
पी डारेन जहर ला, संगी । हम नीलकंठ ,
हमर पछीना अमृत सहीं चुहचुहात हे ।
तराजू मां नइ तौलेन
हमन अपन सांस ला ।
हांसत-हांसत हेरेन
पीरा के फांस ला ।
अड़चन ला मानेन हम निच्चट चंदन चोवा,
धरती महतारी के भाग मुचमुचावत हे ।



वद्रीविशाल परमानंद

जन्म - ०३-०७-१९१७ ग्राम छतौना (मंदिर हसौद),
शिक्षा - साहित्य विशारद, प्रकृ. - पिंबरी लिखे तोर भाग
उप. - आपके नाम से (परमानंद भजन मंडली) लगभग एक सौ मंडली है, जो आपके द्वारा लिखे गये भजनों को गाते है । आपने सैकड़ों की संख्या में हिन्दी और छत्तीसगढ़ी गीत, भजन, फाग गीत और जस गीत लिखे हैं ।आपके लिखे गीतों को छत्तीसगढ़ के प्रख्यात कलाकार सर्वश्री केदार यादव, गन्नू यादव, ममता चंद्राकर, साधना यादव, जयंती यादव, शेख हुसैन, नरेश निर्मलकर तथा राकेश तिवारी आदि कलाकारों ने विभिन्न मंचों के द्वारा प्रस्तुत किए हैं । अब आप हमारे बीच नहीं रहे ।

गंगा बोहिगे राम

मन मां सोचे राजा भागीरथी कइसे होगे राम
भोले नाथ के जटा ले हो, गांगा वोहिगे राम

विस्नु के चरनामृत गंगा, व्रम्हा ल गोहरायेव
महादेव ला झोंके ल केहेव, तेकर फलला पायेंव
गौरीनाथ के जटा के पुरति, गंगा होगे राम

मर-मर के मैं करेव तपसिया, तन ला अपन तपायेंव
पेट भरीस ना पुरखा तरिस, फोकट के दुख पायेंव
मोर पुरखा मन के, मोरो मन के आशा रहिगे राम

अव का करिहव घर मां जाके, का मुंहु ला देखाहूं
शिव शिव शिव शिव गंगा गंगा, जपत जपत मर जाहूं
उम्हगे संकर के संगुरिया तेमा, राजा वुढ़गे राम

भोलेनाथ दयालु देखीस , गत ला भागीरती के
गंगा धार जटा ले निकलिस, दुध के धार सरीके
राजा भागीरत के पीढ़ी के पीढ़ी, पुरखा तरगे राम



वृजलाल प्रसाद शुक्ल

जन्म - ०१-०७-१९१९, मुंगेली (बिलासपुर),

शिक्षा - शिक्षा कम, अनुभव ज्यादा, प्रकृ. चंदा उये अकाश मं (१९६७) प्रयास प्रकाशन द्वारा ।

उप - १५ अगस्त १९४७ की स्वतंत्रता प्राप्ति के उपलक्ष में आयोजित काव्य गोष्ठी में मन को एकाग्र और संकोच का परित्याग कर एक सामयिक रचना हिंद से गोरे गये चौदह अगस्त की रात को, जन मन के समक्ष प्रथम बार मुंगेली में सुनाया। सन् १९४० से आप लगातार मुंगेली नगर पालिका परिषद के अंतर्गत बिव्वबाई मोहरे पुस्तकालय में पांच रुपये प्रतिमाह की नौकरी से गुजरते हुए मुख्य लिपिक के रुप में सेवा निवृत्त हुए ।

बाबू बी.ए. फेल रे

अरे विधाता ये का होगे, बिगर गईस सब खेल रे ।
मोर गिरस्ती चौपट होगे, बिन पटरी के रेल रे ।
जमों बेचागे खेती बारी, करजा हय मुड़पेल रे ।
दुई अषाढ़ दूबर बर होगे, बाबू बी.ए. फेल रहे ।
अपन समझ के खूब पढ़ायेंव, चार अच्छर पढ़ जाही ।
का जानंव गत अइसन करही, खा पी के मेछराही ।
ठौर ठौर मं हाथ पसारेंव दुख सांसत सब झेल रे ।
मन के सब मनसूबा रहिगे, बाबू बी.ए. फेल रहे ।
रुखा सूखा खाके भैया, काटेंव दिन अउ रात ल ।
लइका मन के खातिर दादू, सहेंव बहुत कुछ बात ल ।
ढाकेंव तन चिथरा गोंदरा, गेंडरा बाढ़े बिन तेल रे ।
छाती फाटत सुन के बोली, बाबू बी.ए. फेल रे ।
खटिया सोये घर भीतर ले, बइठे तारा गिन लव ।
दूर दूर के कौड़ी फेंकत, लइका हय मोर चिन्ह लव ।
तन पातर धन झांझर होगे, कइसे खवय मेल रे ।
दिन के बिगरे बात बिगरथे, बाबू बी.ए. फेल रे ।
बड़ा चटरहा लइका होगे, पढ़के अच्छर कारी ।
कई हजार देके सीखत हें, शुद्ध अंग्रेजी गारी ।
काया हे मुनगा कस कांड़ी, जरे टार्च के सेल रे ।
बिन पानी के नंगरा तपथे, बाबू बी.ए. फेल रहे ।
गली गली मां ओरझत फिरथे, बात बात मं झगड़ा ।
अंडा के लकरी कस टोरथे, दाई ददा के रगड़ा ।
जियत ठिकाना नइये सुन लव, गाथा हवय अपेल रे ।
कौन उपाय करंव मय संगी, बाबू बी.ए. फेल रे ।



फूलचंद लाल श्रीवास्तव

जन्म - ०१-०१-१९२० रायगढ़ (म०प्र०) ।

उप० - आपका जन्म रायगढ़ में हुआ, इसलिए आप लाला रायगढ़िया के नाम से पुकारे जाते हैं । लाला रायगढ़िया छत्तीसगढ़ के पूर्वांचल के काव्यकारों में प्रमुख है । छत्तीसगढ़ के सामाजिक जीवन में सामयिक गतिविधियों को आपने अपने काव्य का विषय बनाया है। आप एक लोक गायक भी है, साथ ही कई नाटकों का लेखन तथा निर्देशन भी किए हैं ।

छत्तीसगढ़ी किसान पुकार

अहो भगवान हमला बनाये तैं हर काबर जी किसान ।।
खेत बनायेन पार बनायेन, रुख फ्तेरा काट गिरायेन ।।
झोरखी डोंगरी नरवा नदिया, पाटपटी के डोली बनायेन ।।
ओमा बोथी धान । अहो भगवान ।।

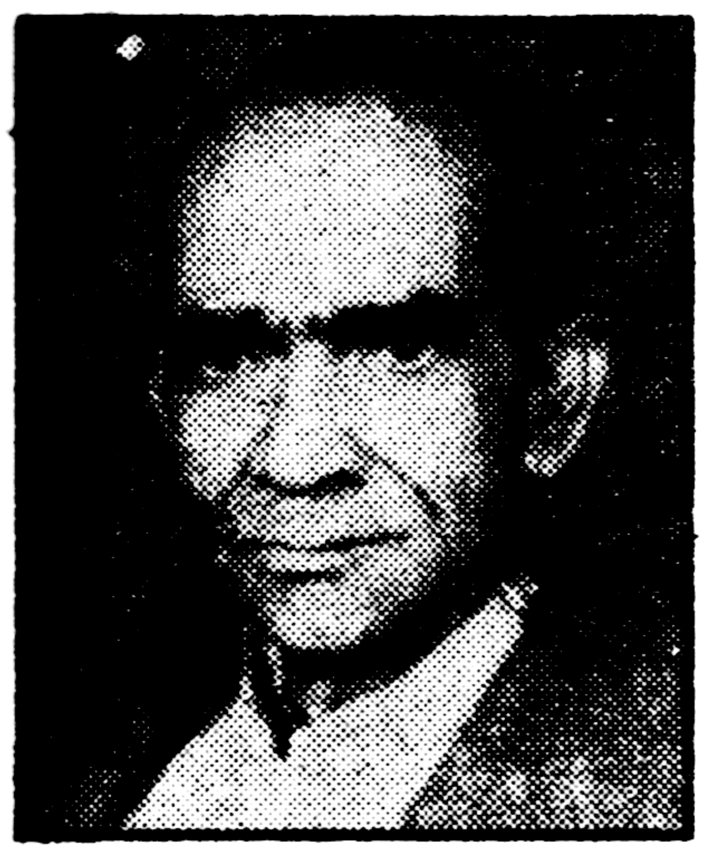
बाघ भालू हुर्रा कोलिहा चितवा तेंदुवा कोटरी खरहा ।
हाथी घूमा बेंदरा हरना भैंसा कोक साही बरहा ।
जम्मा जन्तु मार भगा के ।
हमन अन नादान ।। अहो भगवान ।।

सांप बिच्छू टेटका घिरिया खोजरा चांदी मेकरा गोहे ।
छैबुंदिया अदरौली भुंसडो दीया टोड्डी नीली मेटा ।
चिराई चिरगन मुसुबा छछुवा जम्मी ले अपन जो ब्राचके
दूठो लुथी धान ।। अहो भगवान

झोरी झोरी मेहा बरसे, घड़ घड़ घड़ वादर गरजे ।
बिजली चमके रात घिटके बिना छतारी छाता के ।
हम घाई बांधे जान ।। अहो भगवान

छितका कुरिया चुहत हवे, लोग लइका भीजत हवे ।
कोनहां कोनहां इहां लुकाथो ऊहां लुखाती जो बचाथी ।
तर्का गिल्ला उपर हेल्ला
रहे के नीये ठान ।। अहो भगवान ।।

खट खट खट खट दांज बाजे, मारे जाड़ देहे कांपे ।
खोर्रा खटिया गोरसी लट्ठी, पहिर लगोटी असमस गद्दा
मुठा वांधे गुरमुटी के
अपन बचाथा प्रान ।। अहो भगवान



लाला जगदलपुरी

जन्म - १७-१२-१९२० जगदलपुर

प्र.कृ. - हल्बी पंचतंत्र, रामकथा, प्रेमचंद चो बारा कहनी, बुआ चो चीठी मन बेरी चो नांव ने, बस्तर की मौखिक कथाएं, हल्बी लोक कथाएं, बस्तर की लोक कथाएं, वन कुमार और अन्य लोक कथाएं, मिमियाती जिंदगी दहाड़ते परिवेस, हम सफर, बस्तर - इतिहास एवं संस्कृति ।

उप. - छत्तीसगढ़ी, हिन्दी, हल्बी, भतरी में लेखनरत । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी आपके काव्यों का प्रसारण । दर्जनों सांस्कृतिक सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित ।

पता - कवि निवास, जगदलपुर ।

ग़ज़ल दूठिन

(१) माँ भुइयाँ के, नाँव गवाँगे

गाँव-गाँव में गाँव गवाँ गे,
खोजत खोजत पाँव गवाँ गे ।

अइसन लहंकिस घाम भितरहा,
छाँव छाँव में छाँव गवाँ गे ।

अइसन चाल चलिस सकुनी हर,
धरमराज के दाँव गवाँ गे ।

झोप-झोप में झोप बाढ़गे,
कुरिया-कुरिया ठाँव गवाँ गे ।

जब ले मूड़ चढ़े अगास हे,
माँ भुइयाँ के नाँव गवाँ गे ।

(२) खेत-खार में, भूख अकर गे

बनी करइया भूखन मरगे,
ब्लैक करिस तेखर घर भरगे ।

करम फाट गे, जऊंहर होगे,
खेत-खार में भूख अकर गे ।

मन के मयाँ नंदागे भइया,
पेट , पीठ के गांव अमरगे ।

नाँव बुतागे हे अंजोर के,
सबो डहर अँधियार सम्हरगे ।

पहुना बन के जउने आइस,
घर में जइसे नाँग खुसरगे ।



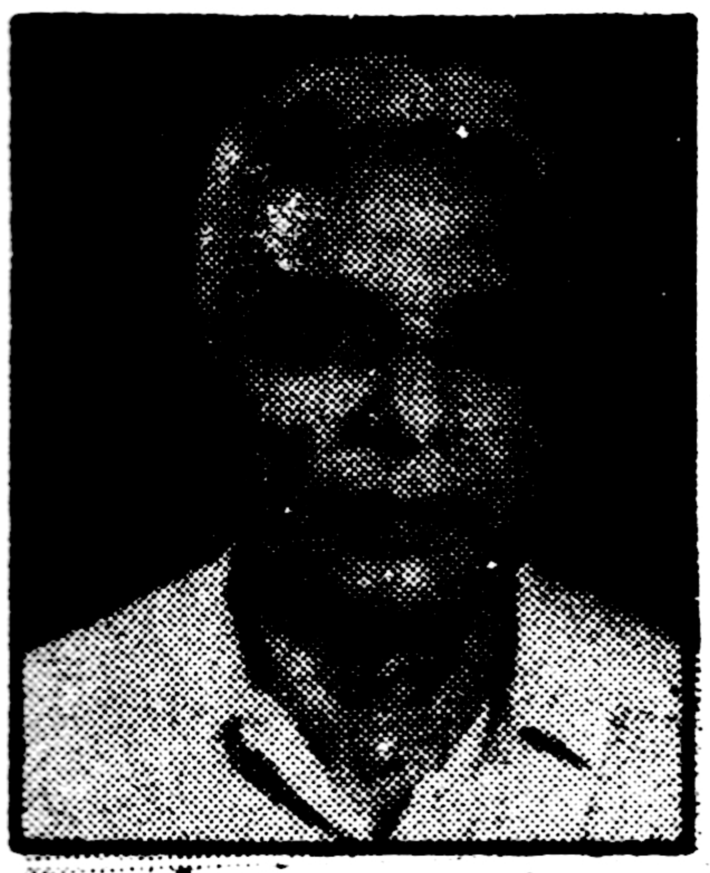
भूषणलाल शर्मा

जन्म - २०-०८-१९२४ ग्राम - अकोली (धरसींवा)
शिक्षा - हायर सेकेण्डरी
प्र.कृ. - नागेन्द्रात्मज पुकार हिन्दी काव्य खंड ।
उप. - भारतेन्दु साहित्य समिति बिलासपुर, छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति, रायपुर, हिन्दी साहित्य मंडल रायपुर के सक्रिय सदस्य । बंदोबस्त अधिकारी पद से सेवा निवृत्त । वर्तमान में गीता के छत्तीसगढ़ी अनुवाद करने में प्रयासरत ।
पता - संजय नगर, रायपुर (म.प्र.)

तिजहारिन के विरह

आही रोटी धरके मोर भैया छोटकू हा,
लाने होहै दीदी ला भैया बड़कू हा।
देखत रहथौ रद्दा ला संझा रतिहा,
धोवन में रोज मोर फेकाथे बासी टठीया ।
मोर देरानी जेठानी मैके सब चल दिन,
कोन जाने भैया मन काबर देरी कर दिन ।
जब ले आएवं तब ले कोनो नई आइन,
कैसे दाई ददा दीदी मन मोला बिसराइन ।
आज के खाए काली सब्बो तीजा रहहीं,
इहां के बिटिया देख देख के मोला ठेलही ।
संझा होगे घर में करेला साग हा आगे,
नई आइस मोर भैय्या जिवरा धक धक लागे
लुगरा पोलखा साया कुच्छुच ला नई भेजीस,
काय पय पाखा मय कर डारेव सास हर मोला खीझीस
गोठ बात मइके के करथस करेस बड़ाई,
देक्खे लुगरा नई आइस नई आइस भाई ।
बड़ धनवन्ता के बेटी हावव कहिथस,
दूसर ला तै देख देख के हासथ रहिथस ।
कहां सटकगे गोठबात हासी चरकट्टी,
बारा महीना के तिहार होगे गुड़मिट्टी

रोवत सुसकत आंसू पुछ्थंय- सास हा ठेलय,
ननद सुनावय उल्टा पुल्टा मन ला टोरय
हे तीजा महरानी कैसे मोला छोड़े,
हांसत रहेव मैके जाहौ मै मन ला जोड़े ।
मय अपराधी कैसे करिहौ तीजा माता,
बार बार तोर विनती हावै नवावत माथा
मोर फदिहत ला राख दे दाई करत हौं आसा,
नई तो होहो रतिहा भर में सत्या नासा ।
लेके आइस संग नौकर मंगलू फगुवा,
नदिया पूरा आए हे बहिनी गाव बोहागे
तिड़ी बिड़ी सब झन होंगे गांव ढहागे,
आज तीजा इहें मना ले गाव दशेरा
रोबे गाबे झन मोर बहिनी जाथन डेरा
गांव के टूरी ननद सास सब अचरज ठाढ़े,
मैके के सब चीज देख के अचरज बाढ़े ।
हे मोर तीजा माता तैहर लाज ला राखे,
रहिहौ दाई तो व्रत ला मैं करुहा खाके ।



ग०सी० रामपल्लीवार

जन्म - २१ जुलाई सन १९२५

उप - माधुरी, मेरी सहेली, सरिता, नंदन, पराग में कहानियां प्रकाशित । प्रदेश स्तर की कहानी, प्रतियोगिताओं में एक से अधिक बार कहानियों को प्रथम पुरस्कार प्राप्त । दैनिक समाचार पत्रों के लिए नियमित लेखन ।दैनिक स्वदेश रायपुर में साप्ताहिक छत्तीसगढ़ी व्यंग्य स्तम्भ 'रहचुली' का विगत पांच वर्षों से नियमित लेखन । विगत चालीस वर्षों में मध्यप्रदेश स्थित लगभग सभी आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण ।

पता - तात्यापारा, रायपुर

पहुना

पहुना आगे, पहुना आगे
अब्बड़ लरा जरा हो
देखत होहू उनखर मन के
टुकना मोटरी मोटरा हो ---

कनवा कक्का, खोरवी काकी
चिपरा आंखी के उनखर नाती
रामू के ददा, लीला के दाई
बहिनी के भांटो मेछर्रा हो ---

ननद मन ला हांसेला कहिदे
चटर चटर बोले ला कहिदे
तिलरी खिनवा करधन सूता
भइगे उत्ताधुर्रा हो ----

रांधे के बेरा म मूड पिराथे
आगी के आघू म देंह जुड़ाथे
देखत सुनत महूं बुढ़ागेंव
इनखर मन के नखरा हो ---

भइया खाही जिमी कांदा
भौजी खोजे खेकसी खेकसा
कोनो पूछहिं ठेठरी खुरमी
बाचैं नहीं बरा हो ---

पाना डारा राहेर काड़ी
चिलफा बोकला कांटा कांटी
बारे खातिर तेल नइये
नइये एक ठिन छेना हो ---

चांऊर नइये, दार सिरागे
तेल गंवागे नून रिसागे
हरदी मिर्चा कहां लुकागे
नइये चना मुर्रा हो --

हड़िया मत ला टमर डारेंव
बरी बिजौरी नइ मैं पाएंव
कर्जा करके गुर ला लानेंव
ओहू ला लेगे मुसवा हो ---

सुनले सुनले नोनी के ददा
झन दे मोला रुपिया पइसा
सोना चांदी नइ लागे गा
हड़िया मन गा रिता हो --



डॉ. माधव प्रसाद गुप्त
"मस्त"

जन्म - २७-१२-१९२५, जुना बस्ती बिलासपुर
शिक्षा - आयुर्वेद रत्न
प्रकृ. - पंखुरी पुरइन छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह
उप. - विभिन्न मंचों सहित आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी कविता पाठ का पठन। आप एक चिकित्सक के साथ साथ कुशल व्यवसायी भी है। साथ ही एक अच्छे बांसुरी वादक भी है। भारतेन्दु साहित्य समिति सहित कई सांस्कृतिक तथा साहित्यिक समितियों के सक्रिय सदस्य।
पता - गोल बाजार, बिलासपुर

किसान एकता

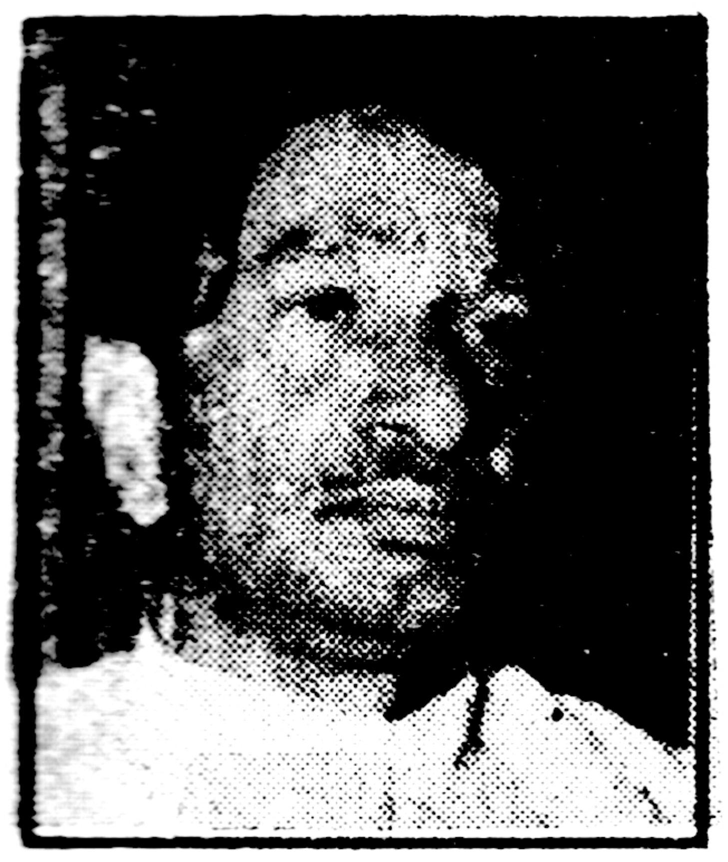
जुर मिलके रहवगा किसान
बैर ला मिटाइ डारीगा ।। जुर मिल ।।

आजा ही सोनहा बिहान, दुख सुख ला बांट डारीगा ।
गांव भर के ठेनील, जुर मिल टरकाबो
पंच ल बैठाय जम्मो, झगरा निपटाबो
हमर पंच हवय भगवान, जमोल बनाइ डारी गा ।

खेत म बीज बोवा खुर्रा म जोत के
नरवा नदिया ला, बांध देवा कोड़ के
भर जाही पानी झमाझम, गढ़वा का पाट डारी गा
डोंगरी ल पोठ करव, रुखवा लगाइ के

डहर का बनाइ डारा, जांगर टोराइ के
आही तो कैसे गा दुकाल, जांगर कापेर डारीगा ।
चर बैइठे जिनिस पाबो, सहकारी बनाइके
नाव का बिसार देबो, बेर्री महंगाई के

खेत म बोवा बोनी धान, सोन्ना उपजाइ डारी गा
पढ़े लिखे बर जाबो, गांव के मंदर सा
भारत जम्मो एक होही, बन जाही धरसा
घी दूध कोठी भर धान, भूखं ला मिटाइ डारी गा



श्यामलाल चतुर्वेदी

ज. - २०-०२-१९२६, कोटमी (जांजगीर) बिलासपुर

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी)

प्र.कृ. - "राम वनवास" एवं "पर्राभर लाई" दोनों छत्तीसगढ़ी काव्य संकलन।

उप. - आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से कविता पाठ का प्रसारण, महाकोशल सप्ताहिक समाचार पत्र सहित नवभारत, लोकमत, युगधर्म, नवभारत टाइम्स, जनसत्ता का समय समय प्रतिनिधि रहे । दैनिक लोकस्वर सहित लगभग दस पत्र-पत्रिकाओं का संपादन। ग्राम पंचायत कोटमी के सरपंच सहित ग्राम सेवा समिति का सदस्य, सेन्ट्रल को-आपरेटिव्ह बैंक बिलासपुर का डायरेक्टर, तथा वर्तमान मे म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सदस्य तथा बिलासपुर संगीत कला विकास समिति का अध्यक्ष । विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा सम्मान ।

पता - तिलक नगर, बिलासपुर ।

आइस बादर करिया

तपिस बहुत दू महिना तउन सुरुज मुंह तोपिस फरिया ।
जउन रंग ला देख समे के, पवन जुड़ाथे तिपथे ।
जाड़ के दिन में सूर्रा हो आंसू निकार मुंह लिपथे ।
गरम के महीना सांझ होय, आगी उगलय मनमाना ।
तउने फुरहुर सुघ्घर चलिस, जइसे सोझवा अनजाना ।
राम भेंट के सउरिन बुढ़िया कस मुस्काइस तरिया ....

का किसान के सुख कइहा, बेट वा बिहाव होइ जइसे ।
दौड़ धूप सरजाम सकेलय, काल लगिन होय अइसे ।
नागर बैला बिजहा जोंता, नहना सुघर तुतारी ।
कांवर दु कना जोर करय धरती बिहाव के त्यारी ।
बरकस बिजहा घाट पहिनय, डोला जेकर कांवर ।
गीत ददरिया भोंजली के गावैं, मिल जोड़ी जांवर ।
झेंगरा धरिस सितार बताइस, मिरदंग बेंगवा बढ़िया ।
बजै निसान गरज बिजली, छुरछुरी चलाय असढ़िया ।
राग पाग सब माढ़ गइन हे, माढ़िस जम्मों घरिया ...

पहरो उप्पर जाके अरसे, बादर घिसलय खेलय ।
जइसे कल्लू पारबती संग, कर ढेमचाल ढपेलय ।
मुचमुचही के दांत सही, बिजली चमकय अनचेतहा ।
जगम ले आंखी बरै मुंदावै करय झड़ी सरसेतहा ।
तब गरीब के कलकुत मातय, छान्ही तीर तर रोवय ।
का आंसू झन खंगै समझ, अघुवा के अबड़ रितोवय ।
सुख संगीत सुनावै तरि नरि ना मोरिना अरि आ ।



समरथ गंवइहा

जन्म - ०५-०७-१९२६ ग्राम बांधापाली (रायगढ़),
शिक्षा - मिडिल पास
प्रकृ. - मारबो फेर रोवन नइ दन (छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)
उप. - अब तक करीबन २०० रचनाएं लिखी है । कवि सम्मेलनों, आकाशवाणी रायगढ़, समाचार पत्र आदि में अनेक रचनाएं प्रसारित व प्रकाशित ।
पता - बांधापाली, तमनार तहसील - घरघोड़ा, रायगढ़

मारबो फेर रोवन नइ दन

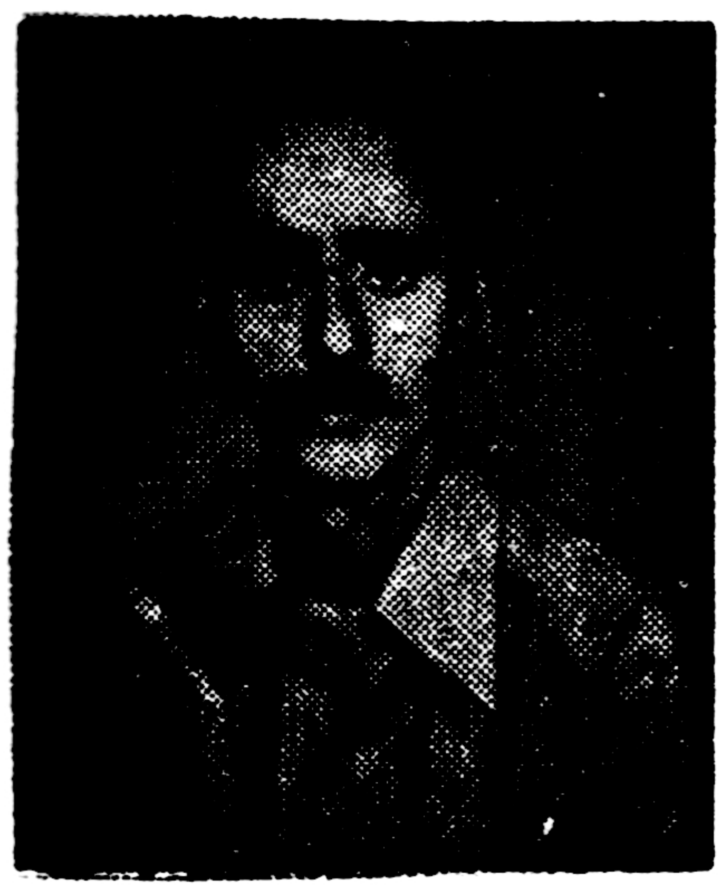
मारबो फेर रोवन नइ दन
तुमन सुख पाबो कहथ कमजोरहा
बुद्धि एको रच नइये परे हव भोरहा
तिजोरी के कुंजी तूं हमला देहे हव
तुंहर सुख ल होवन नइ दन
मारबो फेर ---------

बिन पुछे तुंहला सुनावत हन हाल
रेडियो इसटेसन ला करव थोरक खियाल
का खरचा करे कतेक खरचा करे
हिसाब म हम गलती होवन नइ दन
मारबो फेर ----

रहिस खरचा के इमानदारी
तो रसीद मन साखी हवय पारी के पारी
येक बात हय बड़े अफसर बड़े सेठ
इ मन के गवाही होवन नइ दन
मारबो फेर

कुंची जाय के जब बेला आही
दुख ल सुने के तब सुरता आही
छाती पीट के कबो मय दुख दूर करिहंव
तुंहला अबिसवास होवन नइ दन
मारबो फेर

किसे नइ फसीहब जाल फेंके जाही
चारो कोती ले जब छेंके जाही
अरे खाना के संग मा पीना घलों देबो
कनिहा खोचा कम होवन नइ दन
मारबो फेर रोवन नइ दन



डा. हृदय सिंह चौहान

जन्म - ०४-१०-१९२६ चुचइहा पारा (बिलासपुर)
उप. - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं मे समय समय पर कविताएं प्रकाशित ।
पता - सिंह एडव्हरटाईजर, जूना (बिलासपुर)

सुरता

तरसा तरसा के, सुरता सुरता के
तोर सुरता हर वैरी, सिरतो सिरा डारीस ।।

जतके भुलाथंव तोला, ओतके अउ आथे सुरता
जिनगी मोर दुभर करे, कर डारे सुरतेच के पुरता
तलफा तलफा के कलपा कलपा के
तोर सुस्ता हर बैरी, निचट घुरा डारीस ।१।

कचलोइहा कर डारे लंयहा, पीरीत सिपचा के
अइसे जलाये रे मोला, न कोइला न राख के
कुहरा कुहरा के गुंगवा गुंगवा के
तोर सुरता हर बैरी, खो खो के जरा डारीस ।२।

अंगरी के धरत धरत, नारि मं पहुंच गये,
का मोहनी खवा के रे मोला, लुटे अउ कलेचुप घूंच गये
लहटा लहटा के लहुटा पहुटा के
तोर सुरता हर बैरी, निचट बया डारीस ।३।

तैं निरमोही होये बैरी, सुरता तोर होइस हितवा
खुरच खुरच के तलफे खातीर, मया के बांधे गेरुवा
घिसला घिसला के, अलथा कलथा के
तोर सुरता हर बैरी, सरी अंग कोरपा डारीस ।४।

दाई ददा छोड़ेंव मंयहा, तोर लहर मं जोड़ा
सुरता कर ले रे बैरी, झन मोला छोड़ अकेल्ला
लहरा लहरा के, दहरा मं ला के
तोर सुरता हर बैरी, भंवर मं भंवा डारीस ।५।



टिकेन्द्र टिर्करिहा

जन्म - १-२-१९२७ ग्राम - सिलघट (दुर्ग)
शिक्षा - मैट्रिक
उप. - अंचल सहित देश के अधिकांश पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। लेख तथा कविताओं के साथ साथ छत्तीसगढ़ी नाटक लेखन में महारथ । गंवईहा, साहूकार ले छुट कारा, सर्वनाश सहित, दर्जनों नाटक का लेखन तथा आकाशवाणी से प्रसारण । १९६४ से दैनिक समाचार पत्र अग्रदूत में सह संपादक के रुप में कार्यरत।
पता - हांडीपारा, रायपुर (म.प्र.)

छत्तीसगढ़ के बासी

अइसे हाबय छत्तीसगढ़ के गुद गुद बासी
जइसे नवा बहुरिया के मुच मुच हांसी
मया पोहाये येकर पोर पोर म
अउ अंतस भरे जइसे जोरन के झांपी
[illegible]ासा जइसे दग-दग उज्जर चोला
मया-पिरित के बने ये दासी
छल-फरेब थोकरो जानय नहीं
हमर छत्तीसगढ़ के ये वासी
कोंवर गजवेच जइसे धिवहा सोंहारी
भोभला तक के बने ये संगवारी
रोटी सही ठठरंग बोली जानय नहीं
ररुहा रंका तक के ये महतारी
सब कलेवा बनगें सोन्ना
येला बना दीन रासी
कभू पारटी म चलिस नहीं
हमर छत्तीसगढ़ के ये वासी
येकर बर गहेरिच बन गे गंगा
पानी म बूड़े बपुरा रहिगे ग नंगा
येकर पाछू कतको तरगे भइया
ऐरे गैरे परदेसी अउ लफंगा
उथलही के मरम जानिस नहीं
गहेरीच के रहिगे ये वासी
पानी के मया में बूड़े रहिगे
हमर छत्तीसगढ़ के ये वासी



हरिठाकुर

जन्म - १६-०८-१९२७, रायपुर

शिक्षा - बी ए एल एल बी

प्रकृ - नये स्वर १९५६, त्यागमूर्ति ठकुर प्यारेलाल सिंह जीवनी १९६३, लोहे का नगर १९६१, छत्तीसगढ़ के रत्न १९६८, छत्तीसगढ़ी गीत अऊ कविता १९६८, गीतों के शिलालेख १९६९, नये विश्वास के बादल १९७०, जय छत्तीसगढ़ १९७७, सुरता के चंदन, १९७९, पौरूष १९८०, शहीद वीर नारायण सिंह १९९०, उत्तर कोराल बनाम दक्षिण कोशल १९९०, मुक्ति गीत १९९१, अंधेरे के खिलाप १९९१, छत्तीसगढ़ के इतिहास पुरुष १९९४।

उप - स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, आपके लिखे गये गीत फिल्म घर द्वार के लिए जिसे प्रख्यात गायक मोहम्मद रफी एवं सुमन कल्याणपुर ने गाया जो काफी लोकप्रिय हुआ । दर्जनों सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य आंदोलन से सबद्ध ।

पता - आशीष प्रेस कंकाली पारा, रायपुर।

सबे खेत ला बना दिन खदान

सबे खेत ला बना दिन खदान
किसान अब का करही
कहां बोही काहां लूही धान
किसान अब का करही

काली तक मालिक वो रहिस मसहूर
बनके वो बइठे हे देखो मजदूर ।
लागा बोड़ी मे बुड़गे किसान ---

उछरत हे चिमनी ह धुंगिया अपार
चुचवावत हे पूंजीवाला के लार
एती टी बी म निकरत हे प्रान ---

वोकर तिजोरी म खसखस ले नोट
लाघन मा पेट हमर करे पोट पोट
जिनगी ह लागत हे मसान ----

चल दिन सब नेता मन दिल्ली भोपाल
पूंजी वाला मन के बनगे दलाल
काबर गा रिसाथ भगवान ----

पढ़ लिख के लईका मन बइठे बेकार
भगो भगो भगो कहिके देथे निकार
ए कइसन बिकास हे महान



नित्यानंद पाण्डेय

जन्म - विक्रम संवत १९८१, बलौदा (अकलतरा)
शिक्षा - पूर्व माध्यमिक, संस्कृत व्याकरण मध्यमा पूर्ण ।
प्र.कृ. - मेघदूत का अनुवाद, प्रहलाद चरित्र, ध्रुव चरित्र ।
पता - बलौदा (अकलतरा) जिला-बिलासपुर ।

बसन्त पंचमी

आ गये बसंत पंचमी, तोर मान बड़ाई कोन करै
द्वापरजुग के कुरुक्षेत्र होईस एक महाभारत
कौरव मन के नाश कर देईस अर्जुन वान मा मारत ।
बड़का बड़का का बीर ढलंग गे बीच बचाव ल कौन करें ।१।

तहूं सुने होवे भारत म रेल मा कतका मरिन मनखे
ओकर दुख ल नई भुलायेन भुईया धसकगे मरगें मनखे ।
बरफ गिरे ले अकड़िन कतका, तेकर गिनती कौन करै ।२।

अर्जुन नई हे अव द्वापर के शब्द ला सुन के मारै बान
कलजुग के अर्जुन लंग नई हे ओ गांडीव तीर कमान ।
बान चलावत बया भुलागे, दांवाला कोन शांत करै ।३।

चारो कती ले देश घेराये, जगह जगह मां कांटा हे
राजनीति के हार जीत मा काकर कतका बांटा हे ।
तहीं बता अब बसंत पंचमी तोर मान बड़ाई कौन करै ।४।

शिशिर लगे, सिसियात हे कोईली ठंडा मा कठुवाये
सेम्हर अभी न फूले संगी मौहा नई कुचियाये ।
मलयागिर के पवन महकही तब मान बड़ाई नित्य करै
आ गये बसंत पंचमी तोर मान बड़ाई कौन करै ।५।



केयर भूषण

जन्म - २८-०२-१९२८ ग्राम जांता (जिला दुर्ग) म.प्र.
प्रकृ. - लहर (काव्य संग्रह) कुल के मरजाद (उपन्यास)
उप - रायपुर संसदीय क्षेत्र से दो बार सांसद चुने गये । भारतीय सर्वोदय मंच के पदाधिकारी । डूमराहीरद्दा (कविता संग्रह) एवं लोकलाज (उपन्यास) क्रमशः छपने को तैयार । स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान। छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति के संरक्षक ।
पता - सुंदर नगर, रायपुर

जागौ भारतीय महान

जागौ भारतीय महान, अब तो होगय बिहान

झन रहौ अनजान, मत सहौ हिनमान
जागै सारा जहान, बढ़ करौ सनमान
ले शांति के निशान, उठ बढ़ौ रे जवान
उड़थै आकाश के बीच, रवना बेइमान
जागौ भारतीय महान ।

रहै समुंदर के पार, करे सोरा सिंगार
धरे एटमी हथियार, करै दुनियां बिहार
जेखर मनुष के अहार, हवै सोनो के बेपार
तेन पर के माई मां, करथै अभिमान
जागौ भारतीय महान ।

कुकरा हमला जगाय, सुंदरा रस्ता बनाय
पंछी गीत सुनाय, कोयली कंठ लुभाय
सुकुवा रहै जगमगाय, ले संदेशा गेहे आय
आगे अंधियारी मेटे, सुरुज भगवान
जागौ भारतीय महान



हेमनाथ यदु

जन्म - ०१-०४-१९२८ महामाई पारा रायपुर

प्रकृ - सोन चिरैइया, छत्तीसगढ़ के गऊ गोहार, छत्तीसगढ़ी रामायण (सुन्दर कांड, किष्किंधा कांड, अरण्य कांड) नवा सूरुज के अगवानी, मन के कलपना ।

उप - आपने अधिकांश रचनाएं छत्तीसगढ़ी में ही लिखे हैं । आप पी डब्ल्यू डी विभाग में सेवारत रहे । छत्तीसगढ़ी को भाषा के दर्जा दिलाने के लिए भी आप सदैव अग्रणी रहे ।

देहावसान - ०५-०४-१९७९

मोर संगी

ये मोर संगी सुमत अटरिया, चढ़बोन कइसे मन ह बिरविट बादर हे ।
जतन के मारे बनत बिगड़थे, आंखी आंजे काजर हे ।

भाई भाई म मचे लड़ाई, पांव परत दूसर के हन
फूल के संग मां कांटा उपजे, अइसन तनगे हावय मन
धिरजा चिटको मन म नइये, ओतहा भइगे जांगर हे - ये मोर --

बात बात म बात बढ़ाके, दूरमत ल मोलियाये हन ।
परबर चारी बना बनाके, अपने अपन हंसाये हन
भाई के अब भाव नइ रहिगे बनगे घुनहा खांसर हे । ये मोर ---

लड़त कछेरी नर नियांव म, घर ह घलोक मठावत हे
नाव नठागे गांव भठागे, सेवत करम ठठावत हे
घर ला फोरत फोर करइया हासत एक मन आगर हे । ये मोर ---

दाई ददा के मयां ह जागे, तिरिया मया सजागे हे ।
कोन ल कहिबे कइसन कहिबे, मन हा घलोक लजागे हे
कल किथवन में अक्कल सिरागे, सुक्खा मयां के सागर हे मोर -----



डॉ. अरुण कुमार सेन

जन्म - ०६-०५-१९२८ राजिम (रायपुर)

शिक्षा - एम.ए., पी.एच.डी. संगीत निपुण, संगीत रत्न, साहित्य रत्न, धर्म विशारद ।

प्र.कृ. - भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन, उत्तर भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, गीत-रामायण, गीत महावीर, गीत-नानक, गीत- गांधी, गीत-रामकृष्ण, गीत-विवेकानंद ।

उप. - म.प्र. फिल्म विकास के पूर्व अध्यक्ष, इं.क.सं.वि.वि. खैरागढ़ पूर्व उप कुलपति, संगीत नाट क अकादमी के पूर्व प्रतिनिधि, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के ए ग्रेड गायक, दर्जनों सांस्कृतिक संस्थाओं के सदस्य । अंचल सहित देश विदेश में भी गायन प्रस्तुत ।

पता - रंग मंदिर (गांधी चौक) रायपुर (म.प्र.)

मोर नानकुन गांव

महानदी के पार, राजीवलोचन के घाट ।
मोर नानकुन गांव येहर, दाई ददा मोर इंहा के किसान

भैया मोर करथे गा, खेती के काम ला,
बहिनी मोर रांधे वो दार साग भात ला ।
ददा संग जाथे मोर दाई घलो काम मा,
भुइयां ला रचाथे दूनो पानी अऊ घाम मां ।।
लहर लहर लहराथे धान ......

पोरा दसेरा देवारी अऊ होली ।
नाचय अउ गावय संगी साथी के ट ोली ।
सुवा गीत गाथे दाई दीदी मन झुमके ।
राऊत घलो नाचे गा, झुमर झुमर झूमके ।
ले लेके करमा के तान ......

संझा के बेरा कऊंवा करे कांव ।
बिन बोले बताये दूरा चल देहे गांव ।।
कलप कलप के टूरी ह रोथे
मन के दरिद ला ओहर आंसू मं धोवै
विधना के बैरी विधान ......



ठा. लक्ष्मण सिंह पवार
"विकल"

जन्म - १९-०५-१९२९ ग्राम-जाली (पाली)
शिक्षा - वैद्य विशारद
उप. - छोटे बड़े सभी पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। जिला सह. केन्द्रीय बैंक बिलासपुर में पर्यवेक्षक के पद से सेवानिवृत्त।
पता - मु.पो. जाली, व्हाया-पाली, जिला-बिलासपुर

हमर कामधेनू हे धरती

जब लगिस कुंवार के महिना, चउमास बुढ़ाती आईस।
रे कातिक के सुरुवाती, कुछ जाड़ सुहाये लागिस ।।

सुखागे रद्दा के चिखला, सब रद्दा खुले लागिस
खेतन मां हे अनपूरना, सूते भाग सबो के जागिस ।।

कतको गांव होये रहिस खासी, किसान भय रहिन कोकला
बीजहा पेट काट के बोईन, अरे पेट दीखत रहिस खोखला

ऐसन कऊन हावय दुनियां मा, जऊन घर ले बाहिर फेकय
ऊपर ले जांगर टोरत, असरोये हरदम देखय।

लक्ष्मी ला लाये खातिर, घर के लक्ष्मी अगुवाईस।
रे कातिक के सुरुवाती, कुछ जाड़ सुहाय लागिस ।।

चला चली घेत मां संगी, करी लक्ष्मी के अगुवानी।
नरियर फूल, पान, अउ आगी, ले लुटिया मां निर्मल पानी

बच्छर भर के हमर खाजी, देबो बिक्री बिजहा बाढ़ी।
लेवो नून, तेल अउ कपड़ा, ऐसो कर्जा हम नई काढ़ी ।।

बोवो चना, मटर अउ अरसी, ऐसो होहय बने उन्हारी।
देबो खावो हम्मन भइया, बरा भजिया अउर सोहारी ।।

हमर काम धेनू हे धरती, बारो मास जनमते आइस।
रे कातिक के सुरुवाती, कुछ जाड़ सुहाय लागिस ।।



मन्नीलाल कटकवार

जन्म - ०१-०१-१९३० बलौदा (अकलतरा)
उप. - क्षेत्रीय दैनिक समाचार पत्रों सहित, प्रदेश तथा देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित (आकाशवाणी रायपुर एवं बिलासपुर से भी काव्य तथा कहानियों का प्रसारण । वर्तमान में दैनिक स्वदेश के संवाददाता ।
पता - मु.पो. बलौदा (अकलतरा) जिला-बिलासपुर

अन्न कुंवारी के बिदा

जारे बेटी जारे मोर अन्न कुंवारी
सुसक सुसक रोवै, खेत महतारी ।
कतका रकत देके तोला मैं बिआएंव
छाती के गोरस पिया के जिआएव
हरियर लुगरा म अंग ल सजाएव
आज छोड़ जात मोरे डेहरी दुआरी ।१।
छोटे बेटी तिल के बिदा जब होइस
गर ल पोट ार के राहेर भइय्या रोइस
परसा ददा हर तोर पांवे ल धोइस
दुख के नरवा मोर घर भर म बोहिस
आज मोर बेटी आगे तोर पारी ।२।
मड़वा छवाएं हे हरियर हरियर
लगन देखाइन अब फोरिन नरियर
कैसे मैं बेटी ल कोरा ले उतारौं
मया के ए बिरवा ल कैसे उखारौं
आगे तोर लेवाल इहां लेके डोला डाड़ी ।३।
झन रो मोर बेटी झन रो मोरे हीरा
बंगरी का जानै बिआए के पीरा
चार दिन के गए ले राहेर बाबू जाही
अकती बर तोला लेवाके ले आही
झन तै हदरवे झन होवे दुखियारी ।४।
जावे ससुरार कोठी ला भर देवे -
पर सुख खातिर तै दुख सहि लेबे
तिरिया जनम के हे अतके कहानी,
अंचरा म गोरस अउ आंखी म पानी
खावे दूध भात रहिवे महल अटारी-
सुसक सुसक रोवै खेत महतारी ।५।



उमेश शर्मा

जन्म - ०१-०१-१९३०, रायपुर (छत्तीसगढ़)
प्रकृ. - तरल पाषाण (हिन्दी काव्य संग्रह)
उप. - हिन्दी के साथ साथ छत्तीसगढ़ी में भी दर्जनों रचनाओं का लेखन । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन में लिखे गीतों का प्रसारण विभिन्न कवि सम्मेलनों एवं गोष्ठियों में हिस्सेदारी दर्जनों साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।
निधन - ३१-१२-१९८६ (रायपुर)

पइसा के गरमी

ठर्रा असन चढ़थे रे पइसा के गरमी,
वेचावत हे पइसा वर बड़े बड़े करमी ।
पइसा के सुख ले सुखावत हे मनखे म,
दया-मया धरम-करम सब्बों के नरमी ।

रेती असन उड़त हवें मन के हवा म ।
पोसे वर तन ला अपन, धन के दवा म ।
तन भरही, मन ला कइसन भरवे वता,
जानय नहीं, पूंछव कहिलाथे जोन धरमी ।

आवे नहीं गाय वर गवैया हें सब्व,
वारी आही जाहीं जवैया हें सब्व ।
का लेके आथे, का लेके जाही,
जनैया ला जान ले दुनिया के मरमी ।

सुतइया ला सूतन दे, तें हा तो जाग,
लूटत हवे दुनियां, वचा ले अपन भाग ।
गरूआ अस जीवत हे मनखे के जात,
नाचत हवे आंखी म निच्चट वेसरमी ।

ठर्रा असन चढ़थे रे पइसा के गरमी,
वेचावत हें पइसा वर वड़े वड़े करमी ।
पइसा के सुख ले सुखावत हे मनखे म,
दया-मया, धरम-करम सब्वो के नरमी



भगवती लाल सेन

जन्म - २३-०५-१९३० ग्राम देमार (धमतरी)

शिक्षा - शालेय कम, अनुभव ज्यादा ,

प्रकृ. - सुबह एवं देख रे आंखी, सुन रे कान (दोनो छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)

उप. - आप युवा अवस्था से सतत् लिखते रहे, आपने मजदूरों के शोषण के खिलाफ कलम चलाने में कभी नहीं हिचके । आप ०८-०८-१९८१ को नहीं रहे ।

आगे बसंत

कोन गुदगुदात हवय, जीव कुलबुलात हवे
पवन सुरसुरात हवय संगी, आगे बसंत बन मतंगी

फूल गजब महमहाय, जिनगी बड़ कुरतुंराय,
मनभंवरा गुनगुनाय, सुरता बइहा बनाय
मोर मया बने हय फिरंगी । आगे ।१।

डोगरी आगी बरे अस दहके, जंगल म घुंघरा गुंगवावय
परसा म टेसु मेछरावय, सोरा सिंगार फूल महमहावय
कोंवर पाना चपके नवरंगी । आगे ।२।

कोइली कुहकत हवे गोंसइया, झुमरे असरेंगे किजरैया
मौरे हय आमा अमरैया मने मन मं हसे पुरवइया
दिखे नवा नेवरिया फुरफुंदी । आगे ।३।

भाय गजब नदिया अउ तरिया, अटियावत रेंगे खरतरिया
चना गहूं सरसों हरिया, सेमी, भांटा चरिहा चरिहा
बाजे गांवं मं चिकारा सारंगी । आगे । ४।



विद्याभूषण मिश्र

जन्म - ३२-१२-१९३०, जांजगीर (बिलासपुर)

शिक्षा - एम.ए. बी.एड.

प्र.कृ. - सती सावित्री (खंडकाव्य) गीत माला एवं वीर चुड़ावन (खंड काव्य) ।

उप. - चाम्पा दर्शन, पुकार सहित आधा दर्जन पत्र-पत्रिकाओं का संपादन। शा.उ.मा. विद्यालय जांजगीर में प्राचार्य के पद पर कार्यरत रहते हुए सत्र १९९० को सेवा निवृत्त।

पता - मु.पो. जांजगीर (ब्राम्हणपारा) जिला - बिलासपुर

सूरज चढ़ही छान्ही मा ...

आही किरन सकेले मोती, सूरुज चढ़ही छान्ही मा ।
घाट - घठौंधा लिखै प्रभाती, देखा फरियर पानी मा ।
उषा सुन्दरी हर अकास मा

कुहकू ला बगराये हे ।
दुख के अंधियारी ला पी के
सुख- अंजोर ला पाये हे ।
का अन्तर हातै चंदा मा, अउ बीही के चानी मा ।
आही किरन सकेले मोती, सूरुज चढ़ही छान्ही मा ।

हवा गंध के हर दुआर मा
जा अँचरा ला फइलाही ।
भिनसरहा के ओंठ म सूते
गीत जाग के लहराही ।
सब मुरझाये फूल टूटहीं, का हावै जिनगानी मा ।
आही किरन सकेले मोती, सूरुज चढ़ही छान्ही मा ।

आँखी के खुलही खोंधरा त
सपना फुर ले उड़ जाही
भरे जवानी हे रथिया के
पानी अइसन बह जाही ।
दिन भर के हे खेल देख ला, सुख-दुख भरे कहानी मा ।
आही किरन सकेले मोती, सूरुज चढ़ही छान्ही मा ।

मिहनत के महिमा टेंड़ा हर
झूम झूम के दुहराही
नदिया ऊपर धरती मइया
सोनहा अँचरा फहराही ।
तिरिथ-बरत मा का हे भइया, सब कुछ हमर किसानी मा ।
आही किरन सकेले मोती, सूरुज चढ़ही छान्ही मा ।



रविशंकर शुक्ल

जन्म - ०१-०२-१९३१
उप० - हिन्दी, अवधी, भोजपुरी सहित छत्तीसगढ़ी में कविता लेखन ।
चंद्राजलि सांस्कृतिक संस्था के संचालक ।
पता - १ह१२२ सड़क -६, सेक्टर-५, भिलाई म०प्र०

अड़बड़िहा दुनियां के अड़बड़ हे बात गा

अड़बड़िहा दुनियां के अड़बड़ हे बात गा ।
मनखे ला लीलथे मनखे के जात गा ।
बड़े बड़े गंडा बांधे
हाथ धरे झंडा
इती उती घुमत हावयं
बोली बोलये अईसे जईसे पोनी धुने तांत गा
जेखर पुरखा राजा
हरिश्चंद ला बिसाथे
नाती पोता ओखरे
येदे हमीं ला डेरुवाथे
खोटहा चांदी के रुपिया ला धरे हाथ गा
टुटहा खेलौना कस
सबो दिखत हावयं
भुलुवा अंधरा खोरवा
ठुठुवा कोनो हावय
एके झऊहां से में सबो छटपटात गा
अइसन बाढ़त हावय
संगी रे मंहगाई
नई दिखय कोनो
भईया रे ददा दाई
हाथी ले मंहगी हे हाथी के दांत गा ।


दानेश्वर शर्मा

जन्म - १०-०५-१९३१ जिला - दुर्ग (म.प्र.)
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी)
प्र.कृ. - छत्तीसगढ़ के लोक गीत ।
उप. - भिलाई इस्पात संयंत्र के पूर्व प्रबंधक, आपके द्वारा लिखित गीतों का हिज मास्टर्स (कलकत्ता) म्यूजिक इंडिया (बम्बई) सरगम रिकार्ड्स (बनारस) वीनस (बम्बई) आदि रिकार्डिंग कंपनियों के साथ साथ आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी प्रसारण । अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के सशक्त कवि तथा कुशल संचालक ।
पता - एम. ५८२, पद्मनाभपुर, जिला - दुर्ग ।

फूल सहीं मुस्कावव

डोंगरी साहीं अँटियावव तुम, नँदिया जस लहरावव
ये जिनगी ला जीए खातिर फूल सहीं मुस्कावव

निरमल झरना झरथय झरझर परवत अउ बन मा
रिगबिग बोथय गोंदाबारी कातिक अघ्घन मा
दियना साहीं बरव झमाझम, कुवाँ सहीं गहिरावव
ये जिनगी ला जीए खातिर फूल सहीं मुस्कावव

तन के धरम हे मन भर करना बूता पर हित मा
हिरदे ला जलरंग करव तुम मया के अमरित मा
बिजली साहीं चमकव चमचम बादर जस घहरावव
ये जिनगी ला जीए खातिर फूल सहीं मुस्कावव

काँटा खूँटी तो रद्दा मा दस ठन आही गा
लेकिन रेंगत पाँव के छइहाँ धरनइ पाही गा
बघवा साहीं रुतबा राखव, हिरना जस मेछरावव
ये जिनगी ला जीए खातिर फूल सहीं मुस्कावव



शिवशंकर शुक्ला

जन्म - १-१-१९३२ रायपुर (छत्तीसगढ़)

प्रकृ - मोंगरा एवं दियना के अंजोर (छत्तीसगढ़ी उपन्यास), रघिया, छत्तीसगढ़ी कहानियां

उप - पहली रचना ८ वर्ष की उम्र में इलाहाबाद से विनोद बाल पत्रिका में प्रकाशित । सन् १९५५ में छत्तीसगढ़ी मासिक पत्रिका का प्रकाशन । मोंगरा उपन्यास का रशियन भाषा में अनुवाद डॉ० वाराविन्नको द्वारा किया गया है ।

पता - ज्योति प्रकाशन सदर बाजार, रायपुर (मप्र)

बदरा मिलिन अकाश

बदरा मिलिन अकाश
आंसू टूटिन मन म
सुरुज के ननपन संगे आथे
बूढ़त दिन के संगे जाथे
जुन्ना दिन के सुरता देवाथे
चुभथे कांटा सन मन मं
कतेक मांदत ए बादर
ए करिया-करिया बादर

जग सांही ए बादर
खुदगरजी कस मन मं
ऐ दूसर ला सुख देथे
काखर दुख चुप सहि लेथे
बन ठन के लुटवा देथे
बने दिन वो डगर मां

मोरो दिन बने बने रहिस
फेर जोड़ी के सुरता आइस
करिया बादर के घुमड़े ले
बिजली कड़किस मन मं ।
बादर कले चुप होगे हौ
सन सन कस मन मं
भर देते फेर राम नवा
धुप अंधियार ए मन मं

मोला न कखरो डर हे
सबले बलवान समय हे
ओ बदरा उहां अमरा दे
काबर परे संसो मं ।



चैतराम व्यास

जन्म - ०१-०४-१९३२ पंडुका (रायपुर)
शिक्षा - सातवीं पास
उप - १९५५ से लगातार छत्तीसगढ़ी में लेखन आकाशवाणी से भी कविता पाठ का प्रसारण । विभिन्न कवि सम्मेलनों में हिस्सेदारी
पता - मु पो पंडुका जिला-रायपुर

बिसकरमा तोला बलावत हे

तइहा के ल वइहा लेगे, जुन्ना जम्मों नन्दावत हे।
अउनावा निरमान करे बर, नाना जुग ह आवत हे ।
फेर नावा निरमान करे बर नावा जुग ह आवत हे ।

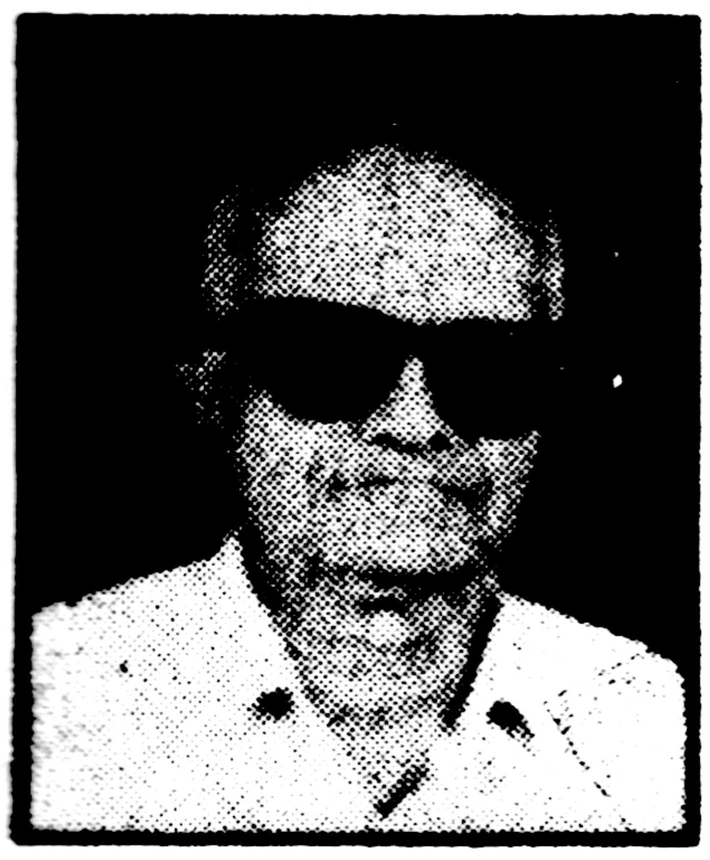
छानी म कऊंवा कांव करे
भुंइया म सुरुज पांव धरे
अगनां म सोन चिरइया ग
सिरजन गीत सुनावत हे ।

बारी बखरी लट लट फुलगे
अमरइया के किसमत खुलगे
डोली म मेहनत के गंगा ह
लहर लहर लहरावत हे

खुलगे कारखाना बड़े बड़े
विज्ञान मदद बर हवे खड़े
आडर पाके करिया बादर ह
अमरित रस बरसावत हे

जांगर देवता खोलव आंखी
उजियारी खुद देही साखी
सुख सपना संसार धरे
बिसरकरमा तोला बलावत हे

अउ नवा निरमान करे बर
नवा जुग ह आवत हे ।



माखनलाल तम्बोली

जन्म - १४-०४-१९३३
शिक्षा - एम.ए. बी.एड.
उप. - सन् १९६३ से अनेक पत्र पत्रिकाओं में हिन्दी तथा छत्तीसगढ़ी में रचनाओं का प्रकाशन । आकाशवाणी रायपुर से भी कई हिन्दी तथा छत्तीसगढ़ी रचनाओं का प्रसारण । शा. हाई स्कूल बिरकोनी से प्रधानाध्यपक के पद से सेवानिवृत्त
पता - स्टेशन मार्ग, महासमुन्द, जिला - रायपुर

छत्तीसगढ़ ल राज बनाओ

नवा लहू के मांग इही हे,
छत्तीसगढ़ ल राज बनाओ ।

बाहिर ले आये हरहा मन,
कतेक चरिन छत्तीसगढ़ ल ।
बाहिर ले आये रस्हा मन,
चुहक डरिन छत्तीसगढ़ ल ।

शोमन के फादा ल टोर के,
छत्तीसगढ़ ल चलो बचाओ ।

कतेक सहन गजबेच होगे,
अनियाय अतियाचार इंहा ।
लगे हवस सब शहर गांव म,
शोषन के अबड़ बजार इंहा ।
भूख प्यास के सब बस्ती म,
नवा क्रान्ति के सुरूज उवाओ ।
हमरे बर हमरे भुइयां म,
भूखमरी अऊ बेकारी हे ।
बईमान मन के अब इहां,
भ्रष्टाचार एक्केदारी हे ।

ये भूइयां के सब सपूत मन,
अब तो जागो अऊ जगाओ ।



लखनलाल गुप्त

जन्म - ०१-०७-१९३३, बिलासपुर
शिक्षा - एम.काम, साहित्य रत्न, एल.एल.बी.
प्र.कृ. - सैनिक गान, पथ प्रभा, सत्यम जयते, संझौती के बेरा (काव्य संग्रह) चंदा अमरिन बरसाइस (उपन्यास) "सरग ले डोला आइस" (एकांकी और कहानी संग्रह) सोनपान (निबंध) गोठ बात (छत्तीसगढ़ी)
उप. - अनेकों हिन्दी तथा छत्तीसगढ़ी संस्थाओं के पदाधिकारी तथा सदस्य । लगभग आधा दर्जन संस्थाओं द्वारा सम्मानित । प्रकाशित कृतियों के अतिरिक्त अनेको देश प्रदेश के पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित ।
पता - अश्वनी नगर, महादेव घाट रोड, रायपुर

किसान

भारत के जम्मो किसनहा भाई, खेत मं अड़बड़ अन्न उपजावा ।
भारत के फौज सिपाही खातिर, माटी म सोना उपजावा ।।

आजादी के रद्दा बर सब, खेत पार ला खूबिच बढ़ावा ।
खूब कमाके अन्न देश मां, अन्ने अन्न के भेंट चढ़ावा ।।

अब हाथ मां हाथ धरे के बेरा, चिट को नइहें सुना किसान ।
तुंहरेच मिहनत के बल मां, भारत गरजत हे गुना किसान ।।

एक्कक दाना जोर के रखही, तऊने बनही गुनी किसान ।
बिपत देश के हरवइया, सिरतो कहवाहा तुही किसान ।।

सोना-चांदी रुपिया पइसा, के चिंता झन करा किसान ।
धान गंहू के उपज बढ़ाके, कोठी ला तूं भरा किसान ।।

फौज सिपाही अन्न ल खांही, हो जाही जम्मा बलवान ।
तब दुश्मन ला रऊंद रउंद के, करके रही निचट पिसान ।।



डॉ. श्रीमति अनीता सेन

जन्म - ०१-०९-१९३३ पिथौरा (रायपुर)
शिक्षा - एम.ए. पी.एच.डी. (संगीत)
प्रकृ. - रवीन्द्र संगीत, भारतीय संगीत परंपरा ।
उप. - आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की ए ग्रेड गायिका । आपको श्रेष्ठ कलाकार, श्रेष्ठ कला आचार्य, श्रेष्ठ ठुमरी गायिका की मानद उपाधियां भी मिली है । रसेश्वर, मधुवन, महाकाल, कला साधना सम्मान सहित दर्जनों साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित। अंचल सहित देश विदेश में भी गायन प्रस्तुत ।

मया के बंधना

खिट खिट झन कर संगवारी, मोला घबरासी लागे ।

चूरी पहिरे केहे तोला जा हटरी म जा
पहुंची पहिरे के हे तोला जा हटरी मं जा

मोर रुपीया मोर मिहनत पसीना
रोज कमाहू मोर जाही महीना

चाऊंर के गोटी अस झन कर, मोला कऊंआसी लागे ।

वनी भूती कर पईसा कमावे ।
लईका दूरी खवावे सुतावे ।

तोर मया तोर मिहनत पसीना
रोज कमावे त जाही महीना

गोभी के किरा कस झन कर मोला रोवासी लागे ।

जिंदगानी मया चार दिन के
तोर मोर मया बंधना चार दिन के

तुम्हरों हमरों मिहनत पसीना
रोज कमावो त जाही महीना ।

करु खीरा कस झन कर मोला उबासी लागे ।



रघुनंदन प्रसाद पांडेय

जन्म - १३-०२-१९३६ ग्राम मल्हार (मस्तूरी)
शिक्षा - हायर सेकण्ड्री
प्र.कृ. - मल्हार दर्शन
उप. - शैक्षणिक कार्य करते हुए सन् १९८३ में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित । आकाशवाणी रायपुर एवं बिलासपुर से भी रचनाएं प्रसारित । विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के सफल आयोजन । स्थानीय समाचार पत्रों सहित विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित ।
पता - मु.पो. मल्हार, जिला-बिलासपुर

छत्तीसगढ़ के किसान

हमर छत्तीसगढ़ के किसान,
जेमन कमाथे सुन्दर धान

उघरा बदन खाली गोड़
ये हर उखरे ये पहिचान ।१।

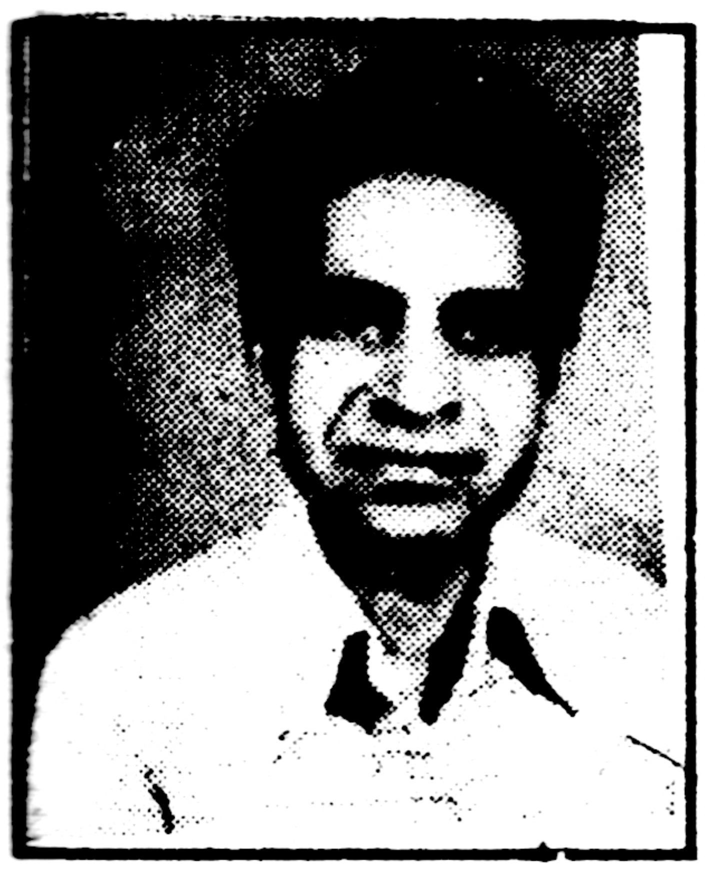
कान म चोंगी, खांध म पट कू
नाम धराये चट कू मट कू

साहूकार के करजा म बुड़े
विपत म पड़े हे जान ।२।

चिमनी बारके काम चलाथे,
माटी तेल के किल्लत पाये

टूटहा खटि या अउ फूटहा गोरसी
घर के नइये पहिचान ।३।

बड़े बड़े नेता मन आथे
बहुत बहुत वादा कर जाथे
रोटी कपड़ा अउ मकान
हमर कानो नइये भगवान ।४।



रघुबीर अग्रवाल
"पथिक"

जन्म - ०४-०८-१९३६ ग्राम - मोहभट्ठा (दुर्ग)
शिक्षा - एम.ए. बी.एड., साहित्य रत्न ।
प्र.कृ. - जले रक्त से दीप (हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी, काव्य संग्रह)
उप. - सन् १९५८ से लगातार छत्तीसगढ़ी एवं हिन्दी में काव्य लेखन जो विभिन्न समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित । वर्तमान में वरिष्ठ उप प्राचार्य के पद पर शा. कन्या उ.मा. शाला भिलाई सेक्ट र २ में कार्यरत।
पता - २१, शिक्षक नगर, दुर्ग

सुरुज आज मांगय अंजोर

ये अजब तमाशा, सुरूज आज मांगय अंजोर
गंगा हर मरय पियास अउर मांगै पानी ।
या मांगै कहूं उधार पांच रुपिया कुबेर
रोटी बर हाथ पसारै, कर्ण सरिख दानी ।१।

बस उही किसम जग जेला कथै अन्न दाता
जो मन चारा दे, पेट जगत के भरत हवै ।
तुम वो किसान के घर दुवार ल देखौ तो
वो बपुरा मन दाना दाना बर मरत हवै ।२।

जे तनह, अपन पसीना ले मोती उगाय
दू गज पहिरे बर कपड़ा नइये वो तन में ।
जेकर जिनगी अतका अमोल जतका अमरित
बिपदा के जहर समागे वोकर जीवन में ।३।

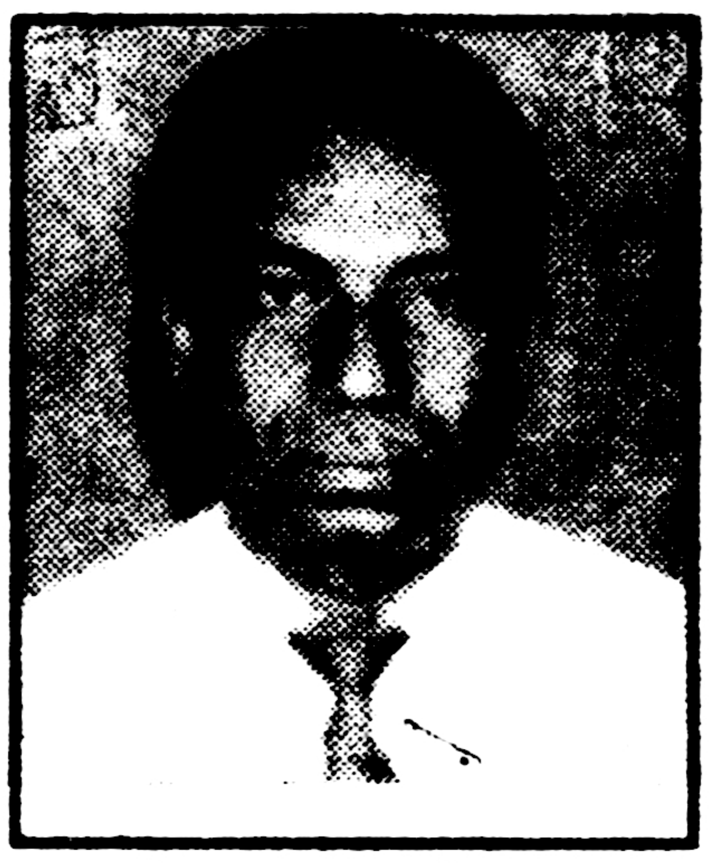
ओला दावेहे चिन्ता के सइघो पहाड़
कइसे वो लइका मन के सुक्खा पेट भरे ।
कइसे लेवै बइला भंइसा अउ बीज भात
कइसे लागा बोड़ी मन ल वो अदा करै ।४।

मंहगाई छूवै आसमान, घर सुक्खा हे ।
कोठी में नइये गहूं धान, घर सुक्खा हे ।
कइसे देवे लेव्ही, लगान, घर सुक्खा हे ।
वो कहां जाय, तज दे परान ? घर सुक्खा हे ।५।

इन दू पइली में धान पाय बर पांव परैं ।
उन रुपिया में सइघो सइघो संदूक भरैं ।
इन लहू पसीना रोज बहावैं जीये बर
उन पानी जइसे नोट बहावैं पीये बर ।६।

जइसे कइथे दुब्बर बर होथय दू अषाढ़ ।
बस उही किसम चउमास इकर बर बनिस काल ।
बपुरा किसान के लहू मास बर दउड़ जथे
बधवा जइसे गुर्रावत ये विक्कट दुकाल ।७।

येमन हरदम तइयार पसीना गारे बर
तइयार हमर धरती के रूप संवारे बर ।
हम ईकर दुख पीरा ल थोरिक दूर करन
इन मर मिट्टी दुनिया के दुख उबारे बर ।८।



बी.आर. चौहान

जन्म - २३-०६-१९३७, पथरी (सिलियारी) रायपुर,
शिक्षा - एम.ए.
उप - अंचल के पत्र पत्रिकाओं में छुटपुट प्रकाशन । छत्तीसगढ़ी लेखन में विशेष रुची।
पता - सहायक पोस्ट मास्टर जनरल रायपुर (म.प्र.)

हरकारा

तोर भाला घुंघरु घुनुर घुनुर
तोर साइकिल घंटी ठिनिन ठिनिन
थैली पहुंचा दे हरकारा रे
जल्दी पहुंचा दे हरकारा रे ।

रद्दा हे अलकरहा, कांटा खूंटी परही
तन में तोर गड़ही, अउ मन में चभ्भक जरही
फेर ऊंह झनि करिबे, मने मन में गुनिबे
अउ मने मन में रहिबे, ऐती ओती झनि देखिवे
आगू डाहर के गारी ला, पाछू डाहर फेंकिवे
ढोंड़गा, नरवा घलो परही, अउ पूरा नई उतरही
डोंगा बन जावे हरकारा रे, तंउर के आवे मोर प्यारा रे
तोर भाला ----------

नोनि बिमरहिन ला छोड़ के, लेखा कार्यालय जावे
बड़े बाबू के नोनी ला, धर अस्पताल पहुंचावे
ओला देख के बाबूमन, घलो लउहा लेही
एती के बुता छोड़के, अपन बुता ला देही
ऊपर ले तोर से, डांक बैला वंधवाही
अउ मौका आजा ही त, तूही ला फंसाही
तै झन गरियावे सर्वहारा रे, तै दुख विसरावे मोर प्यारा रे
तोर भाला -----------

ऐमा हावे निमंत्रण, मरनी हरनी आमंत्रण
भाई, राखी जोहत होही, बहिनी ऐती रोवत होही
मनीआर्डर का बिल्टी, चेक ड्राफ्ट का हुण्डी
सबके किस्मत भरे हावे, का बतावंव संगी
सुख दुख पहुंचा दे हरकारा रे, सुख दुख बंटवा दे मोर प्यारा रे
तोर भाला ------------



जन्म - ०२-०९-१९३७ भिलाई-३ जिला - दुर्ग
शिक्षा - इंटर
प्रकृ - चुरुवा भर पानी (काव्य संग्रह)
उप - सन १९५० से सतत लेखन, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से काव्य प्रसारण । परमानंद भजन मंडली से संबंद्ध । सिरसाकला प्राथमिक पाठशाला में प्रध्यानाध्यापक पद पर कार्यरत
पता - बाजार चौक, भिलाई -३

हेमनाथ वर्मा विकल

छत्तीसगढ़ के पानी

मय छत्तीसगढ़ के पानी औंव
मय मोरध्वज कस दानी औंव
मय महानदी अरपा पैयरी
मोर हिरदे समुंद कस हे गेहुरी
मय सिधवा वर तो वड़ सिधवा हंव
उमड़े म लांघन वघवा हव
मय हितवा वर खीरा कस चानी औवं
मय छत्तीसगढ़ के पानी औंव
मय मया दया सव ल बांटव
मय धरमधुरी ढेरा आंटव
मय कोचके म विखहर डोमी कस
मय मया मयारुक वर पोनी कस
मय अंगी श्रृंगी के वानी औव
मय छत्तीसगढ़ के पानी औंव
मार तन दीया कस वाती वरैय
मय वांटौव अंजोर धर थाथी धरैय
मोर मन गंगा जल कस निरमल
नई जानव ऊंच नीच दलवल
मय निपढ़ सरल वयानी औव
मय छत्तीसगढ़ के पानी औंव
भरे पीरा मोर सव रग रग में
दसे दुख काटा मोर पग पग में
लाघन भूखन जिनगी जीथौंव
मय जांगर टोर पसिया पीथौव
परहित वर बिकल जवानी औंव
मय छत्तीसगढ़ के पानी औंव



डा० विमल कुमार पाठक

जन्म - ६-१-१९३८ बिलासपुर

शिक्षा - बी काम, एम ए (हिन्दी एवं लोक प्रशासन) बी जे, पी एच डी

प्रकृ - गंवई के गीत, हिन्दुस्तान एक है, योजना की सिद्धी हो, एवं छत्तीसगढ़ीएं जाग गये है ।

उप - कवि एवं लेखक के रुप में सन् १९५६ से चर्चित । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से दर्जनों कविता पाठ का प्रसारण । अंचल के पत्र पत्रिकाओं में लगभग एक सौ से ज्यादा लेख कविताओं का प्रकाशन। लोकनाट्य, लोक संगीत लोक संस्कृति एवं साहित्य के विविध विषयों पर वक्ता । मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष के रुप में अनेक महत्वपूर्ण आयोजनों में शिरकत । लगभग २० पत्र पत्रिकाओं का संपादन ।

पता - २५ बी, सड़क एवेन्यु बी, सेक्टर-१ भिलाई

कमियां अउ कमैलिन

चंदा झांकय संग चनैनी, लरझत लरझत रात मा ।
धान के हरियर लुगरा पहिरय, धरती हर चउमास मां ।
कर सिंगार अब धरती रानी, मस्ती मं ओखरे जवानी ।
बादर देखय टुपुर टुपुर अउ चुचुवावय लरहा कस पानी ।
हरियर लुगरा फुर फुर करके, पवन हटावय सुर सुर करके ।
अंग अंग मां रंग चढ़य तब, डोलय पाना गुर गर करके ।
चूमा लेवय हवा, लजावय खेत खार हर सांस मां. ।
धरती रानी के सेवा बर बैला नांगर अउ लौड़ी धर
बिपत उठाके पानी सहिके खेत मा आइसि जब किसान हर ।
एती रूंधिस, ओती, रूंधिस, मेड़ ल खूंदिस पार ल रूंधिस ।
लिका मन कस जतन करसि ओ खेत के जम्मों बन ल नींदिस ।
राते दिन के नवा बहुरिया कस सेवा हर बात मां
भूल गंय अब सब दुनिया दारी खेत के जब ले चलिस तयारी ।
नवा बहुरिया निचट अकेला, दिन ल काटय हाय बिचारी ।
छानी चूहय टप टप टप, परछी मं सरि कुरिया मां
बोरे बासी रखे कुंडे रा मं, बटुवा मं हड़िया मां
नाचय मोर गोसईया सोचस, नवा बहुरिया खार मां ।
धान के हरियर लुगरा पिंवराईस अब दिन अउ रात मां ।
घुप्प रात भर गिर गिर पानी, कइसे सहिलय भरे जवानी
दुलहा डउका खेत गये, हाय कटय कइसे जिनगानी ।
धान बनिस अब सउत मोर, गोसईयां ओखर बर मरथें ।
रात दिन चिखला पानी मं चिक चिक रहि सेवा करथे ।
थकगे बपुरी देखे निकरिस-धान हंसत है खार मां ।
धान के हरियर लुगरा पिंवराईस अब दिन अउ रात मां ।
मोर डहर सावन भादों मं जेठ परिस, मैं जरत हवंव
नाचत हावय ओती ओहर घुट घुट के मैं मरत हवंव ।
रहि जा बंगरी धान बने हस, सउत तोला तो मैं देखिहंव ।
तैं रहिबे ये खार मां कइसे, तेला तो मैं हर देखिहवं ।
तभे अबड़ गुस्सा म कहिस तोर गर मुरकेटिहंव हाथ मा
धान के सोनहा सुतुवा लहुकय खेत मं दिन भर रात मां ।



रामशरण शर्मा

जन्म - ३-३-१९३८ ई. ग्राम कड़ार (बिलासपुर)
शिक्षा - स्नातक
उप. - समय समय पर विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में छत्तीसगढ़ी रचनाओं का प्रकाशन ।
पता - उच्च श्रेणी शिक्षक, शा.उ.मा. शाला सेंवार, जिला-बिलासपुर

अब आगे बसंत बहार

हो मोर लेढ़वा भैय्या, हो, मोर लेढ़वा दादू ।
तय, गा देवे फाग मल्हार ।
अब, आगे बसंत बहार ।।

कहरत कहरत आमा मौंरगे,
गमकत गमकत सौंप फूलगे ।
पत्ता पत्ता फूल फूल से,
होगे पेड़ नवा सजधज के ।।
सब, लगे दुलहिन कस आज -हो,मोर .. ।।
पीऊ पीऊ कोइलिया बोलैं,

चह चह गौरैया चहकारै ।
पेड़ पेड़ म डार डार मं,
तरिया तरिया कमल पान मं ।।
अव ढूढ़य अपन अपन भरतार - हे मोर ।।

ताना बाना काम देव के,
ठऊर ठऊर ह बने सुहाथे ।
बाग बगीचा ताल पोखरी,
मनखे मनके मन ललचाथे ।।

देख अब, चलथे तीनो बयार - हो, मोर ।।
संगी तोर मादर थपकादय,
बंशी के तान सही धरवादय ।
झांझ, मंजीरा अउ झमकादै,

संग नगाड़ा ल घुड़कादय
करवादय, वीना के झंकार - हो, मोर - ।।



सालिकराम अग्रवाल
"शलभ"

जन्म - ०६-०४-१९३८ कंकाली पारा, रायपुर ।

शिक्षा - एम.ए. (अर्थशास्त्र, हिन्दी साहित्य) एल.एल.बी., पी.एच.डी. (छत्तीसगढ़ में कबीरपंथ, उद्गम एवं विकास)

प्र.कृ. - श्री राधा पथ चंद्रिका, इंदिरा कीर्ति, कौमुदी, गुरुनानक चालीसा।

उप. - आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से निरंतर कविता पाठ का प्रसारण। विभिन्न समाचार पत्रों के लिए काव्य लेखन । हिन्दी साहित्य मंडल तथा छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति द्वारा सम्मानित ।

पता - राजभाषा अधिकारी, भा.जी.बीमा निगम, पंडरी, रायपुर

छत्तीसगढ़ के हम बनिहार

मालिक ठाकुर मनके अब तक, बहुत सहेन हम अत्याचार
आज गाज बन जाबो जम्मो छत्तीसगढ़ के हम बनिहार ।
बरसत पानी मां हम जावन, खेत चलावन नांगर
घर-घुसरा ये मन निसदिन के, हमन पेरन जांगर
हमर पांव उसना भोमरा मां, बन जाथे जस बबरा
तभो ले गुर्रावे बघवा कस, सांप हवैं चितकबरा
इनकर कोठी भरन धान से, दाना दाना बर हम लाचार (आज)
इनकर बढ़िया चिकन चांदन, घर ल हमीं ऊंचावन
झारन पोछन लीपन बाहरन, दर्पन जस चमकावन
इनकर घर पहार जैसे है, हमर हवै छितका कुरिया
ये मन सोवे सेज सुपेती, हमर हवैं जठना भुंइया ।
छान्ही चूहे ओरवाती कस इनकर पक्का ठउर दुआर (आज)
येकर मिल मा काम करन हम, कभू कभू जिव जावै
सहन आंच ठाढ़े ठाढ़े मुंडपांव पसीना चुचवावै
हमर देह बस्सावय इनला, इनकर तन जस मोंगरा
येमन पहिरै रींगी चींगी, हमर हवै चीथरा गोंदरा ।
इनकर मन के दांव पेंच के ईश्वर घलो न पावै पार (आज)
येमन बिस्कुट ब्रेड उड़ावै, हमर हवै जुरवखा रोटी
येमन गिधवा हमर देंह के, चीथ चीथ खाइन बोटी
येकर कुकुर चढ़ै मोटर मां, पीयै दूध किलो किलो
हमर कमैलिन गाभिन भूखन, चल चल के आवै मीलो
गउहां डोमी बनना पड़ही, तब होही हमार उद्धार "आज"



रामविशाल सोनकर

जन्म - १०-०६-१९३८ रायपुर (म.प्र.)
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी) बी.एड.
उप. - आंचलिक पत्रिकाओं में दर्जनों रचनाएं प्रकाशित । विभिन्न कवि गोष्ठियों तथा सम्मेलनों में हिस्सेदारी ।
पता - व्याख्याता मा.रा. सप्रे शाला, रायपुर

गोरसी के आगी

वड़ा नीक लागत हे, गोरसी के आगी

जाड़ ठुनठुनावत हे, लाहो खूब लेवत हे
हाथ जोड़ जुड़ावत हे, दांत हर कट कटावत हे
रुंवा घुरघुरावत हे, मन चैन नहीं पावत हे
गोरसी के आगी से हमर भाग जागी
वड़ा नीक लागत हे गोरसी के आगी

अइसे पोटारेंव एला जैसे मेहरिया ला
अइसे निटोरेंव जैसे नागर के हरिया ला
अइसे अगोरेंव जैसे अवय्या संगवारी ला
गोरसी के आगी मां हमर लगन लागी
वड़ा नीक लागत हे गोरसी के आगी

एक ठीन है गोरसी तपैया हवय चार
जड़काला दुश्मन ला आगे अजार
गोरसी के आगी तोर लिल्ला अपार
गोरसी के आगी अंग अंग में लागी
वड़ा नीक लागत हे गोरसी के आगी

उपर मां भूसा तेखर नीचे मां अंगरा
पंछा ल ओढ़के ऐसा तापत हे नंगरा
जुड़ाय चदरा ला कर देथे भोंगरा
गोरसी के आगी गरीवहा के संगी
वड़ा नीक लागत हे गोरसी के आगी

गोरसी के खरसी मां हवय सब मंतर
गोरसी के राख मां भराथे सब जंतर
गरीवहा अउ गौटि या करथे ये अंतर
गोरसी के आगी से सारी भूत भागी
वड़ा नीक लागत हे गोरसी के आगी



शिवकुमार पाण्डेय

जन्म - १४-०८-१९३८ अकोली (देवरी) धरसीवां
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी) साहित्य रत्न, आयुर्वेद रत्न
प्र.कृ. - श्री कृष्ण कीर्तन, लोकगीत भाग १, २ एवं ३
उप. - राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त, वर्तमान में शिक्षकीय कार्य
पता - संजय नगर, रायपुर

भक्ति करव

भाव करव भक्ति करव प्रेम करव रे
ये चोला ल संगी झन बदनाम करव रे ....
लख चौरासी जोनी ले संगी, मानुष तन हे आगे
कुकुर बिलई येला संगी, मोक्ष पावत लागे ।
जनम देहे तेखर तुमन, नाम ल जपव रे ...
बड़े बड़े तपसीमनतो गजब तप ल करथे
य चोला ल पायेबर भक्ति गजब करथे ।
जतेक तुंहर बने संगी,ओतके भजव रे ...
मत पियव तुम भांग शराब, पियव मत जी गांजा ।
धीरे धीरे धन सिराथे, हो जाथे गजब करजा ।
पुरखा के कमाई ल तुमन झन तो मेटव रे ....
जीव हिन्सा झन तो करव, करव प्रेम के बाता ।
मात पिता के बात ल मानव, मारन झन तुम लाता
ओखरे तुम सेवा ल करव, मेवा ल पाहव रे ...
जुवा झन खेलव रे संगी, खेलव झन तुम पासा
रंडी अउ बेसिया ल छोड़व, होही सरबस नासा ।
फोकट समे झन गवाव, भज ले राम रे ....
आठ घड़ी काम ल करव चार घड़ी आराम
एके घड़ी भजलव संगी मन म सीता राम
पेट के भीतर कसम खाके, माया में फंसेव रे
गनिका अउ अजामिल पापी, जपिन मन में राम
मीरा अउ कबीर सही मन, पहुंचिन बैकुंठ धाम ।
मन में धरव रामकृष्ण, शिव विष्णु रे
कहे शिवकुमार ओकर नाम ल जपव रे ...



डा. दशरथ लाल निषाद

जन्म - २०-११-१९३८ तेंदूभाठा (मगर लोड)

शिक्षा - एम.एस.सी. (आयु.) आयुर्वेद रत्न, साहित्यरत्न, विज्ञान रत्न, एन.डी.।

प्र.कृ. - निषाद संदेश, रामकेवट संवाद, राष्ट्रीय चेतना ।

उप. - छत्तीसगढ़ के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित।

पता - मु.पो. मगरलोड, जिला-रायपुर

धरती खातिर छूटय परान

ये धरती हमर दाई ददा,
अउ ये भुइंया भगवान
संगवारी गा मोर धरती खातिर हमर छूटय परान ।

धान कटोरा खान के धरती,
छत्तीसगढ़ महतारी,
जिहां अपन जिनगी चलाके,
मुख्ख करय चारी ।।
उनकर जइसे पापी नइये अउ नइये सइतान ।
संगवारी गा मोर धरती खातिर हमर छूट य परान ।

धरती खातिर तियाग करइया,
सोज्झे सुवर्ग मं जाहै ।
शोसन करइया हाथ रमजके
चूर चूर पछताहें
कउसिल्या जसनारी के मइके,
छत्तीसगढ़ आवय महान
छत्तीसगढ़ के धरती म रे
एक दिन सरग उतरही ।
ये धरती के शोसन करइया
तड़फ तड़फ के मरही ।

नरक मं जाहै अइसने मनखे, माफी नइदय भगवान
संगवारी गा मोर धरती खातिर छूट य हमर परान ।



परसराम वर्मा

जन्म - २०-७-१९३९ बिटकुली (सिमगा)
शिक्षा - एम ए समाजशास्त्र, मानस रत्न
उप - लगभग २० वर्षो से हिन्दी छत्तीसगढ़ी में कविता लेखन १९५४ से शैक्षणिक कार्य, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक अध्यात्मिक लोक कला में विशेष रुचि ।
पता - उच्च श्रेणी शिक्षक हथबंद, जिला-रायपुर

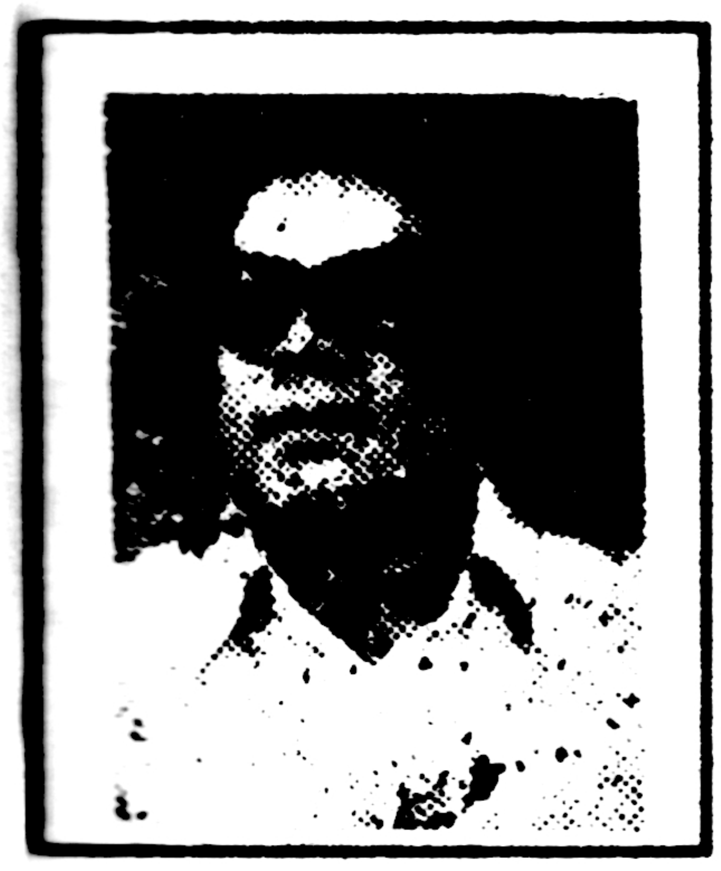
बीसे बीड़ा जोर (मूरहागीत)

संझा के छाय नइये रथिया के अंजोर
टूटहा हे गाड़ा संगी टूटहा हे डोर
जादा झन जोरवे संगी बीसे बीड़ा जोर

बुढ़वा ठुढ़वा भंइसा मोर तेला आये हे खुरहा
दू झन हे लइका मोर दूनो झन हे मूरहा
एक झन के ददा नइये एक झन के दाई
भाई के सगे बहिनी नइये बहिनी के सगे भाई
बाई के बिहाता पति नइये, विवाहिता पत्नि मोर

ननहे ननहे लइका मोर तनिक ओला गियान नइये
पढ़े बर जाथे सचमुच पढ़ई में ओकर धियान नइये
दुर्मत में अपन अपन ले पीस पीस खाये चटनी
ठीक से खूंटा डाड़ी नइये गाड़ी म ठीक से नइये पटनी
तेमा फंदाही दूठन बुढ़वा भंइसा मोर --

मोर एक ठन हाथ नइये बाई के एक ठन गोड़
मोर एक आंखी नइये बाई के एक ठन कान
संझा बिहीनिया दूनो जून ओला चाहिय पान
काम बूता नइ करे सकै ओकर मुंहे भर ला जान
तेकरो एक चटरहा टूरा सउत बेटा हवय मोर --



डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा

जन्म - ०४-११-१९३९, शिक्षा - एम.ए., पी.एच.डी. (हिन्दी एवं भाषा विज्ञान) प्रकृ. प्रयोगवाद, हिन्दी स्वच्छंदतावाद, पुनर्मूल्यांकन, आधुनिक पाश्चात्य काव्य और समीक्षा के उपादान, नयी कविता सिद्धांत और सृजन, हिन्दी नवस्वच्छंदतावाद, छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्‌विकास, सुबह की तलाश (उपन्यास), अपूर्वा, छत्तीसगढ़ी गीति गुच्छ (काव्य संग्रह है)

उप० सन् १९५३ से १९६७ तक विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लेख, कविता, नाटक, कहानियों का प्रकाशन । डा. दयाशंकर शुक्ल, डा. लक्ष्मीचंद्र देवांगन, डा. बिहारी लाल साहू एवं डा राजेंद्र कुमार दुबे आपके निर्देशन में पी एच डी की । आप दर्जनों साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के संस्थापक तथा अध्यक्ष भी रहे । आप ०८-०९-१९७९ को नहीं रहे ।

खेत ला बिसार झन

खेत ला बिसार झन, गांव ला उझार झन,
फांद झन गाड़ी ला जवइया,
भुंइया के मांग उजरइया।
जनम भर खेत खार आये ,
माटी अउ चिखली मा सनाये,
बादर लाल गीद ते सुनाये,
माटी के गोहार सुन, मया ला बिसार झन,
धान, गहूं, चना के जगइया ।
मानेव मैं तोर भाग फूटिस,
अउ बजर तोरे उपर टूटिस,
करजा के बाना हर छूटिस,
जांगर बिसार झन, सोच झन विचार झन,
रात दिन काज के करइया ।
ते नइते कौन गीद गाही,
कारी ला कोने दुलराही
भूरी हर कइसे पगुराही,
भुंया ला तियाग झन, नागर ला उतार झन,
कांवर ला कांध मा धरइया ।
करजा के पूरा मा बोहागे,
बाढ़ी मा कोठी हर सिरागे
पानी बिना धान हर झुखागे,
करजा ला तैं झन गुन, सहार के तै सुन,
करजा मा बइला ढिलवइया ।



गजानंद प्रसाद देवांगन

जन्म - १-११-१९४० हाथपुर
शिक्षा - एम.ए. हिन्दी
प्र.कृ. - चित्रोत्पलाभृत (भक्तिपद)
उप. - अंचल सहित राष्ट्रीय स्तर के पत्र-पत्रिकाओं में रचना प्रकाशित। आकाशवाणी रायपुर से १९७१ से आज तक कविताओं का प्रसारण । अब तक लगभग ३० गद्य एवं २०० पद्य रचनाओं का प्रकाशन तथा प्रसारण
पता - प्रधानाध्यापक पू.मा.शा. छुरा, जिला-रायपुर

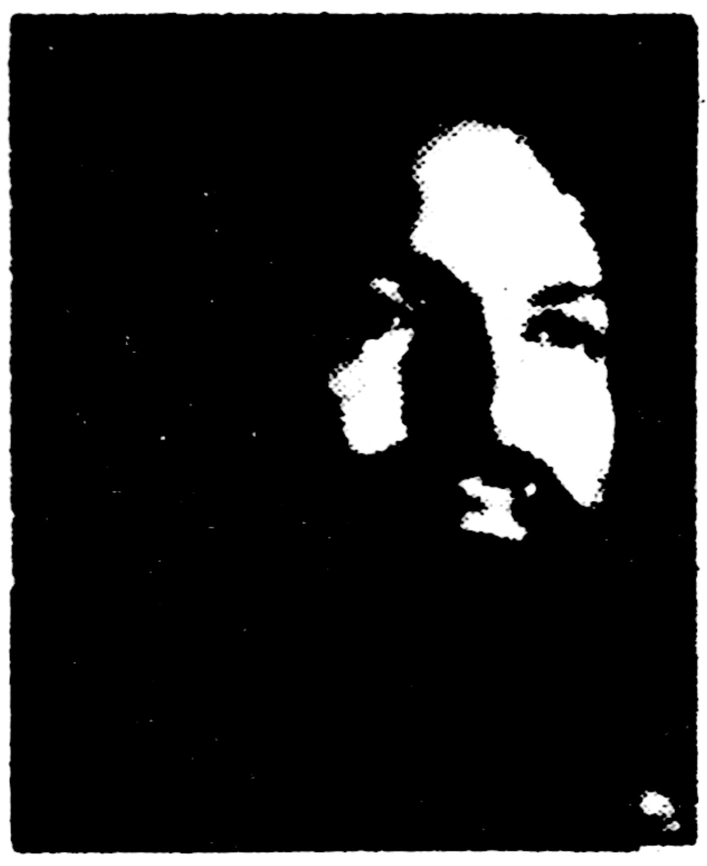
छत्तीसगढ़ी बोली

हमर बोली छत्तीसगढ़ी
जइसे सोन्ना-चांदी के मिंझरा-सुघ्घर लरी ।

गोठ कतेक गुरतुर हे
ये ला जानथे परदेशी ।
ये बोली कस बोली नइये
मान गेहें विदेशी ।।
गोठियाय मा त लागथेच
सुने मा घला सुहाये - देवरिहा फुलझरी ।।

मया पलपला जथे,
सुन के ये दे बोली ।
अघा जथे जीहा
भर जथे दिल के झोली ।।
मन हरिया जथे गजब
धान बरोबर, पाके सावन के झड़ी ।।

अउ बोली मन डारा खांधा
छत्तीसगढ़ रुख के फुनगी
सवादमार ले गोठिया ले
चार दिन के जिनगी ।।
कोचइ पान पीटी के बफौरी कस
अउ जइसे रसहा रखिया बरी ।।



पवन दीवान

जन्म - ०१-०१-१९४२ ग्राम किरवई (राजिम)
शिक्षा - एम.ए. संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी
प्र.कृ. - मेरा हर स्वर इसका पूजन (काव्य संग्रह)
उप. - मध्यप्रदेश शासन में जेलमंत्री तथा समाज कल्याण राज्यमंत्री रह चुके है । अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में हिस्सेदारी । रचनाओं का प्रदेश तथा देश के विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन । भागवत पुराण के प्रख्यात विद्वान, वर्तमान में महासमुन्द लोकसभा क्षेत्र के सांसद ।
पता - ब्रम्हचर्य आश्रम राजिम, जिला-रायपुर

कइसे करे किसान

करलइ हे भगवान बताओ
कइसे करे किसान
नरवा-नदिया ढोंड़का डबरी
खेत सुखागे
जब ले परिस दुकाल जी संगी
हमर लेखे संसार सुखागें
परे चिरइया सुनरे भइया
कइसे पार लगाबो नइया

पेट म मुसवा गजब दंदोरे
लइका करथे कल्लर कइया
चिरहा फरिया म लइका रोवे
झेंझरी भइगे लुंगरा
चूंदी लट के मांग उजरगे
अउ चिटि यागे फुंदरा

सक्कर ल चांटा मन खादिन
तेल ल पी दिस मुसवा
मनखे होगे रिंगी चिंगी
नेता होगे कुसवा
दूदी दाना गंहू मिलत हे
थोथना म चटकालौ

हमर कमाई म पटेला मन
चारेच दिन मट कालऔ
कहां ले लसलस चुरे अंगाकर
नइहे चाउर पिसान
करलइ हे भगवान
बताओ कइसे करे किसान



भोलाराम यादव

जन्म - ०९-०४-१९४३
शिक्षा - एम.ए. (संस्कृत)
उप. - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित, शिक्षकीय कार्य में रत ।
पता - दुर्गा चौक, राजनांदगांव

दर-दर के होगेंव

पढ़े लिखेवर नै जानेव संगी,
दस्तखत सीखके होगेंव साक्षर,
साहूकार के खाता मा करदेव
मुड़ उठाके हस्ताक्षर ।
बेटी मोर बाढ़त रिहीस,
ओखर बिहाव के होगे फिक़र,
बने अस लइका मिलगे
बिहाव के चलिस जिकर ।
बेटी के बिहाव के खातिर संगी,
पैसा के पड़गे जरुरत,
मिलिस पन्द्राही के मोहलत
ऐसन निकलिस बिहाव के मुहुरत ।
साहूकार कना दौड़ेंव संगी,
कर्जा मांगे बर,
एक हजार के कर्जा लेंव
अउ खाता में करदेव हस्ताक्षर
कर्जा के किश्त पटात गेंव,
हर महीना पेट काट के,
कर्जा के मुक्त नै होयेंव
पांच-पांच कोरी पटाके तीन बच्छर ले ।
पंच-सरपंच कना दौड़ेंव,
करत बहुत गुंवार,
पंचायत मा मैय हार गेंव
जीतगे पापी साहूकार ।
एक हजार के कर्जा लेंव,
लिख दिस पापी दस हजार,
दर दर के मैय होगेंव संगी
मोर बेचागे सब्बो खेत बार ।
बने अक्षर गिनती जानके,
साक्षर बनहु साथी,
मोला चपके तैसे
तुम्हला चपके झन सफेद हाथी



विष्णु प्रसाद तिवारी
"भ्रमर"

जन्म - ७-१२-१९४३ गंडई (पंडरिया)

उप. - आपके रचनाएं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित। आस्था हिन्दी साहित्य समिति थान खम्हरिया के अध्यक्ष एवं निष्ठा साहित्य समिति बेमेतरा के सक्रिय सदस्य । वर्तमान में थान खम्हरिया में शिक्षक ।

पता - अध्यक्ष - आस्था हिन्दी साहित्य समिति, थान खम्हरिया, जिला-दुर्ग ।

कुकरा घड़ी किसान के

कुकरा घड़ी किसान, उठात हे बिहान के
अंग्रेजी घड़ी पहिरे परे हव उतान के
जुग जुग ले भाई ये जग ल जगात आइस
शहर पहर गांव गली सब ल चेतात आइस
राम ल जगाइस ये जिताइस मैदान मा
ये महत्तम लिख हे रामायण पुरान मा
वोहिल मारौ अऊ तीहार मानव तान के
रंगरेजी घड़ी पहिरे परे हव उतान के ।१।

विगड़े ले कोनो गा पूछे नई फोकट मा
हजार दू हजार ला खाथे जी नीचट मा
जीयत घड़ी ल मारके कलमा बुझावो झन
बड़हर होथे अक्कल भैंस ल बताव झन
गरीबी भगाय बर भाव पायेव धान के
रंगरेजी घड़ी पहिरे परे हव उतान के ।२।

चक चक ले पालिस के चक्कर में आव झन
नजर बंदी डबिया के माया म भुलाव झन
सुरुज पहस्चा हर बेरा ल बतात जथे
उथे चढ़थे ढरके वोहू ह बूड़े ल जाथे
न विगड़े न अबेर करे विष्णु घड़ी भगवान के
रंगरेजी घड़ी पहिरे परे हव उतान के ।३।

पुरखा के नामे ल सपन में खोवो झन
भिनसरहा भूल भटक जठना में सोवो झन
हरियर रहिथे तन मन बड़े फजर के जागे ले
किसानी के काम होथे आगु अउ आगू ले
वावू हर जस गाइस जिनगानी बर किसान के
रंगरेजी घड़ी पहिरे परे हव उतान के
कुकरा घड़ी किसान के उठात हे बिहान के



डा. निरुपमा शर्मा

जन्म - ३१-०५-१९४४ दुर्ग जिला

शिक्षा - एम.ए. एम.एड. पी.एच.डी. (हिन्दी) आयुर्वेद रत्न, पी.जी. सी.

उप. - हिन्दी, छत्तीसगढ़ी दोनो पर समान रुप से लेखन । छत्तीसगढ़ सहित देश के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं सम्मिलित । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी कविता, वार्ता, परिचर्चा का प्रसारण । रोटरी क्लब सहित लगभग आधा दर्जन सामाजिक तथा सांस्कृतिक संगठनों द्वारा सम्मानित ।

पता - म.नं. २७/४६८ अमीनपारा, रायपुर

गीत

मन मउरे मउहा महक मारे ना ।
सुरता के हिरना डहक मारे राजा महक मारे ना

दुनो आंखी मा तोला मैं काजर बनाएंव
नदिल गेंदवा मा रे पिरोहिल वैठारेंव ।
एक एक बोली मा चहक मारेव मैना ....

लाली चूरी टिकली रे लाले हे महाउर
मोहनी आंखी के हे कटारी आमा मउर
हुलकथे जीउ अधिआये डारे मैना .....

मति आये रेंगना मा मतहा मतागे
गदकथे मोंगरा मयारू हा मोहागे
रस मांगे मन कचुवाय डारे मैना ...

जिनगी हे खाल्हे ऊंच तरिया के पार
मरही उड़ेला ता ढहाही रे कगार
आवा जाही बेरा ला बुड़ोय डारे मैना ...



हेमलाल साहू 'निर्मोही'

जन्म - २१-८-१९४४ सुरजीडीह (कुम्हारी) दुर्ग
प्रकृ - छिन भर जिनगी (काव्य संग्रह)
उप - बम्बई, दिल्ली, भिलाई, रायपुर, टाटानगर, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) आदि छोटे बड़े शहरों में अब तक ४६० मंचो पर सस्वर कविता पाठ। आकाशवाणी रायपुर से भी कविता पाठ का प्रसारण । अनेक सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध
पता - सुरजीडीह, पोस्ट- लिमतरा (कुम्हारी) जिला-दुर्ग

सिधवा के मरे बिहान

अघुवा अघुवा मन वईमान होगे रे
सिधवा के मरे बिहान होगे रे ।

वने गोठ के नई सुनइया, लंद फंद ल भाथे,
भाई-भाई में कराके झगरा, मेऊ अपन बन जाथे ।
मरहा मरहा पहलवान होगे रे

उज्जर पाखर पहिन के सब, मइनखे ल भरमाथे
काम के डर मा नेता बनके, सुक्खा धाक जमाथे ।
अब तो अपने मन विरान होगे रे

गांधी के राम राज, चिथि चिथि होगे
सपना सुराज के आज, सेती मेती होगे
घरो घर रावन दइहान होगे रे

कनिहा टोरत हे मंहगाई, किलो मं भाजी वेचाथे
साहेब के लबारी मां, पइसा गोठियाथे
जीयत मा मनखे मसान होगे रे



डॉ० रमेश

जन्म - २८-१-१९४५ बागबाहरा

शिक्षा - एम बी बी एस (रायपुर प्रथम बैच)

उप - मेडिकल कालेज रायपुर छात्रसंघ के प्रथम अध्यक्ष । १९७२ में म०प्र० शा० में शिक्षा राज्य मंत्री रहे । १९९०-९१ में छत्तीसगढ़ विकास मंच का निर्माण एवं उसके संयोजक । अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में हिस्सेदारी । हिन्दी फीचर फिल्म 'गुनाह' के निर्माता

पता - साल उद्योग भनपुरी, रायपुर

छत्तीसगढ़ के छत्तीस मनखे

छत्तीसगढ़ के छत्तीस मनखे
जब हो गईन हुशियार
शोषण उत्पीड़न ला समझिन
सड़े मरे बर तैय्यार

डोकरा डोकरी अकाल में मरगे
बाकी बांचीन चौंतीस
चार झन बाहिर निकलगे
बाकी रहि गिन तीस

काठा छावके रोगहा गौंटिया
जिन्दगी भर भूती दिस
दस झन भूती कमात सिरागे
बाकी रहिगे बीस

बाढ़ी छूटत चार झन मरगे
चार ला लेगे बघवा
चार ला चल परदेश कमावो
कहिके लेगे ठगवा

तेरा साल के हिरौंदी मरगे
गौंटिया टूरा के कारण
फुलवासन ईंटा भट्ठी में रहिगे
हम्मन कुछु नई जानन

सुकवारो कलकत्ता चल दिस
हेमिन हर बम्बई
दसरू रिक्शा तीरत मरगे
अईसे जालिम कमाई

हक के लड़ाई लड़ना ठानिन
बांचे हुए कुल तीन
दू झन पुलिस के गोली खागे
ध्यान लगाके गिन

एक मरहा खुरहा बांचगे
उठालिस छत्तीसगढ़ के झंडा
पुलिस बोला पकड़ के लेगे
बाकी बचगे अंडा

आओ रे छत्तीसगढ़िया आओ
ऐ बिजहा ला बचाओ
ये झंडा मा हाथ लगाओ
छत्तीसगढ़ के राज बनाओ



डॉ. नीलकंठ देवांगन

जन्म - ०३-०२-१९४५

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी, राज. विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र) आयुर्वेदरत्न।

उप. - अपन गांव के भुइयां (छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक संस्था) का संचालन एवं निर्देशन छत्तीसगढ़ के माटी एवं परसा पान सांस्कृतिक समिति सहित विभिन्न कई आयोजनों में मंच संचालन ।

पता - मु.पो. कोड़िया (नंदिनी) जिला - दुर्ग (म.प्र.)

जागव

होगे बिहिनिया संगी मोर
सूते के वेरा नइये तोर ।
बगरिसे सुरुज अंजोर
गांव मं जम्मो गली खोर ।।

अंधवा वर जइसे ये दुनियं अंधियार है
देश वर उइसने सब अप्पढ़ गंवार हे
पढ़ लिख लव कहना मानव मोर
सूते के वेरा नइये तोर ।।

जांगर के टूटत ले तुमन कमाथव
पढ़े लिखे नइयव तेखर सेती गाथव
अब्वड़ हावय ठगइया चहूं ओर
सूते के वेरा नइये तोर ।।

वात वताइन हे ऋषि मुनि ग्यानी ।
अब कोनो झन रहव अप्पढ़ अग्यानी ।
चिरई चिरगुन के होवत हावय शोर ।
सूते के वेरा नइये तोर ।।

कुंआ के मेचका कस तू मन धंधाये हव ।
देश दुनियां ले निचट तुमन अलगाये हव
झांक के देखव दुनिया ला संगी मोर
सूते के वेरा नइये तोर ।।

सोचे अउ समझे के दिशा ला तुम वदलव
समय के संग चलके रद्दा नवा गढ़व
अपन हालत ले उवरव संगी मोर
सूते के वेरा नइये तोर ।।

चेथी के आंखी ला आघू डहर लावव
अतका दिन ले सूते रेहेव अव तो बने जागव
अपन आप ला पहिचानव संगी मोर
सूते के वेरा नइये तोर ।।



भूपेन्द्र सिंह टिकरिहा

जन्म - २९-०९-१९४५ डंगनिया (पाटन)

शिक्षा - एम.ए. (राज.)

प्र.कृ. - धरती के संग, जिनगी के रंग (छत्तीसगढ़ी काव्य संकलन)

उप. - लगभग आधा दर्जन पत्रिकाओं का संपादन, हिन्दी साहित्य समिति पाटन के अध्यक्ष । विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लेखन ।

पता - शिक्षक मा.शा. पाटन, जिला-दुर्ग

लोक गीत फाग

छत्तीसगढ़ राज बनाबो रे
बनाबो बनाबो, बनाबो रे

छत्तीसगढ़ राज बनाबो ।
ककरो भरकउनी मा नइ आवन
सुमता सुमत लगाबो रे ...

दन्तेसरी, दाई बमलाई,
खल्लारी, अउ महामाई,
सबके अलग जगाबो रे ...

छत्तीसगढ़िया, सबले बढ़िया
गुरतुर बोली, फेर खरतरिहा
जिव देके जुरियाबो रे ...

पांव बढ़े, झन होवय पाछू ।
चलव जवान, बढ़व जी आगू,
महतारी के किरिया खाबो रे ...



डा. श्रीमति
जनकबाला शर्मा

जन्म - ०९-११-१९४५ झरीया (विहार)
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी) पी.एच.डी. (लोकनाट्य) बी. म्यू. प्रथम वर्ष
उप. - अंचल के विभिन्न समाचार पत्र पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन। लोकसंगीत महाविद्यालय में दो वर्ष तक अध्यापन-कार्य । नगर के कई सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध ।
पता - एल.आई.जी.-३. टाटीबंध गुरुद्वारा के पास, रायपुर

संगीतकला के माहत्तम

प्रेम-पियूष के प्याला पियाथे
दया के दोना करथे दान

कर्मवीर के काहिनी कहिथे
संगीत कला हे अइसन महान

अज्ञान अंधकार ला टारथे
लुटाथे ज्ञान के मोती
मानवता के रद्दा बनाथे
संगीत कला के ज्योति
ठांस- ठांस के मन मां भरथे
गुरुमन बर सम्मान

संगीत कला के विद्वान मन के
तभे होथे दुनियां मा मान
संगीत कला के लगन बिना
मानव जीवन अधूरा हे

तभे आज दिखथे
तककोन के हाथ मा छूरा हे

आवव संगी पहुंचाबो घर घर
सुर ताल संगीत कला के

तभे तो चुकाबो कर्जा
अपन भारत मां के ।



सुखदेव राव साहू

जन्म - ०१-०२-१९४६, टिकरापारा, रायपुर
शिक्षा - एम०ए०, बी०एड०, पी०एच०डी।
उप० - अंचल के अधिकांश पत्र पत्रिकाओं में कविता, लेख तथा व्यंग्य का नियमित प्रकाशन । साहू समाज द्वारा प्रकाशित साहू संपर्क पत्रिका का विगत पांच वर्षो से संपादन । आकाशवाणी से भी कविताओं का प्रकाशन । अनेक सामाजिक तथा सांस्कृतिक संगटनों के पदाधिकारी।
पता - ५१९, साहू भवन, अमीनपारा, पुरानी बस्ती, रायपुर

सती रक्षा

मोटियारी टूरी के मरना ल सुनके
मोर घरवाली के ममता जागिस
वार वार ओकर लड़ाई मा वधाई दिस
मे सोचेव । ये कइसन नारी ये
ये भीषण दुरघटना के विरोध करतिस
त समर्थन करथे ये अनारी ये
में समझायं शांत र देवी
इहां आत्म हत्या के साथ वोकर उफसझा मन घलो,
अपराधी हे, समर्थन के वात घलो वरवादी हे ।
लेकिन मोर ले देके एम पी पतनी के वलिपायी ये
ये डवल एम ए पति के लाचारी ये ।
वो कहिन ! सुनो अउ गुनो ।
जेन मोटियारी ह सास के ताना म मरथे,
जेकर ननद ह अवड़ेच तपथे,
जेकर जेट तक ह वोकर हाथ पकड़थे,
जेह वार वार दाइज के तकाजा म,
आधा सीसी मरथे ।
जे ह अपनेच पति के आधू तड़प के मरथे,
वो ह चूरी पहिरे कस हाथ वांधे वटर वटर देखथे,
ते नहीं दूसर कहिथे ।
तव हमन ये ल सती कावर नई काहन,
आत्म हत्या जव अपराध हे,
त का हत्या निरपराध हे ।
परमान के अभाव म का सव्वो वरवाद हे ।
आंखू मूंदे तराजू धरना उपासना साथ साथ आवाद हे ।
जम्मो सिरागे त निचोही काला त पहिरही माला ।
वोकर ये तर्क में मोला देवी जी के दरसन होगे ।
समझौता वादी समर्पण मजवूरी होगे ।
यदि में चल देव त ते सती मत होवे,
यदि तोर अइसन गति होही त
दूसर वाई झन वनावे ।
एती खाई ओती कुआ जिनगी भी जुआ,
दूनो डाहर ले ि सना हो गेव



रामेश्वर वैष्णव

जन्म - १ फरवरी १९४६, खरसिया, रायगढ़ (म.प्र.)

शिक्षा - बी.ई. द्वितीय वर्ष

कृतिया - अस्पताल बीमार है, जंगल में मंत्री बाल्टी भर आंसू, गिरगिट के रिश्तेदार, शहर का शेर (सभी व्यंग्य संग्रह) पत्थर की बस्तियां (गजल संग्रह) नोनी बेंदरी (छत्तीसगढ़ी हास्य व्यंग्य काव्य संग्रह) एक अंतिम और वैष्णव दीपिका (सभी) सम्पादित संग्रह) छत्तीसगढ़ी जागरण गीत, नवगीत अर्धशती, १९८७ की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं , १९९२ की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं (सभी संकलित संग्रह) रायपुर, छतरपुर, रांची जगदलपुर, इन्दौर, बम्बई आकाशवाणी केन्द्रों से अनेकों रचनाओं का प्रसारण । अनेक छत्तीसगढ़ी गीतों के रिकार्डस् एवं कैसेट निर्मित ।

पता - सी-४२, डाक कालोनी, टिकरापारा, रायपुर

चौरान्बे के पूरा

गंवागे गांव, परान, मकान पूरा मं एसों
बोंहागे धारोंधार किसान पूरा मं एसों
सुरुजिंहा होईस बरसा त पंदरा दिन के झक्खर
जीव अकबकागे सब्बो के कहे लगिं अब बसकर
भुलागेंन काला कथें बिहान पूरा मं एसों ...
पैरी-सोंढुर महानदी, हसदो अरपा सिवनाथ
खारून इन्द्रावती-मांद, बनगे सब काले के हाथ
लहुट गे जीवलेवा कोल्हान पूरा मं एसों .....
बादर फाटि स, जइसे कहूं समुंदर खपलागे
रातों रात इलाका ह पानी मं ढकलागे
परे सरगे सब बिजहा धान पूरा मं एसों ......
सांप -बिछ्छी मनखे कोचकिच ले रुख राई म अरझे
परबत-पिरथी जलथल होगे कोन अकास ल बरजे
बोंहावय भंइसा मरे उतान पूरा मं एसों ......
दिल्ली अउ भोपाल मं मचगे छत्तीसगढ़ के हल्ला
मंतरी नेता आंसू पोंछे दंउड़त आगे पल्ला
निचट घर्राईस उड़त बिमान पूरा मं एसों ....
रोमिहा रोमिहा के पानी ह मरो जिओ के बरसिस
रद्दा सबो छेंकागे मनखे खाय पिए बर तरसिस
बचांना मुस्कुल होगे जान पूरा म एसों ......
सेना, हेलीकाप्टर, मोटर-बोट बलाना परगे
कतको बाढ़ फंसे मनखे मन बांचिन, कतको मरगे
उठाईन जोखिम वीर जवान पूरा मं एसों
पांव परंव मैं ऊंकर जेमन कूद परिन मंझधार
उबुक चुबुक होवत जिनगी ल जे नहकाईन पार
लुटाके अपनो घलो परान पूरा मं एसों....



चेतन भारती

जन्म - ३०-०३-१९४६ मोहंदी (अभनपुर)

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी) म.प्र. एस.ए.एस.

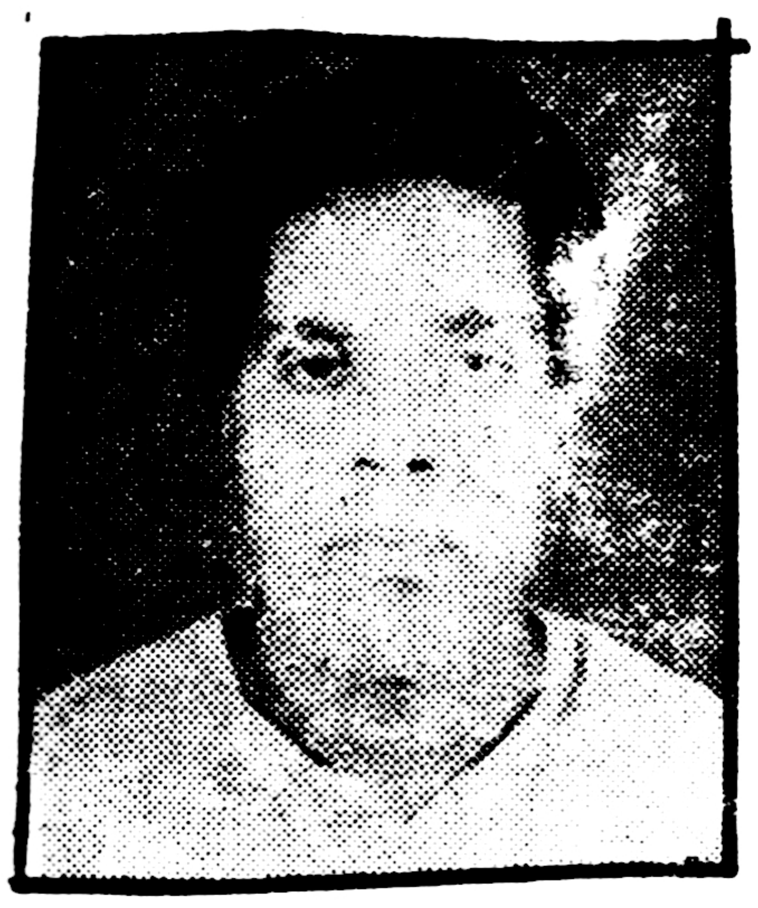
उप. - अंचल के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित । आंचलिक कवि सम्मेलनों में हिस्सेदारी । आकाशवाणी रायपुर से भी कविताएं प्रसारित ।

पता - बजरंग चौक, मठपारा, रायपुर

गुरतुर बोली

हिरदे मा प्रेम के रोपा लगाके,
दुनियां मा नाम जगावव जी ।
राहटा के बाणी ला बाहिर करके,
मीठा जबान बनावव जी ।।
चारेच दिन के ये मेला मा,
के दिन हमला रहना हे ।
मुठा बांधे हम आयेन संगी
अब हाथ पसारे जाना हे ।
मानुष तन तो संग नइ देवें,
सबे धन दौलत तो खोना हे ।।
सुख दुख ला अब मिलके बांटी,
चलत जुर के रद्दा चतवारव जी ।
बड़े बिहिनिया के सुकुवा उगे ,
बाट तुंहर अब देखत हे ।
सुंदर अंकन ले अंगना लिपके,
चंदा, फूल बिछाये जोहत हे ।
तोरे अमृत ला झोके खातिर
धरती हरियर ओसारी बनावत हे ।
अकरस भकरस के झमेला छोड़के,
मन मौहा ला अब चल फैंकव जी ।
कतेक जतन मा ये तन पायेन,
अब बिरथा येला नई करना हे ।
जूआं जाड़ी ला कान पकड़ के ।
घर ले बाहिर करना है ।
कतको डेहरी के दिया बुझागे
अब ये हरहर कट कट ल दूर करना हे ।

गुरतुर बोली कंठ मा बसाके ।
अपन भाग ला फुरहुर बनावजी ।।



राम प्रसाद कोसरिया

जन्म - ९-१-१९४७ लाखागढ़ पिथौरा, रायपुर
शिक्षा - बी ए, एल एल बी
उप - अंचल के अनेक पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित । आंचलिक कवि सम्मेलनों में हिस्सेदारी । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी कविता पाठ का प्रसारण । छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति के उपाध्यक्ष
पता - सिविल लाईन, रायपुर

गीत

विना तेल विन बाती
जीवरा जरय दिन राति
जीनगी अंधियार लागे रे

विन वरसा चुहय
आंखी के ओरवाति ।
विधाता तोर महिमा, अपरमपार लागे रे

वुड़ मरे जनता,
नेता मांगे नहकाई
सरम चढ़े मंहगाई, दुखिया सव संसार लागे रे



जीवन यदु

जन्म - ०१-०२-१९४७ खैरागढ़ (राजनांदगांव)
शिक्षा - एम.ए. (शोध कार्यरत)
प्रकृ. - झील की मुक्ति के लिए (१९८४) अनकहा है जो तुम्हारा (१९९४)
उप. - अंचल सहित देश के प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन में भी कविता पाठ का प्रसारण । कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित । वर्तमान में शैक्षणिक कार्य ।
पता - खैरागढ़, जिला-राजनांदगांव

का होगे मितान मोर देस ला ?

रकसा मन दिन-दिन बाढ़त हे, सतवंता मन सत छाड़त हें
काटे कोन कलेस ला ? का हो गे हे मितान मोर देस ला ?
गोल्लर मन के झगरा मं खुरखुंद होवत हे बारी,
चोर हवयं रखवार, त बारी के कइसे रखवारी,
जब ले गिधवा-पिलवा के जामे हे पांखी डेना,
तब ले सत्ता के घर मं बइठे हे बन लमसेना,
मांस के लोंदा बर ये लड़थे, गिनती कस चिल्ला के पढ़थे,
गांधी के संदेस ला, का हो गे हे मितान मोर देस ला ?
बड़ा अचंभो, हरियर पेड़ ल चरदिस घुनहा कीरा,
बिसर उलट बासी ल जाही, ये ला देख कबीरा,
ठग बिदिया ले बड़का बिदिया हवे त मोला बताना,
मेहता साहेब कस कतको झन लूटत हवे खजाना,
ठग्गू मनके महल अटारी, खीर खाय बर सोन के थारी,
देखव इनखर टेस ला, का हो गे हे मितान मोर देस ला ?
गांव के मंदिर खड़हर भइगे, चमगेदरी के बासा,
भीतर कुतनिन पिलवा देथे, बाहिर जमथे पासा,
आन गांव के मंदिर बर सरधा के बइहा पूरा
धरम ल मुड़ दिस राजनीति ह नेत के उल्टा छूरा
मनखे मनखे ल काट त हें, तभो ले चट नी कस चाट त हें
तुलसी के उपदेस ला, का हो गे हे मितान मोर देस ला ?
फुसुर फुसुर जनता सोही त देस ह कइसे जागे,
अंधरा के आगू आगू अंधियार घलो ह भागे,
सपना ल देखत देखत डोकरा के झरय बिरौनी,
लेड़गा मनखे जनम के कोंदा, पढ़े लिखे हे मौनी,
जीयत हन हम सबला सहिके, जइसे अपनेच देस मं रहिके
तापत हन परदेस ला, का हो गे हे मितान मोर देस ला ?



विनय पाठक

जन्म - ११-०६-१९४७ बिलासपुर
शिक्षा - बी.एस.सी., एम.ए. पी.एच.डी., डी.लिट (डबल)
प्र.कृ. - समाज सुधार में अग्रणी सत्यार्थ प्रकाश (हिन्दी) छत्तीसगढ़ी लोककथा, छत्तीसगढ़ी साहित्य अउ साहित्यकार, सुकुवा (छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)
उप. - हिन्दी व छत्तीसगढ़ी भाषा की विभिन्न लगभग चालीस पुस्तकों का प्रकाशन व संपादन । दर्जनों समाचार पत्रों में पत्रकार के रुप में सेवा । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से कविताओं का प्रसारण । अनेक छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक तथा सामाजिक संस्थाओं से सबद्ध ।
पता - प्रयास प्रकाशन, पचरीघाट, बिलासपुर

तभ्भे चिरई उड़िगे

अनताज पाय रहेंव, आंखी मिलाये रहेंव
मया-बान धरे रहेंव, तभ्भे चिरई उड़िगे
चंदा थोरक झांकिस अऊ थोरक हांसिस रे ।
दर्शन होइस तभ्भे, जियरा ह डोलिस रे ।
घोपिस निच्चट बादर चंदा फेर लुकागे ।
जिनगी में अंधियारी, दीया फेर बुतागे ।
बइठे व मंय मन डोंगा, ओतके भर उड़िगे
मया-बान धरे रहेंव, तभ्भे चिरई उड़िगे ।।
मोर मन बारी मं फर हावय अइलाये ।
मोर मन तरिया मं पानी हे मइलाये ।
आंखी गंवागे मोर मया के फरिया ले ।
अव्वढ़ भुगतेंव संगी, बिपत अस करिया ले ।
मया तहां फेर बिपते, सुग्घर कहिनी परिगे ।
मया बान भरे रहेंव, तभ्भे चिरई उड़िगे ।।
तोर मया के भीतरी भीतरी अमां जातेंव ।
नानकुन बनके तोर जिनगी मां आतेंव ।
अइसन करके मंय नवा जनम लेहंव रे ।
अउ तोला मया-मया, अतड़ मया देहंव रें ।
जमों अतका होइस तहां, दार भात चुरिगे ।
मया बान भरे रहेंव, तभ्भे चिरई उड़िगे ।।



चेतन आर्य

जन्म - १६-१०-१९४७ रायपुर
शिक्षा - मैट्रिक
उप. - अखिल भारतीय स्तर की सभी छोटी-बड़ी पत्र पत्रिकाओं में गद्य-पद्य प्रकाशित । अब तक व्यंग्य की सौ रचनाएं प्रकाशित । कविता की मासिक साईक्लोस्टाईल पत्रिका वृत्ति का संपादन ।
पता - वसन्ती निवास, सुभाष नगर, महासमुन्द (रायपुर)

छितका कुरिया

मोर गांव के
छितका कुरिया
मोला बड़ सुहाथे
दाई के कोरा मा
सूते कस लगथे,

सुग्घर ले सुग्घर
ओकर ले भी सुग्घर
कौन काम के गंगा जल
ये त आय, दाई के चरण बरोबर

एकर अंगना त मोला
चारों धाम कस लगथे ।

एकर हांसी अइसन
जइसन, कोइली के बोली
मोर कुरिया हावय
बहिनी कस भोली

एकर मोर रिश्ता
राखी कस लगथे ।

शीतल छंइया, ममता बगराये
धीर-धीर पवन हा
थपकी दे दे सुताये

रात के अंधियारी
महतारी के अंचरा कस लगथे

अंगरी पकड़, एकर मय
पांव-पांव चलेंव
संगवारी कस, संगी
खायें अउ खेलेंव

एकर वंइहां मोला
सावन के झुला कस लगथे

सुख दुख हे, हमर थाती
हम बड़े अमीर हन
ढाई आखर प्रेम गवइया
हम, संत कवीर हन

वोली वानी एकर
साखी शवद कस लगथे ।

चारों खूंट मा वगरे हे
रमायन के चौपाई
बीच अंगना खड़े हावय
मोर, तुलसी दाई

ठांव- ठांव ह मोला
गोकुल-वृन्दावन कस लगथे ।

इही कुरिया मा
राम-जानकी, रहिन चौदह साल
मय काय वताव संगी
जानत हावव सव हाल

कोना-कोना मा
सीता माई के
पैरी बाजे कस लगथे



नरेश निर्मलकर

जन्म - ०७-११-१९४७ रायपुर (छत्तीसगढ़)
शिक्षा - प्राथमिक
उप. - आकाशवाणी के गायन में बी.ग्रेड कलाकार, प्रसिद्ध सांस्कृतिक लोक कला मंच सोन चिरैया के संस्थापक, अध्यक्ष । अनेक लोक कला मंचों में सक्रिय हिस्सेदारी। शासकीय कर्मियों की सांस्कृतिक प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान । छत्तीसगढ़ी फिल्म लेड़गा ममा, जय मां बम्बलेश्वरी में अभिनय तथा गायन गीत संग्रह प्रकाशन को तैयार ।
पता - आदर्श नगर, मठ पारा, रायपुर

चिकारा

मन बंजारा आवारा, किंजरे ये पारा वो पारा ।
मोह के गठरी खांध म ओरमे, स्वांसा सुर मं चिकारा ।

गांव सहर रद्दा पैडगरी, संग मा मित मितानी
दया-मया सुख-दुख पीरा मा, जुरे हे राम कहानी
का घर कुरिया कुंदरा डेरा, का बन बारी बियारा

बनगे काकरो मया मयारू काकरो बर परदेशी
चिन्हय कोन्हो हीरा के पीरा, कोन्हो कहै दूरदेशी
अंतस गोठ कोन परखईया, मया के मुरहा बिचारा

करम के जोगी धनी धरम जीव, जिनगी सुफल बनाही
कोन उबारे बिधि के लिखना, एक आही एक जाही
गुनी गरीबी गोठ गोठागे, ग्यान बिना अंधियारा



मुकुंद कौशल

जन्म - ०७-११-१९४७ दुर्ग, प्रकृ. भिनसार (काव्य संग्रह) लालटेन जलने दो (हिन्दी काव्य संग्रह)

उप. - आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से कविताएं, गीत, नृत्य का प्रसारण । सन् १९६९ से मंचों पर काव्य पाठ तथा मंच संचालन । उद्घोषक तथा अभिनेता के रुप में रंग मंच से सम्बद्ध । प्रथम छत्तीसगढ़ी धारावाहिक भोर के तारा के गीतकार संगीतकार व अभिनेता । साक्षारता सहित लगभग अंचल के पच्चीस सांस्कृतिक व सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध ।

पता - एच -१५५ पद्मनाभपुर, दुर्ग

एक दिया

आंसू झन टपकावे
सुरता के अंचरा मा
तुलसी के चौंरा मा
एक दिया धर देवे ।

मोर लहुट आवत ले
सगुना संग गा लेवे
रहिवे झन लांघन तैं
नून भात खा लेवे

बांधि-बांधि रखिवे झन
आंखी के पूरा ला
आंसू के नंदिया मा
एक दिया धर देवे

गांव हंसए देख देख
अइसन तैं रोवे झन
कुधरी के भांठा मा
आंसू ला बोवे झन

झन पोसे रहिवे तैं
सपना के पीरा ला
निंदिया के डेहरी मा
एक दिया धर देवे ।



संतोष कुमार चौबे

जन्म - ०१-०१-१९४८ ग्राम-मारो (बेमेतरा)
शिक्षा - हायर सेकण्ड्री
उप. - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में गीत एवं कहानियों का निरंतर प्रकाशन। आकाशवाणी रायपुर से श्रमिक जगत कार्यक्रम में कई बार कविता पाठ का प्रसारण ।
पता - सी.सी.आई. मांढर, जिला-रायपुर

देवारी आ गय रे

कातिक म देवारी, देवारी ले परिवां
दुइज भाई के मया ल जगाये आगय रे

राखी सावन के बंधना नवा चाउर के अंधना
बाट खाये के मौका, देवारी आ गय रे

दूर भगावव तोरी मोरी घर झगरा ले घेरी बेरी
लक्ष्मी मया के भुखायें समझाये आ गय रे

भागही यम के अंधियारी दिया बरही दुवारी
महिमा लक्ष्मी के भाई बिन बलाये आ गय रे

लहलहावत खेत के बालि जाहि संगी अब कंगाली
बरत भूइया म दिया ह बन चंदैनी लागय रे

मन म अन बन के गठरी दनाका कस फोर
लक्ष्मी आय के संरेगा बताये आ गय रे

घर घर चकचक ले अंजोरी दिया बरही लक्ष्मी ठउर
लाइची दाना लाई बतासा के परसाद देवारी आगय रे

बहिनी हाथ के पकवान डारे घर के अथान
जिमी कांदा मूनगा, बरी रखिया के साग ह भूलाये आगय रे

लउठी बाजत, राउत नाचत, बाजत गड़वा के निशान
भागत राउत ह मनवति जो हारे आ गय रे
देवारी आगय रे देवारी आगयरे, देवारी आगय



डॉ. चितरंजनकर

ज. - १६-०७-१९४८

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी, भाषा विज्ञान), पी.एच.डी., डी लिट्

उप. - आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से काव्य प्रसारण । देश के विभिन्न अखबारों समाचार पत्रों में लेखन। पं. रविशंकर विश्वविद्यालय में शैक्षणिक कार्य । अनेक सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध ।

पता - महंत तालाब के पूर्व, कोटा, रायपुर (म.प्र.)

गाड़ीवाला

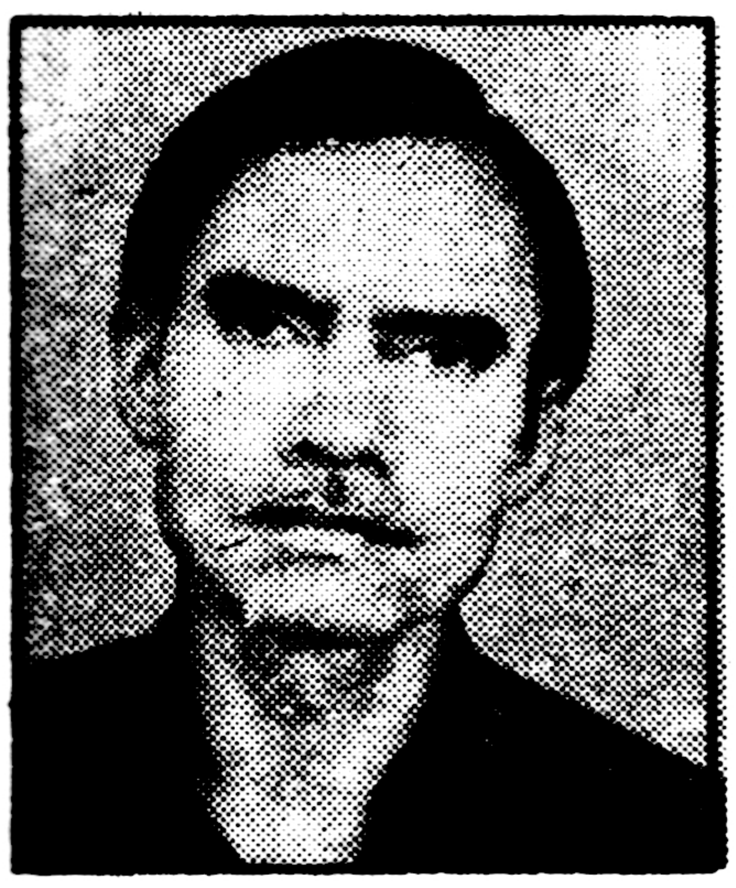
घुंच-घुंच गा गाड़ीवाला, मोटरकार आत हे
एती-ओती झन देख तें, इही डाहार आत हे

तोर वर नोहे ए डामर सड़क हा
तोर वर नोहे गा तड़क-भड़क हा
तोर गाड़ी ला खोंचका-डिपरा मेड़-पार भाथे

तोर वइला मन के दिल हे दिमाग हे
कार वपरी के अइसन कहां भाग हे
ओला नइ पिराय कभू जस तोला पिराथे

तोर गाड़ी म जव वइठे किसानिन
किसुन-रुकमणी सही फवौ तुमन, गौकिन
एला देख के कारवाला के मुंह मा लार आथे

तें झिन ललियावे दुदिनियां सौंक वर
वइठ के कार मा नइ जाए कउनो उपर
जिनगी के सुख-चैन ह तव वेकार जाथे



पाठक परदेशी

जन्म - १३-०४-१९४९ ग्राम बटंग (पाटन) दुर्ग ।
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी) बी.टी.आई.
उप. - भू-भारती (दिल्ली), नवभारत (नागपुर) पलाश (भोपाल) देशबंधु (जबलपुर) सहित अंचल के अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं में कृतियों का प्रकाशन । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी कविता पाठ का प्रसारण । पारस माटी लोककला मंच बोड़ला के संरक्षक ।
पता - शा. प्राथ. पाठशाला बैजलपुर, (कवर्धा) जिला - राजनांदगांव ।

रद्दा सुम्मत के चतवारौ

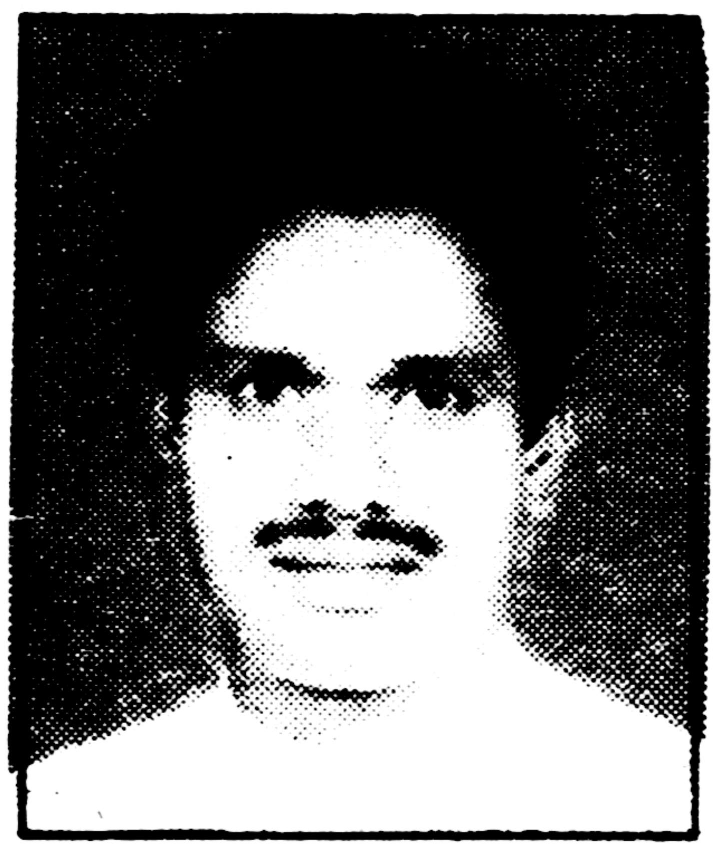
रद्दा सुम्मत के चतवारौ, दुरमत ल दुर्रावौ रे ।
एका अउ सद्भाव के संगी, तुम संगम बन जवौ रे ।।

बलवंता दुरमत होवै झन,
झन, लहू कहूं बोहावै ।
बरपेली झगरा करौ झन,
बैरी, भाई-भाई हो जावै ।
चारी खोहारी के डाढ़ा ल, ठुक ठुक ले झर्रावौरे ।

आस पास अउ ओनहा कोनहा,
झन, ऊंच नीच के भाड़ी रहै ।
जात धरम उट का पंची म,
झन, बूड़े कोहनी माड़ी रहै ।
छुवा छुती के रक्सा ल, धर के कान नचावौ रे ।

मंदिर, मस्जिद गिरजा, गुरुद्वारा,
नइ कहय, कोनो झगरा करौ ।
मुड़कान ककरो फोरे बर,
नई कहैं, जवर पथरा धरौ ।
सबके आदर एके बरोबर, सब बर माथ नवावौ'रे ।

छरियाये म होथे अनमल
जुरियाये के बात ल सोचौ ।
तीपय झन भोंमरा, भोरहा के,
घात करइया हाथ ल रोकौ ।
जीवो, मरवो अपन मुलुकबर, अइसन किरिया खावौ रे ।
एका अउ सद्भाव के संगी, तुम संगम बन जावौ रे ।।



लक्ष्मण मस्तूरिहा

जन्म - ०७-०६-१९४९ मस्तूरी (विलासपुर)
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी) बी.एड.
प्र.कृ. - हमू बेटा भुंइया के, गंवई गंगा, चंदैनी गोंदा में लक्ष्मण मस्तूरिहा के गीत, छत्तीसगढ़ माटी, सोना खान के आगी, घुनही वंसुरिया।
उप. - सुप्रसिद्ध सांस्कृतिक पार्टी चंदैनी गोंदा में सन् १९७२ से ७६ तक गीतकार तथा गायक के रूप में भागीदारी। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के प्रमाणिक कवि तथा गीतकार । टेलीफिल्म पुन्नी के चंदा, पिंजरा के मैना प्यार के वंधना, में गीत लेखन तथा गायन । स्व लिखित गीतों के दर्जनों कैसेट विभिन्न कंपनियों द्वारा प्रसारित । अनेकों संस्थाओं द्वारा सम्मानित ।
पता - राजकुमार कालेज, रायपुर

आज हमर देस के ए हाल हे

सारी जिनगी आंदोलन हड़ताल हे
आज हमर देस के ए हाल हे

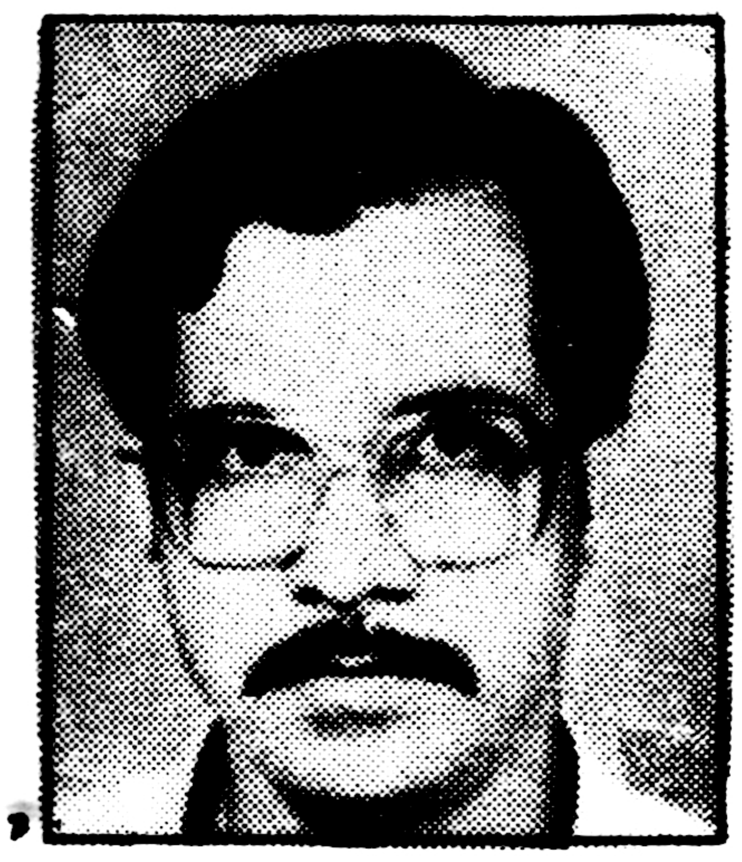
छाती केपीरा बने बाढ़े आतंकवाद
भ्रष्टाचार-घोटाला हे जिनगी म बजरघात
कमर टोर मंहगाई अतिया अन संभार
नेता-साहेब मगन होके भासन बरसात
ओढ़े कोलिहा मन बघवा के खाल हे

हमर देस हमर भूंई हमरे सुराज हे
जिनगी गुलाम कइसे कोन करत राज हे
दलबल के जोर नेता ऊपर ले आत हे
भूंई धारी नेता सबो मूड़ी डोलात हे
देस गरीब होगे नेता दलाल हे

पढ़े लिखे चेलिक मन भट के रोजगार बर
दिन दिन दुकाल परे उजरत हे गांव घर
भागत हे सहरिया मन बंगला मोटर कार बर
गांव वाले मनखे तरसै चाउर दार बर
गरीब जनता के नेता मालामाल हे

दोस काला देबो सब अपने भाई बंद हे
पद-पइसा पाइन उही भोंगाचंद हे
जिनगी सुराजी जियइया कंगाल हे
रोज देवारी उंकर रोग रंग गुलाल हे
ए सरकार घलो जीव के जंजाल हे

आज हमर देस के ए हाल हे



डॉ० विहारी लाल साहू

जन्म - २६-८-१९४९ ग्राम चाटीपाली (रायगढ़)
शिक्षा - एम ए पी एच डी
उप - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित, आकाशवाणी में भी कविताएं प्रसारित
पता - प्राध्यापक किरोड़ीमल शा० कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रायगढ़

छत्तीसगढ़ के पीरा

सुन गा भईया, छत्तीगढ़िया कइसे जीयथन
चाउर के कटोरा मा जम्मे पसिया पीयथन

ए धरती के माटी सोना
देथय धान दुना
भात फटकारे घूस मुसवा
कोठी हवय सुना

सुन गा भईया, छत्तीसगढ़िया कमिया जमों अन ।
हात मा पोंट तुतारी धरे लेढ़ुवा वने हन ।।

महानदी के निरमल पानी,
सुघर हे जवानी,
चारों धाम एही तीरथ मा,
भाखा हे सयानी ।

सुन गा भईया, छत्तीसगढ़ियां, रमान गढ़े हन ।
चन्दा अऊ सुरुज के पिलवा विलवा वने हन ।।

विसकरमा के हम वेटा अन
खेत खार कासी
घी-सोंहारी पहुना पाथे
हमन खाथन वासी

सुन गा भईया, छत्तीसगढ़िया विराग धरे हन ।
पण्डवानी के गीत गावत, वनवास परे हन ।।



शंकर लाल नायक

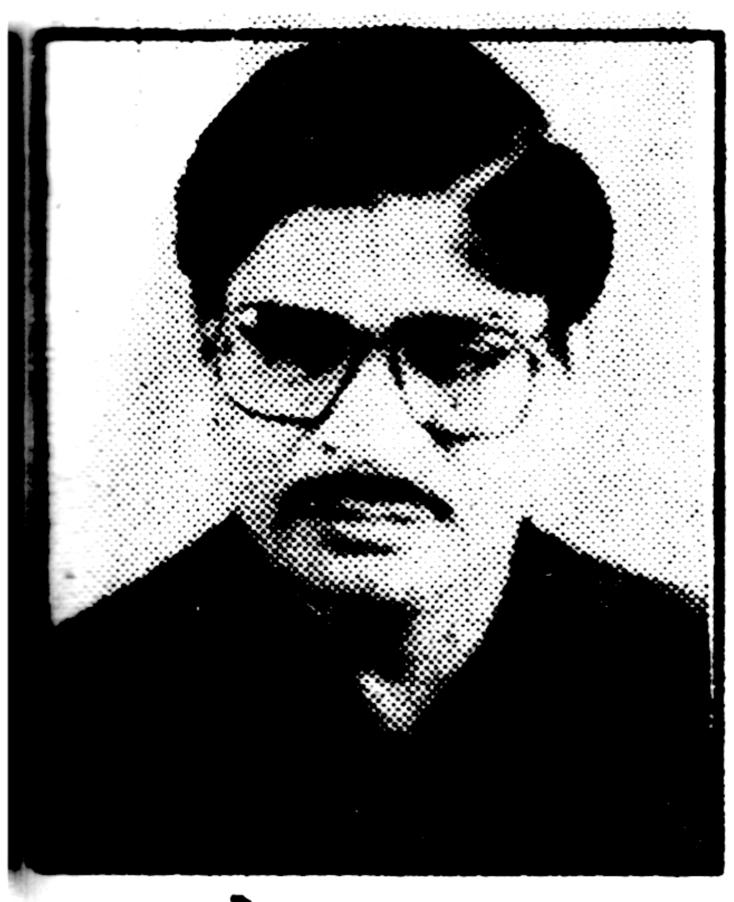
जन्म - ७-९-१९४९ जिला- रायपुर
शिक्षा - एम ए (हिन्दी अर्थशास्त्र) एम एड मानस रत्न
उप - अंचल के अधिकांश पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी कविता पाठ का प्रसारण । अनेक सामाजिक तथा सांस्कृति समितियों के पदाधिकारी ।
पता - शिक्षक कन्या हाई स्कूल नेवरा, जिला रायपुर

तुमन नि आयेंव

कराके इंतिजार
तुमन नइ आयेंव
पीरिया के वात
तुमन विसरायेंव
अंगना गली
दौड़ लगायेव
आहीच कही के
आस लगायेंव ।

पथरागे नजर
तुमन नइ आयेंव
संझाती वेरा
विस्तरा विछायेंव
मन के डेहरी
सुरता ल सजायेंव ।

कराके सिंगार
तुमन नइ आयेंव
मुंह ल ढांक के
दिल जलायेंव
भाग ल कोसत
आंसू वहायेंव ।
वढ़ाके पियार
तुमन नइ आयेंव



डा० महेन्द्र कुमार ठाकुर

जन्म - २९-१०-१९४९
शिक्षा - एम ए अर्थशास्त्र, हिन्दी, एल एल बी पत्रकारिता उपाधि, पीएचडी
प्रकृ - सुबह अवश्य आयेगी (व्यंग्य कविताएं) मैं कहता हूं अखिन देखी (लघु कथा) मध्यकालीन स्वछन्दतावादी काव्य (कविता) इक्कीसवी सदी का महाभारत (लघुकथा)
उप - जगदलपुर में लघु कथा सम्मेलन का प्रथम संयोजक व लघु कथा चित्र प्रदर्शनी का भारत में पहली बार प्रदर्शन, लघु कथा, व्यंग्य, कविता, गीत आदि के अनेक सम्मेलनों में भागीदारी एवं आकाशवाणी तथा विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में भी प्रसारण, प्रकाशन ।
पता - सहायक आयुक्त विक्रयकर, १९१३गीतांजलि नगर, रायपुर

अयोध्या

(एक)
वो हर
जोन कतल हुइस
बेटा रहिस कखरो
हाथ काटे गइस जेकर
मनखे रहीस
लुटिस इज्जत
जेखर बेटी के
तौन बाप रहिस
फूटिस चूड़ी जेकर
जोड़ी रहिस कखरो
उजाड़िस जेखर कोख
महतारी रहीस सबके ।
(दो)
रोज बिहनिया
जोन आवाज दे
बलाये मोला
मिलावत रहिस हाथ
लगत रहिस टोटा ले
आज घलो
वो हर
संकरी ला खटखटाइस
मोला
मोर नाव ले के बलाइस
तहां ले फेर
सोचे लगेंव में
का हे मितान के जान
वोकर धरम
में ह डरा गेंव
औ
ठोठकिस मोर हाथ
मोर मितान के
चकराये
मया भरे आंखी मा
भर जाथे कोनो डर
(तीन)
सिराथे
जोन मेर
मंदिर
राम ह
शुरुवाथे वो मेर ले
सिराथे
जोन तिर राम
मस्जिद
शुरुवाथे
वो मेर ले
(चार)
रोज बिहनिया
इसकूल भेजत
कहत रहिस महतारी
करेजा
बने मन लगा के पढ़बे
अब कहिथे दाई
करेजा
थोड़कुन सम्हल के
इसकूल जाबे
छुट्टी होही
तहां ले
सोझ घर आबे ।



प्रेमजी

जन्म - २८-१०-१९४९ राजिम (म.प्र.),
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान)
उप० - आकाशवाणी रायपुर, भोपाल, अंबिकापुर से काव्य पाठ का प्रसारण। साथ ही देश के प्रतिष्ठित अखबारों एवं पत्रिकाओं में गीत कविताओं का निरंतर प्रकाशन ।
पता - द्वारा - सम्भाजी विवेक, दैनिक देशबंधु रायपुर म०प्र०

गठरी के गांठ कस भारी हे मन

पथरा पहाड़ कस भारी हे मन
दुहरा असाढ़ कस भारी हे मन

जिनगी के फोटू मां कुछु न काही
विख करिया डांड़ कस भारी हे मन

कइसन मया, मोर पीरा हा वाढ़िस
सौतेली लाड़ कस भारी हे मन

जेकर अकास के वादर उड़ागे
वइसन कछार कस भारी हे मन

जता चढ़ैव उप्पर सुन्ना ला पाएंव
लम्बा रे ताड़ कस भारी हे मन

दुख के ये हाट, दुख काकर तिर वेचों
गठरी के गांठ कस भारी हे मन



लवकुश शर्मा

जन्म - १-११-१९४९ राजाबड़गांव (महासमुन्द)
शिक्षा - मैट्रिक
उप - आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से लगभग दस वर्षों से गायन , अंचल के पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित । मानस तथा भागवत कथा वाचन ।
पता - भगवत कृपा कुंज, सुभाषनगर, तेलीबांधा, रायपुर

तीन कुंडलिया

वोली गुरतुर वोल रे, करु कसा झन वोल
भितरे भीतर तउल के मुंह के खइरपा खोल

मुंह के खइरपा खोल, वोल अमरित अस वानी
वैरी विसरय वैर, पिघल के होवय पानी

कह लवकुश महराज, चला झन वंदूक गोली
जीभ मा नइये हाड़ नरम वोले वर वोली ।१।

कागा रे एक बात सुन कावर होय उदास
फोर अभी झन आंखी ला प्रभू देखे के आस

प्रभु देखे के आस, हे भाई देखन देना
वांचे हे अऊ मांस, देह मा वो खा लेना

कह लवकुश महराज आज सव देहूं लागा
धन्न मोर हे भाग, वखानौ कारे कागा ।२।

वैतरनी तर जात हें गौ के पूछी छुवाय
कतका अचरिज बात हे काला का समझाय

काला का समझाय, जीयत भर अतलंग करले
मरती वेर आय गाय के पूछी धरले

कह लवकुश महराज कोन भरही तोर भरनी
तन मन धन ला बांट, तभे जावे वैतरनी ।३।

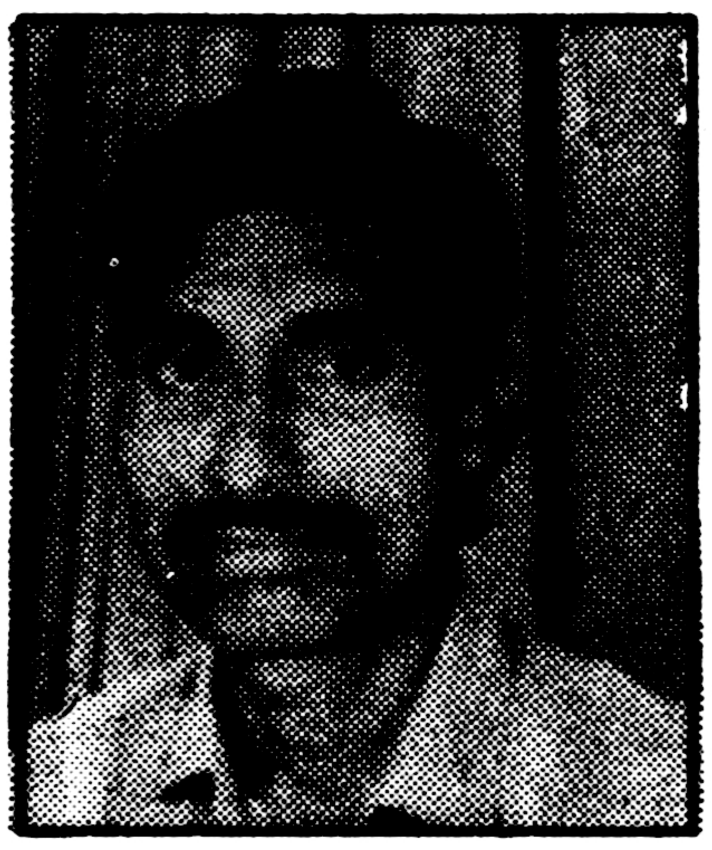


आनंद तिवारी पौराणिक

जन्म - ४-१२-१९४९, महासमुन्द
शिक्षा - एम.ए. बी.एड.
प्र.कृ. - खल्लारी चालीसा (छत्तीसगढ़ी)
उप. - छात्र जीवन में ही हस्तलिखित साप्ताहिक पत्र लहर का संपादन। अब तक २०० से अधिक बाल कवितायें प्रकाशित । शा.पू.मा. शाला बेमचा में शिक्षक के पद पर कार्यरत ।
पता - श्री राम टॉकिज मार्ग, महासमुन्द, जिला-रायपुर

बरवत के गोठ

नवा हे जमाना, नवा रिवाज हे,
काकरो आंखी म शरम न लाज हे,
लबरा वर इनाम
सच्चा वर सजा हे
गरीब वर दुख भारी
रोंठहा बर मजा हे
मंदिर हे खाली,
सिनिमा म मेला हे,
रमायन म कोनों नही
भट्ठी म रेला हे
टी.वी. हे विडियो हे
खरचा वड़ आफत हे
मंहगाई के लद्दी म
जनता बोजावत हे
छै फुट के तन म
छै इंची कपड़ा हे
चिन्हारी नइये अपन संगी
कईसन ये लफड़ा हे
मेहनत करइया के
दुनो हाथ रीत हे
पेट भूखे, तन उघरा
अब्बड़ फजीता हे
पईसा के लूट हे
चुसईया बर छूट हे
मंगलू के पुछईया
फिरतू के सुनईया
अऊ गरीब के गोसंइया
कोनो नइये भईया
कोनो नइये भईया ।।



सुखनंदन लाल शिव

जन्म - ०१-०१-१९५० जिला-बिलासपुर
शिक्षा - एम. ए. (हिन्दी)
उप. - आकाशवाणी रायपुर तथा बिलापुर से रचनाएं प्रसारित। अंचल के अनेक पत्र पत्रिकाओं के लिए लेखन । कृषि विभाग में कार्यरत ।
पता - मु. पेन्ड्रीडीह पो. आ. हिर्री माइंस, जिला- बिलासपुर

गांव म रइ जातेन

अड़ही मंय नइ जानव सहर के हाल ल
रिंगी चिंगी आनी बानी सतरंगी चाल ल
अपन गांवे म रइ जातेन हो, सहर डहर नइ जातेन न

सियाना दाई ददा तुंहर, आंखी उंखर झांझर हे
लाठी धर रेंगथे उन कमजोरहा जांगर हे
घर के देवता ल मना लेतेन हो सहर डहर नइ जातेन न

वनी भूती करके हम नून पसिया पी लेबोन
जुनहा फरिया पहिर के, ये जिनगी ल जी लेबोन
चुहत छानी म फिल जातेन हो सहर डहर नइ जातेन न

गांव हमंर नींक लागय, वर पीपर छांव ह
नइ समझ परय मोला सहरिया दांव ह
सहर गांवे ल वना लेतेन हो, सहर डहर नइ जातेन न

सहर म तो वन ठन के रेंगथे सब खोर म
वांध लेही कोनो तुंहला लुगरा के छोर म
सपना कुरिया म सजा लेतेन हो, सहर डहर नइ जातेन न



एम.आर. साहू

जन्म - ०१-०१-१९५०, ग्राम निनवा (रायपुर)
शिक्षा - एम.ए. संस्कृत
उप - हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी में लेखन । विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लेख एवं कविता प्रकाशित ।
पता - हाई स्कूल तरपोंगी (रायपुर)

राजनिति कइसे नाचत हे

आज राजनिति हा मोजरा वन के नाचथे ।
कुछ नेता मन ओला घेर के ओय ओय काहथे ।।
मजहव के गमला मा नफरत के पौधा ला उगावथे,
सत्ता के व्यापारी मा हिंसा के वीज ला डारथे ।
रामफल के जचगह मा रावण फल लगथे,
इही फल ला खाके कुछ नेता मन भोय भोय डकारथे ।।

कुछ मन भ्रष्टाचार के मैदान मा कुभावना के गेंद फेंकथे
धर्म के वल्ला ला पकड़ के चौका छक्का लगावथे
सत्य के विकेट ला वार वार गिरावट जाथे
अहिंसा के एम्पायर ला दोय दोय ठठावथे ।।

गंगू तेली राजा भोज वनगे,
काल के कुकुर हा आज शेर वनगे ।
अमटाहा साग हा, मशलहा वनगे
इही ला जनता हा खोये खोये खाथे ।

लकठा चुनाव ल देखके, लाडू ला वेंदरा जान ढूलाथे ।
मिठ मिठ वोल के मिठ लवरा मन हमला भुला जाथे ।।
जव उकर मुंह मा दहि जमिस जांगर मा परगे कीरा हे ।
सव आंखी मूंदे वैइठे हे जव देश मा जान के पीरा हे
एमन अपन पांव मा राजनिति के घुंघरु मा फसावथे ।।

वाह रे कुर्सी के ललचाहा तूमन देश मा चिखला मतावववथव
हिन्दू मुस्लिम भाई मन ला दुश्मन वनावववथव ।।
घुम घुम के संविधान के हरियर चरौटा ला रउंदावववथव ।
एमन राजनिति के मूड़ मा पैसा लुटावथे

देश ला पाली वनाके पासा के खेल खेलत हे
सरहा लकड़ी ला चीर के तीरी पासा कस खेलत हे
सकुनी के चाल कस गोटी मन ला रेंगावथे



रामेश्वर शर्मा

जन्म - १२-०३-१९५०, रायपुर
शिक्षा - हायर सेकेण्डरी
उप. - अंचल के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित । आकाशवाणी में भी लगातार रचनाएं प्रसारित । विभिन्न कवि सम्मेलनों एवं गोष्ठियों में सक्रिय हिस्सेदारी ।
पता - झंडा चौक, बढ़ईपारा, रायपुर (म.प्र.)

मोर गंवई गांव

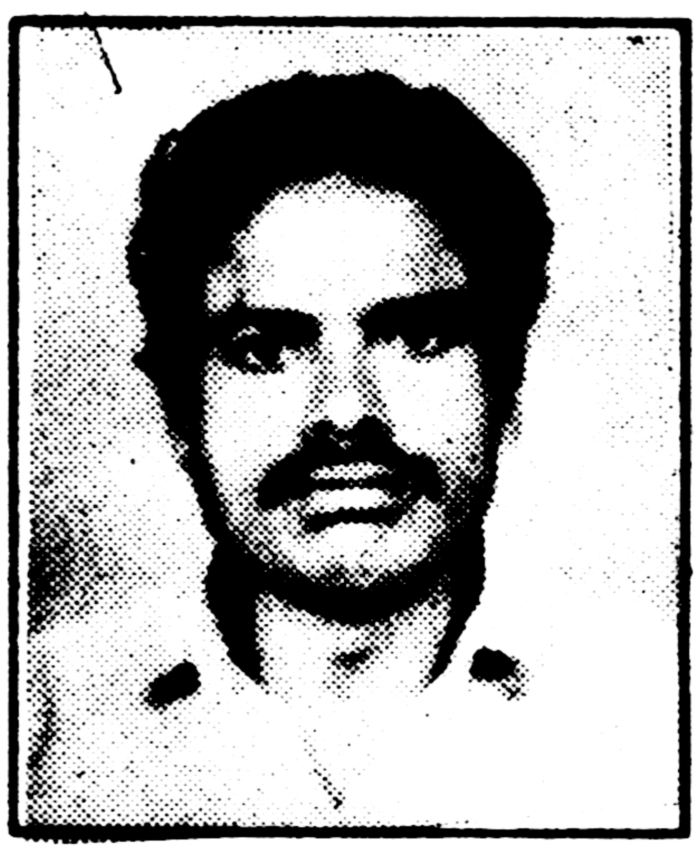
नदियां नरवां ढोड़गा वीच मे मोर गंवई गांव हे ।
वर पीपर आमा के संगी सरग अइसन छांव हे ।।

डोंगरी पहार ले सुरुज किरन हा हमर गांव मं आथे ।
जंगल झाड़ी खेत के वाली झरर-झरर झरर झराथे ।
अइसन सुघ्घर वहे पुरवाही तिहां हमर गांव हे ।।

खेत वारी के वेरा हमन नागर वइला ले जाथन ।
लहू पसीना सीच कमाके हीरा मोती उपजाथन ।
अव्वड़ कमइयां हमन भईयां छत्तीसगढ़िया नाव हे ।।

राम मड़ईया कस कुरीया ते मा सुख दुख पहावय ।
वासी खावन पसीया पीयन गूजर वसर दिन जावय ।
होरी देवारी रोज मनावन ये जिनगी वर ढांव हे ।।

मंदिर देवाला चारो खुंट मं तुलसी चौरा आंगन मं ।
वद्री द्वारका जगन्नाथ रामेश्वर अंतस पावन मं ।
तीरथ धाम सवो ले वढ़िया दाई ददा के पांव हे ।।



वसंत यदु

जन्म - ०५-०७-१९५०
शिक्षा - हायर सेकेण्डरी
उप. - प्रदेश सहित अंचल के अधिकांश पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से कविता पाठ । सन् १९८२ से स्वास्थ्य विभाग रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव के पंजीकृत कलाकार, अभी तक ४५० ग्रामीण अंचलों में प्रदर्शन । ठेठवार समाज सहित लगभग बीस सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध ।
पता - २९/३६१, महामाई पारा, रायपुर

गरीबी में हरि दरसन

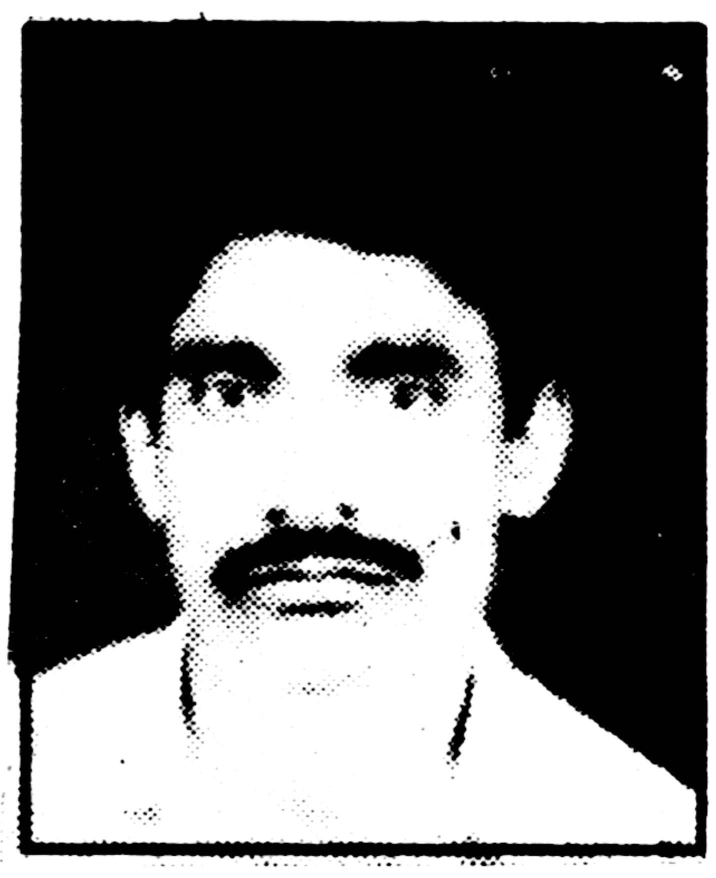
जांगर के जागर जगवइया, बनी भूती के नांव में ।
मिले गरीबी में हरिदरसन, सहर पहर अउ गांव में ।।

गरमी के गरमी में भुइयां, लसलस ले तिपे हे ।
पांव धरत में चट चट जरथे चंदन माथ घिसे हे ।।
सांय सांय कर झांझ झकोरे, धुर्रा धरती नापे ।
लहू पसीना बनके बोहे, पिरा हीरा कांपे ।।
लोहा के लोहा मानिस, बांह भरोसा दांव में ।१।

कट कट दांत ह कटरय, सन सन कान करत हे ।
धरे ठुनठुनी हात पांव ल, सुर सुर नाक बहत हे ।।
आगू धूरा आगू थाम्हे, आगू में अभरे हे ।
जेखर पुन्न कमाई में सब, बैतरनी पार उतरे हे ।।
अब्बड़ सुघर धाम बने हे, आमा अमली छांव में ।२।

बिजली चमकय बादर गरजे, घटा घटा के कारी ।
चिखला के दहीकांदो माते, भादो के अधियारी ।।
संगी जंवरिहा बने कंवरिहा, छाहित रहय गेवारी ।
जेखर तप बल में मानत हम, नित नव नवा देवारी ।।
चंदा सुरुज आकरे आरती फूल चढ़ा के भाव में ।।३।।

अइसन भगत के हाल देखके, अड़बड़ आथे रोवासी ।
का मथुरा का गोकुल कइहंव, घर में उपजे कासी ।।
तीज तिहार अलग दूरिहागे, नोहर बनगे बासी ।
कुरिया के भगवान बेचागे, कइसे आवय हांसी ।।
घेरी बेरी मोर हवय पैलगी, हात जोर के पांव में ।४।



तीरथराम गढ़ेवाल

जन्म - २४-०९-१९५० पेन्ड्रीडीह (हिर्रीमाइंस)
शिक्षा - एम.ए. बी.एड.
उप. - तोला कोन रंग भाये छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह प्रकाशन को लगभग तैयार। आकाशवाणी विलासपुर - रायपुर में अनेकों बार रचना पठ न। अनेकों पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय लोक कवि सम्मेलन में सम्मिलित।
पता - हिर्री माइन्स, जिला-विलासपुर

छत्तीसगढ़ के पुतरा

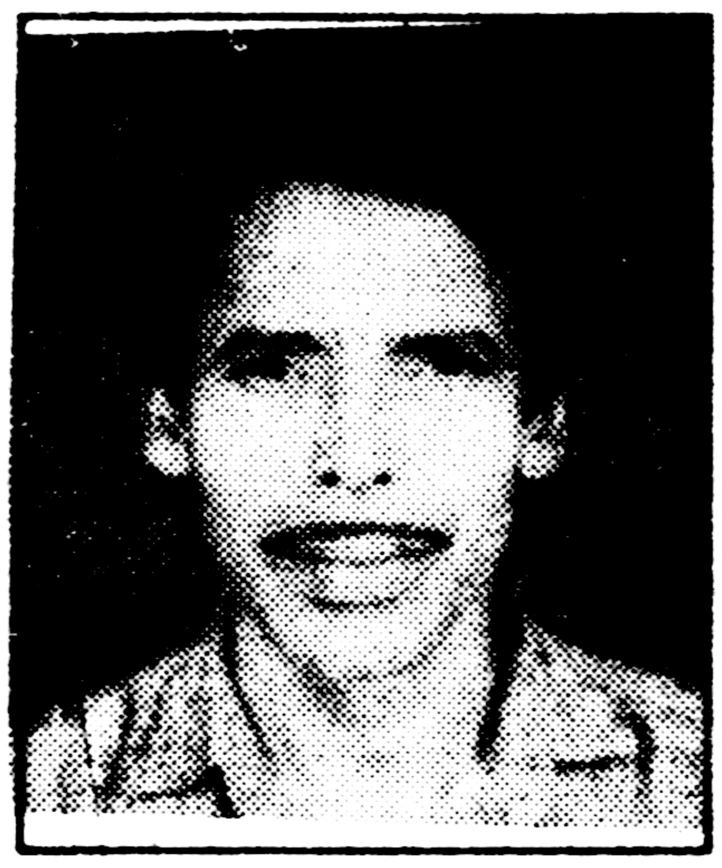
चल रे मोर छत्तीसगढ़ के पुतरा तय चल ।
कावर लजाथस तंय ह, इतरा के चल ।।

सवके वनगे ठउर ठांव अउ
सवके वसे वसेरा
तोरो दुवारी हांसत आही
कुलकत दिया दसेरा ।
तोर हंसइया तोला निहारंय, विजरा के चल ।

वलदाऊ के करम भूमि ए
राम-स्याम के धरम धाम,
चल तो रे सवरी के वेट।
ऊंचा कर माटी के नाव ।
चल वघनीनी के पीलवा, सोरा-सतरा वन चल ।

नइ हस कोनो ले कमती वावू
नइ हस अवूझअजान
वल वइंहा वजरंगी हे तोर
वुध के अवल सूजान ।
कलं-वल ल मिंझरा के संगे, संभरा के चल ।

करम के कुरता परन के पागा
किरिया के कुदरा ल धर
लड़ा दे लोहा-जांगर जोधा
सोने-सोन म कोठी भर ।
वोझा वोहे पहार, छाती पखरा के चल ।
चल रे मोर छत्तीसगढ़ के पुतरा तंय चल ।।



शिवरतन शांतर

जन्म - ०१-०१-१९५२ आमापुरा (दुर्ग)
शिक्षा - प्राथमिक उत्तीर्ण
उप. - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में निरंतर रचनाएं प्रकाशित । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी रचनाएं प्रसारित । एक लम्बे अरसे से परमानंद भजन मंडली से संलग्न।
पता - वार्ड नं. ३३, बजरंग नगर, दुर्ग

छत्तीसगढ़ी भजन

जान ले संगी पांच चक्कर वट पार है
जनम मरन के चकरम ला निहार ले
जान ले संगी ..

पांच चक्र मां सुध खेल गंवाये
मोर मोर कहि तें नित गाये
उधारी के काया माया, आत्मा संग विचार ले
जान ले संगी ...

पहिली चक्र मा जी धन वल पाये
दूसर चक्र हा कामला जगाये
तिसरे मोह चौथे अहम हे, पांचवे लेत रस लार हे,
जान ले संगी ..

अरपन करदे तन के गुन धरम ला
साध ले मितवा मानुस के करम ला
गुरु सिखावन नोहर हे जोनी
परमात्मा सत हे जोहार ले ।



श्रीमति माधुरीकर

जन्म - ३१-०५-१९५२, खम्हारपाली (रायपुर)
शिक्षा - मिडिल
उप. - राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर के पत्र पत्रिकाओं में लेख एवं कविताओं का प्रकाशन । आकाशवाणी से कहानी, चिंतन का प्रसारण ।
पता - महंत तालाब के पूर्व कोटा, रायपुर (म.प्र.)

आबादी कम करौ, रुख राई लगावौ

तरिया के पार मा
एको ठन रुख राई नइ ए
गांव मा लइका-पिचका मन

गाय-गोरु कस खरखा खोरी जोरियाथैं
दाई ददा आस रखिन हैं
मोर लइका मोला कमा के खवाही

फेर लइका ह अपन पेट ल भरे नइ सकिस
त दूसर ला का खवाही
डारा पाना के तो वाते ला छोड़

अव तो घास विना धरती माई ह दुवरात जाते हे
आवादी कम नइ होही
त कुछु साल मा हवा वर घलो रासन कारड वनाय वर परही

आक्सीजन के सलिंडर घलो पीठ मा लाद के चले वर परही
डोकरी दाई ववा आस करे हे
नाती-पोती मन ला खेलावो

ओ मन तुंहर खेलौना नो हे
ओमन ल जिए के रद्दा वतावौ
एक घर मा एक झिन लइका
पांच ठन रुख राई लगावौ
दीदी मन आवादी ला कम करौ
भैया मन रुख राई मन ला वढ़ावौ
अकाल-दुकाल कभू नइ होय
सुख के वंसी वजावौ ।



भगत साहू

जन्म - ३-६-१९५२ रायपुर
शिक्षा - मिडिल
उप - आकाशवाणी तथा दूरदर्शन में लगभग आठ वर्षों से गायन, वीनस, टी सीरिज, तथा शालीमार कंपनियों से लगभग पांच आडियो कैसेट बाजार में उपलब्ध । मोंगरा मितान सांस्कृतिक संस्था के अध्यक्ष
पता - शक्ति नगर टी०वी० टावर के पास, रायपुर म०प्र०

धरती वन्दना

तोला पहिली सुमिरौ हो धरती मैया ।
तोला पहिली सुमिरौ हो भारत भुइयां

जय हो धरती मैया, जय हो भारत भुइंया
जय हो सोन चिरैया, जय हो शीतल छईया ।

तोर कोरा मा जनम धरीस हे, धन वो महात्मा गांधी
पराधीन सपना सुख नाही, कहिके चलाईस आंधी

तोर दया से धरती मैया पायेन हम आजादी
तोर कोरा म प्राण ला तेजीन, कतको शहीद कहाईन

अपन वतन के खातिर मैया लहू के तिलक लगाईन
वो आजाद अऊ भगतसिंग मन अमर नाम ला पाईन
तोर सेवा म तन मन लगाके अड़े हे वंदूक नागर
लहू पसीना एक वनावो कभू थके नई जांगर

जय जवान अउ जय किसान के नाम ला करवो उजागर
श्रद्धा के फूल भाव के आरती, घर के आयेन शरन म

मोंगरा मितान निशदिन तोरा, लगे हवे पूजन म
दे आशीष दे धरती मैया, भारत वड़े हे करम म ।।



राममोहन दीवान

जन्म - ०१-०९-१९५२ रायपुर
शिक्षा - स्नातकोत्तर
उप - १९७२ से लगातार आकाशवाणी तथा दूरदर्शन रायपुर से गीत, कविता, कहानी, प्रहसन, नाटक, चिन्तन का प्रसारण । वीडियो फिल्म लेड़गा ममा, अधर्मी, देवता, सोना के वापसी, गोदना, में गीत लेखन, संवाद, पटकथा तथा निर्देशन ।
पता - पुरानी बस्ती बनियापारा, रायपुर

मोर गंवई हे गंगा

गांव म गोकुल गांव म मथुरा, गांव म तीरथ धाम
मोर गंवई ये गंगा जइसन, करंव परनाम

गांव म जनम लेहें वड़े महापुरुष अऊ ज्ञानी
गंवई ले जग ल मिले हवे, रिसी मुनि अऊ ध्यानी
गांव के भुंया सरग जइसन, एकर नइये दाम
मोर गंवई ------

गांव के मनखे कर तेंहा, छल कपट नंइ पावे
सीता राम के जोड़ी मिलही, जऊन गली तैं जावे
नारी में राधा के दरस होवय, नर में होए स्याम
मोर गंवई ---

सेज पलंगे अऊ दसना, धरती दाई के कोरा ए
सादा जिनगी गंवइहा बर, फागुन अऊ पोरा ए
रोज निकल के आसिस देवय, गंवइहा ल घाम
मोर गंवई ----

गजब़ मयारुक गांव के माटी, जग ल येहा पोंसे
कतको दुख ल सहि के भइया पेट के आंसू पोंछे
राम मोहन के ये भुंइया ए, जगत म महान
मोर गंवई ----



आशा दुबे

जन्म - २५-२-१९५३ धमतरी

शिक्षा - एम ए (संस्कृत, हिन्दी, समाजशास्त्र) बी०एड०

प्रकृ - गांव की गंगा (कहानी) आखर पांखी (काव्य संग्रह) अभियान गीत (काव्य संग्रह)

उप - मेरी सहेली नई दिल्ली सहित अंचल के अधिकांश पत्र पत्रिकाओं में गीत लेख, कविताओं का लगातार प्रकाशन । राज्य संसाधन केन्द्र प्रौढ़ शिक्षा मप्र एवं जिला साक्षरता समिति रायपुर तथा दुर्ग से बनी आडियो कैसेट में लिखे गीतों का समावेश । प्रेरणा साहित्य समिति बालोद के अध्यक्ष ।

पता - ब्लाक कालोनी, सिविल लाईन, बालोद, जिला-दुर्ग म०प्र०

गीत

का सांग रांधे भउजी
मिर्चा पताल
ए कनौजी में का हावे
भाजी चना दार
उहीच उही चटनी
अऊ भाजी चनादार
का साग -----

नोनी वो ननदिया
तै छिनमिन वड़करथस
कुछु रांधो परसो
तै रिसेंच अव्वड़ करथस
साग भाजी हरियर में
हावे गुन हजार
उही उही चटनी अउ --

लाल भाजी खोंटनी
चौलाई अमारी
चेंच भाजी पालक
सेवाह में वड़ भारी
पेट हरु राखे खाये में मजेदार
का साग रांधे ----

मूंग राहेर उरीद
चना-मसरी वटुरा
देह टांठ राखे

ए जाने सवो चतुरा
दांत हड्डी चमचम ले राखे सबोदार
का साग रांधे -----

सेमी कुंदरु खेकसी
करेला रमकेरिया
आलू संग वरवट्टी

पपिता तरोइया
दांत हड्डी मन वर ये
हावे सवो सार
का साग रांधे भउजी

खाले कच्चा आमा
लिमऊ अंवरा अम्मठ ।
पीस ले करौंदा के
चटनी ला चटपट
मुंह ला पंछार
का साग ----

मोला खाये वर दे भऊजी
ले वासी ला निकाल ।
मलिया मं दे भाजी
अऊ चटनी मजेदार
खाले मोर नंनदिया
मैं रांधे हव वोहार
का साग ----



लक्ष्मीनारायण
कुम्भकार "सचेत"

जन्म - ०१-०१-१९५५ दुर्ग (छत्तीसगढ़)
प्र.कृ. - माटी कहे कुम्हार से हिन्दी काव्य संग्रह ।
उप. - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में सतत लेखन ।
पता - लुचकीपारा, दुर्ग

ये जिनगी

चट क चंदेनी मा चार दिन के
मोर मन वईहा झन इतरावे रे ।
ये जिनगी हा अवड़ हे नोहर
समझ वूझ कें पांव मड़ावे रे ।।

जनम ला धरके भरम मा परगे
माया मोह मा तैहा अरझगे
ऐ ठुठुवा डेना के पंछी
पांख आही ता तैं उड़जावे रे ।।

रुप धन, यौवन मिट जाही
अटारी गरव के माटी मिल जाही
करम हा सांचा मितवा हे संगी
जईसे करवे तईसे पावे रे ।।

जग मा तोर कोनो नईहे मितवा
तहीं हा अपन वईरी अउ हितवा
दुख के वगिया ले सुखला विनले
नहीं ते पाछू तै पछतावे रे ।।

वो जग हा तोर सव कुछ आय
ये जगहा तो वर हे सराय
सचेत तै पहुना दू दिन के
हांथ पसारे तै फेर जावे रे ।।



लाल जी राकेश

जन्म - १८-०३-१९५५ खरौद (शिवरीनारायण)
उप. - विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । कोरबा -तोवरा में सह संपादन का कार्य
पता - कोरबा, जिला-बिलासपुर (म.प्र.)

उलुव्हा सपना

हाय रे ! मोर उलुव्हा सपना कइसे अइलागे
सुख वैरी पलहरा होगे, दुख हर वउछागे ।
रोज रोज आंखी म पलोये
बिन ढेंखरा के मन म वोये
दु कुर दु कुर रतिहा ल होरे
होवत बिहीनियां सुरुज अगोरे

आस किरन म वइठे सगरो दिन हर पहागे ।
हाय रे ! मोर उलुव्हा सपना कइसे अइलागे
सुख दुख के संगी मोर सपना
नींद हवै वैरी अनदेखना
वइहर ल मैं तन म झोले
भाग रेख मा वांधें तभोले

करम के हांड़ी ल कइसे बूंद बूंद चुचुवागे
हाय रे ! मोर उलुव्हा सपना कइसे अइलागे
जोर जोर सुरता के तगाड़ी
हांकत हौं गिरहस्ती के गाड़ी
सांझ विहीनियां आठो पहर
बस चार आंगुर के पेट भरे बर

मन हर वइला बनगे, तन नागर कस फंदागे ।
हाय रे ! मोर उलुव्हा सपना कइसे अइलागे ।


पीसी लाल यादव

जन्म - ०९-०६-१९५५, टिकरीपारा गंडई
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी)
उप. - विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में गीत-कविताएं कहानी व लेख प्रकाशित व आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित । शिक्षक पद पर प्रा.शा. गोकला (गंडई) में कार्यरत ।
पता - गंडई पंडरिया, जिला राजनांदगांव

चंदा चम चम चमके

चंदा चम-चम चमके, चंदैनी संग अगास म ।
जिनगी जस बिरबिट रतिहा, पहावे तोर आस म ।।

देखाये के होतिस त,
करेजा चान देखातेंव ।

पीरा के मोट रा बांध,
तोर हाथ म धरातेंव ।।
डोमी कस गुंडरी मारे, पीरा बसे हे सांस म ।
जिनगी जस बिरबिट रतिहा पहावे तोर आस म ।।

जिगनी के धारन म मैं,
बांधेव तन के खइलर ।

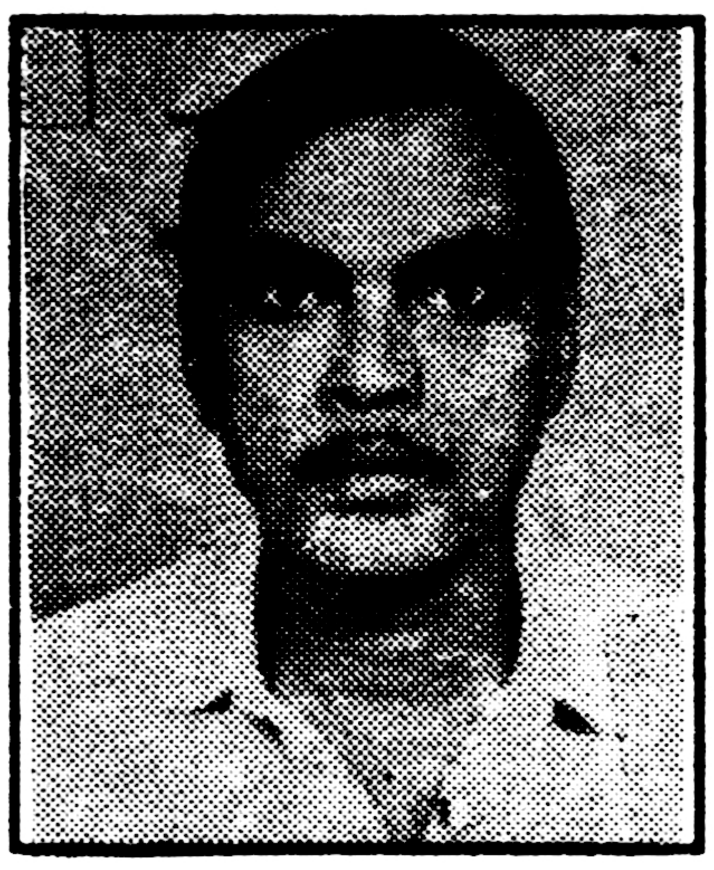
आस ल मथेंव तभो
नई पायेंव लेवना बूंद भर ।।

जिनगी ल हार डरेवं, मया पीरित के तास म ।
जिनगी जस बिरबिट रतिहा, पहावे तोर आस म ।।

अंगरी चपकागे पथरा तरी,
तीरत बनै न उठावत ।

तोला दे के मन ल अब,
रोवत बनै न हांसत ।।

उकुल-बुकुल होगे जीवरा, बैरी मया के फांस म ।
जिनगी जस बिरबिट रतिहा, पहावे तोर आस म ।।



सुशील यदु

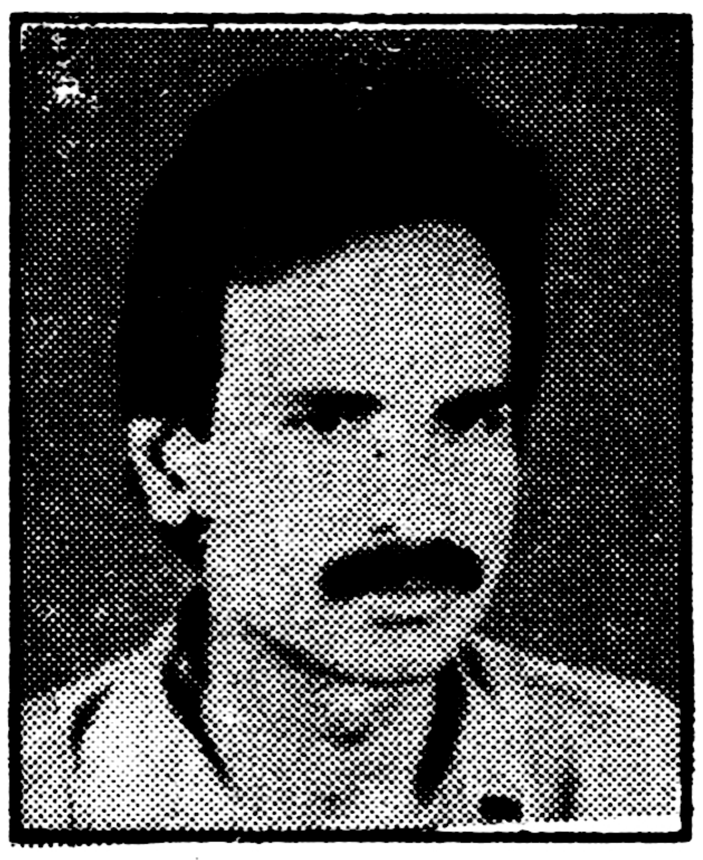
जन्म - १०-०२-१९५६ रायपुर,
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी), प्र.कृ. छत्तीसगढ़ के सुराजी वीर
उप. - हेमनाथ यदु व्यक्तित्व कृतित्व, बनफुलवा, पिवरी लिखे तोर भाग , हपट परे तो हर गंगे, बगरे मोती का संपादन । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के साथ साथ अंचल के प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में प्रसारण तथा प्रकाशन । छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति के संस्थापक, अध्यक्ष
पता - ३१ह्न२७२ ब्राम्हणपारा, रायपुर

छत्तीसगढ़ के भुइंया बनगे चारागाह हे

धान कटोरा रीता होगे कहां होही थिरवांह हे ।
छत्तीसगढ़ के पावन भूइया बनगे चारागाह हे ।

वाहिर ले गोल्लर मन आके, ओइल गइन छत्तीसगढ़ मा ।
रौंद रौंद के गौंदन कर दिस, भूकरत हे छत्तीसगढ़ मा ।
खेत उजरगे जमीन बेचागे खुलिस मिल कारखाना हे ।
छत्तीसगढ़िया के किस्मत मा दर दर ठोकर खाना हे ।
हमर खनिज ला चोरा चोरा के डोहारत हे चोरहा मन ।
जंगल ला सब काट काटके भरे तिजोरी ढोरहा मन ।
इंहा के पइसा हा बंट जाथे दिल्ली अउ भोपाल हे ।
जुर मिलके सब नीछत हावै छत्तीसगढ़ के खाल हे ।
शोसन के चक्की ह निस दिन चलत हे बारो मास हे
छत्तीसगढ़ के पावन भूईया बनगे चारागाह हे ।

कहां उड़ागे सोन चिरइया, कहां गे धान कटोरा हे ।
गांव गांव म होत पलायन, परे पेट मा फोरा हे ।
छत्तीसगढ़ मा लूट मचे हे, हमर उजरगे कुंदरा हे ।
अपने धरती में हम होगेन कइसे आज बसुंधरा हे ।
शोसन साहत कनिहा टूटगे फटे पाव बेवाई हे ।
पेट चटक पोचवा परगे चेहरा परगे झाई हे ।
सरे आम हमरे इज्जत के होवत हवै नीलामी हे ।
छत्तीसगढ़ ह भोगत हावै अइसन घोर गुलामी हे ।
छत्तीसगढ़ महतारी के अव करे कौन परवाह हे ।
छत्तीसगढ़ के पावन भूइंया बनगे चारागाह हे ।



शीतल प्रसाद शर्मा

जन्म - १२-०१-१९५६ ग्राम ओड़िया (दुर्ग)
शिक्षा - एम.ए.(संस्कृत) बी.एड. आयुर्वेद रत्न
उप. - आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के नाटकों में अभिनय, लेखन तथा निर्देशन । अखिल भारतीय संस्कृत वाद विवाद प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान । चर्चित नाटक "विधायक के कुकुर" सहित लगभग दस हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ नाटक में अभिनय तथा निर्देशन ।
पता - सुभाष नगर, दूधाधारी मंदिर के पास, रायपुर (छत्तीसगढ़)

शीतल के दोहा

नीति

बिन मांगे पानी देथे, बादर के सुभाव
फोकट म दुसर बर, संत खाथे घाव
रौंद रौंद के माटी दिया बनावय कुम्हार
तभो ले दिया भट्ठी म चढ़ते त होथे दिया तियार
चन्दा सुरज घलो समय म हे बंधाय
समय सबले बलवान, हरिशचन्द्र ल डोम बनाय

आयुर्वेद

बेरा चढ़त ले सुतइया, अपनी गर्मी ल छरियाये
उही गर्मी माथा पीठ, पेट , बात पीरा उपजाय ।
चैत बैशाख म आमा, अग्घन पूस बिही ।
सावन भादो थोरकिन खवइया, अब्बड़ दिन जीही ।
खाली पेट म पानी, भरे पेट म अन्न
कभू झन खाही भइया, बिगड़ जहीं तन

श्रृंगार

भरे हउला बोहे, पानी चुचवावत हे ।
गोरी के देह वोखर उमर ल बतावत हे ।
लम्बा चुंदि के छोकरी, आंखी घुमावत जाय
देखे तौनो पछताय, नई देखय तौन पछताय
सोलहसाल म सुरा घलो सुन्दर दीखथे
मया के नइय परिभाषा, सब अपने अपन सीखथे
चेहरा महे चन्दा, आखी हे कमल फूल ।
कनिहा म हे नंदिया, रेंगना झूलना के झूल ।



रघुवीर सिंह घृतलहरे

जन्म - ०५-०७-१९५६ वार्ड कोटा (रायपुर)
शिक्षा - एम. ए. (हिन्दी) बी.एड. एल.एल.बी.
प्र.कृ. - घासीदास भजन
उप. - लिखे गीतों का एक आडियो कैसेट के रूप में प्रसारण।
पता - ग्राम -कोट , रायपुर

भासन

भासन ले मिलथे आसन
आसन के मतलब शासन
अउ शासन ले मिलथे भैया
घर, कपड़ा अउ रासन ।
भासन देके सी.एम. बनजा,
भासन देके पी.एम.
कलेक्टर-कमिश्नर अफसर
मुट्ठी मं रइथे जी.एम.
परजातंतर मं होथे भैया ..
जनता मनके शासन

जानवर वोला कइथे
जोन बोल नई सकय जी
पथरा वोला कइथे
जोन डोल नई सकय जी,
भासन देके जीत सकत हे
इनसान, इन्दरासन

जीये बर हे सुख-सम्मान से
भासन देबर सीखौ
राज-पाठ लेना हवय त
भासन देबर सीखौ
जानौ का हे नियम कानून,
अउ जानौ अनुशासन
भासन ले मिलथे आसन



श्रीमति दीप दुर्गवी

जन्म - ०३-११-१९५६
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी)
उप. - अंचल के लगभग सभी पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। विभिन्न कवि गोष्ठियों एवं सम्मेलनों में हिस्सेदारी । वर्तमान में शैक्षणिक कार्य ।
पता - आई.टी.आई. कोरबा (बिलासपुर)

सुरुज के मती छरियागे

चढ़के सरग निसेनी सुरुज के मती छरियागे ।
हाय रे ! रद्दा रेंगइया के पांव घलो ललियागे ।

ठाढ़े हावै मंझनियां संकलाये रे गरुआ, अमरइया तरी ।
हर हर डोलत हे पीपर धुंकत हे रे बइहर घेरी बेरी ।
दुड़गा ठाढ़े हे बंबरी पाना मन सबो मुरझागे । हाय रे रद्दा ...

भरे तरिया अटागे रे कइसे थिरागे, बोहवत नरवा ।
बिन पानी के चटका बरत हे मनखे, मनके तरुवा ।
नदिया धार घलो आके मंझधार मा संकलागे । हाय रे रद्दा ......

धरके रांपा कुदारी खनत हावै माटी ल किसान हर ।
बोहे झउंहा किसानीन देवत हे ढेलवानी रे, मेढ़ ऊपर
मिहनत बनके पसीना माथा ले बोहावन लागे । हायरे रद्दा ....

कहे भउजी कइसे जावौ तरिया रेंगत, मै जरै भोंभरा
पानी नइये खवइया बर रीता परे हे जमो गघरा
ढरके कबले रे बेरा हर झट कुन कइसे रतियागे । हाय रे रद्दा ....

नइ सुनावै अब कोइली के तान हर आमा के डारा मा ना
गुंजत रहिये रे झेंगुरा मंझनिया भर खार अउ ब्यारा माना
लागै कबले आषाढ़ रे भुइयां गजब अकुलागे । हाय रे रद्दा ....



श्रीमति अर्चना पाठक

जन्म - ०१-०१-१९५८ रायपुर (छत्तीसगढ़)
शिक्षा - एम.एस.सी. (वनस्पति शास्त्र) चित्रकला इंट रमीडियेट ग्रेड, संगीत गायन उत्तीर्ण, आयुर्वेद रत्न ।
उप. - कविता कहानी लेख, एकांकी, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित। साहित्यिक संस्था ऋचा एवं साकार सृजन से सबद्ध । शारदा संगीत कला मंदिर का संचालन ।
पता - पाठ सुंदर नगर, रायपुर

सपना

नदिया के तीर मा, लीम के छैंहा मा,
झूलथे सपना हो

पंछी परेवा कस, फुदुक फुदुक सपना
डोंगरी ले पांखी पसारत सपना

अमराई, बारी मा, कुकत सपना
परसा के फूल अइसन, चटक रंग सपना

आमा के डारी मा, मौर मौरा गे
महकावथे सपना हो

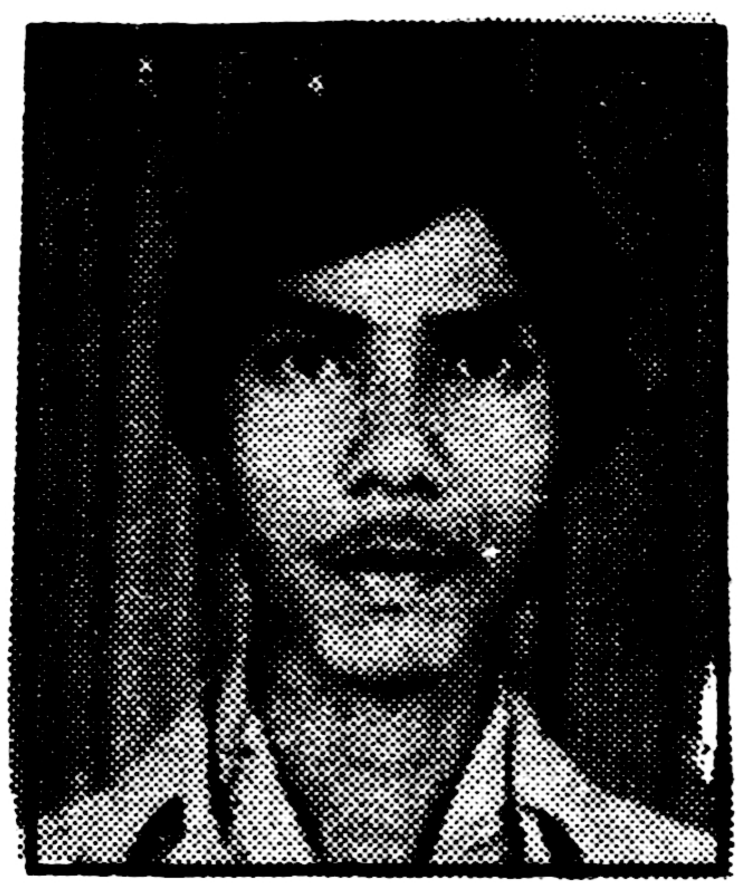
नदिया के ....

सोंध सोंध माटी के गंध असन सपना
बदरा संग बूंद मा छरियावत सपना

धरती के अंचरा कस हरियर सपना
लहलहात सोन अइसन, धान के सपना

खेत अऊ बारी मा, लीम के डारी मा
उलहथे सपना हो ......

नदिया के तीर ......



हफीज कुरैशी

जन्म - ०३-०५-१९५८ अकलतरा (बिलासपुर)
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी) बी.टी., एल.एल.बी.,
प्र.कृ. - अंतस के आगी
उप. - सन् १९७५ से लगातार अंचल के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, नाटक, निबंध प्रकाशित । स्थानीक समाचार पत्र समवेत शिखर में मुसलेड़ी स्तंभ के रूप में व्यंग्य लेख दो साल तक लगातार प्रकाशित । आकाशवाणी रायपुर एवं बिलासपुर से कविता पाठ का प्रसारण ।
पता - हफीज कुरैशी शिक्षक अकलतरा, जिला-बिलासपुर

रास्ट गीत

वढ़े चलव, बढ़े चलव, कदम कदम बढ़े चलव ।
देश के निरमान बर, नवां रवन गढ़े चलव ।।

जात-पांत, भेद-भाव, ऊंच नीच मेटाना हे ।
गंगा जमुना मया के, हिरदे मा बोहाना हे ।।

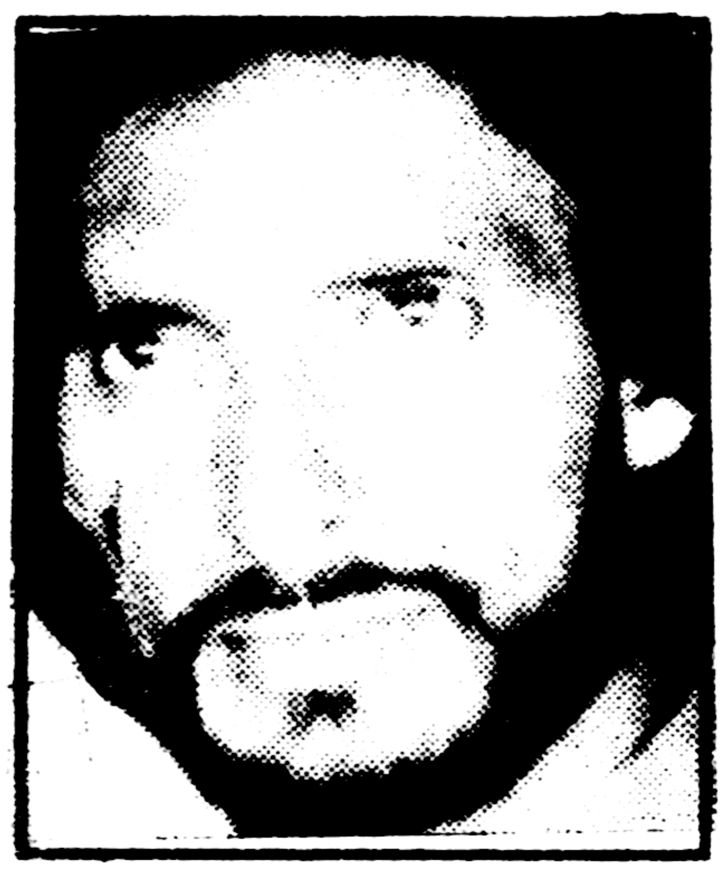
एकता के पाठ ला फेर तूंमन पढ़े चल ।
बढ़े चलव, बढ़े चलव, कदम कदम बढ़े चलव ।

अलगाववाद, भाषावाद, मूंड़ अपन उठात हे ।
आतंकवाद हिंसा अऊ दहसत बगरात हे ।।

भस्टाचारी रकसा के, छाती मा चढ़े चलव ।
वढ़े चलव, बढ़े चलव, कदम कदम बढ़े चलव ।

भूख, गरीबी, बेकारी, पहार बनके बाढ़े हे ।
मंहगाई अऊ जनसइखा, डंग डंग ले बाढ़े हे ।।

समाज के कुरीति सो, दम लगा लड़े चलव ।।
बढ़े चलव, बढ़े चलव, कदम कदम बढ़े चलव ।



सलाम ईरानी

जन्म - ०६-०६-१९५८ धमतरी (रायपुर)

उप० - आज का आदमी, स्वर्ण वृक्ष, जय मां बम्बलेश्वरी, बंसी, गोंदना आदि छत्तीसगढ़ी तथा हिन्दी फिल्मों के साथ साथ अंचल के लगभग दस नाटकों में गीत संगीत तथा अभिनय । लगभग आधा दर्जन फिल्मों में पटकथा तथा संवाद लेखन ।

पता - रविनगर, ईरानी ईमाम बाज, रजातालाब (पंडरी) रायपुर

जसगीत

जय जय जय हो माता, जय हो जय हो माता
माता बम्लेश्वरी तोर महिमा अपरंपार हे जगमा

तोर सरन म जेहर आथे सोये भाग ला अपन जगाथे
निर्धन अव धनवान सबोझिन द्वार मा तोरे सीस नवाथे
जे मनखे हर द्वार मा आथे ओखर बिगड़ी हा बनजाथे
जेती देखेव ओती तोर मया के हाथ भंडार हे जगमा

सुंदर मुकुट हा मुड़मा साझे, चंदा जस तोर रुपहा लागे
धनूस अव तिरसुल, चक्र गदा अव तोर संग मइय्या वाघ विराजे
जेव जेव जगमग जोत जले हे सरग असन मंदिर हा लागे
डोंगरगढ़ के पहाड़ी मा मइय्या तोर दरवार हे जगमा

संतोषी दुर्गा महा काली सारदा अम्बे सबो मन भाये
सवरी जगत मा मनखे हा जाने सबके रुप हा तोर मा समाये
हे महासक्ती वम्लर माता तोर जगत मा सबो गुन गाये
युग युग ले सदा तोर नाव के जय जय कार हे जगमा


वलराम शर्मा

जन्म - १५-०७-१९५८ रायपुर

उप - अंचल सहित अखिल भारतीय स्तर के अधिकांश पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी कविता पाठ का प्रसारण । विभिन्न कवि सम्मेलनों एवं गोष्ठियों में सक्रिय भागीदारी ।

पता - कला मंदिर बैजनाथ पारा, रायपुर

मनुखमार

गुरुजी हा
कक्षा में
लइका मन ला
पूछथे
कसरे शहर अउ जंगल में का फरक होथे ।
तब ले दे के एक झन लइका हा खड़ा होथे
अउ कइथे
कुछु फरक नई ये गुरुजी
आज काल
आदमी ल खवइया
मनुखमार दुनों जगा मिलथे
लेकिन काहे
जंगल के मनुखमार हा
एकेच वेर में अपन
शिकार ल मार के खा लेथे
अउ शहर के हा
खाथे कम खराव
ज्यादा कर थे
सोच वो तव
इही शहर अऊ जंगल में
फरक घलव होथे
अऊ का हे दुनो जगा
के मनुखमार ला मारे के मना हे
हमर देश के कानून मा
कावर कि ये मन
हमर देश के सम्पत्ति हे ।



सदाराम सिन्हा
"स्नेही"

जन्म - ०८-१२-१९५८, देवभोग (रायपुर)
शिक्षा - स्नातक
उप. - आकाशवाणी रायपुर के अनुबंधित गीतकार, आकाशवाणी रायपुर से २८ गीतों का कविता पाठ के रुप में गायन । म.प्र. सहित छत्तीसगढ़ के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के लिए कविता लेखन । कलार समाज छत्तीसगढ़ स्तर के प्रचार मंत्री ।
पता - मु.पो. देवभोग, जिला-रायपुर

रोवथे सुराज

अंगना अंगना डेहरी डेहरी रोवथे सुराज ।
रूक तरी छइहा म बइठे रोवथे सुराज ।।
जब ले आगे हे सत्ता म कुर्सी के राज ।
चारो मुड़ा दिखत हावै जुल्मी दगाबाज ।।

सिधवा विचारा धंधागे फोकट जेल म ।
चातुर चोला फंसगे सोइझे खेल म ।
सतवादी के मुड़ म गिरगे अकरस गाज ।१।

दाता भिखारी बनगे निक करनी करके ।
पर खाता साव बनगे ठलहा बइठ के ।
नेकी पछतावत हे करनी करके आज ।२।

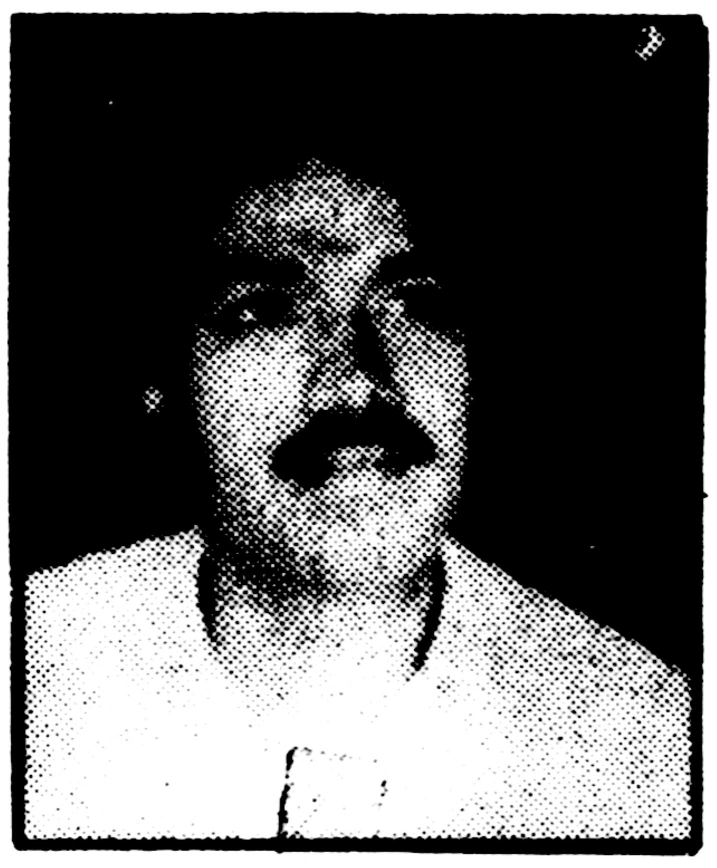
चमचा के चक्कर म अब जनता चकरागे ।
नेता के भाषण म विकास के रसदा बोजागे ।
नोट के परताप म वोट सकेलत हे आज ।३।

किसान के चीज ह बेचावत हे बेमोल ।
बेपारी के जिनीस होगे निक अमोल ।।
धन के लोभ म मनखे बन गेहे बाज ।४।

आफिस म बइठे हे राजा बनके अधिकारी ।
बिन पइसा काम कभु नई बने सरकारी ।।
बंगला वाला कंगला ल कहत हे दगाबाज ।५।

सन्सो म स्वांशा के सोत सुखावत हे ।
करजा छुटत सुख के उमर नंदावत हे ।
जवानी ढरकगे बंधुवा मजदूरी करत आज ।६।

आरक्षण के बाना म बुद्धि होगे बदनाम ।
घोड़ा के दउड़ म गदहा ल मिलगे इनाम ।।
जेखरे ज्यादा मत होगे ओखरे हे राज ।७।



मंगत रवीन्द्र

जन्म - ०४-०४-१९५९ कापन (अकलतरा)
शिक्षा - एम.ए. हिन्दी
प्र.कृ. - नवरात्रि गीत (छत्तीसगढ़ी) दोहा मंजूषा (हिन्दी) एवं छत्तीसगढ़ी व्याकरण ।
उप. - सरग निसेनी छत्तीसगढ़ी लोक नृत्य, गीत संस्था का संचालक एवं प्रमुख गायक आकाशवाणी तथा विभिन्न समाचार पत्रों में भी भागीदारी । शासकीय हाई स्कूल कापन में पदस्थ ।

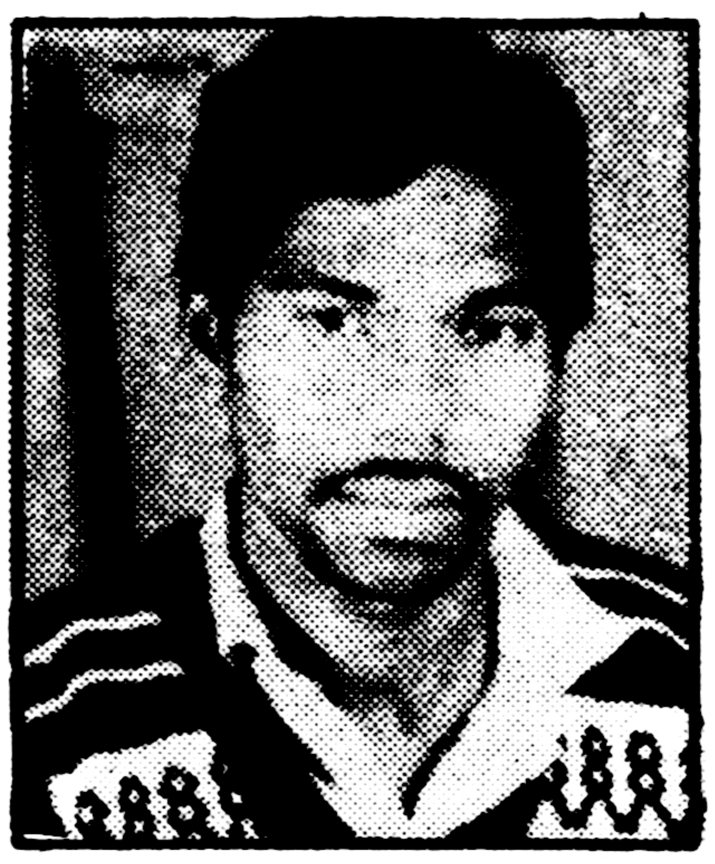
शान

कलम कुदारी नागर बइला, छत्तीसगढ़ के शान रे ।
कवि किसान मोर मितान, वीर सिपाही जवान रे ।।

फुदका म उण्डै इहां के लइका, खेलैं भौंरा वांटी ।
सोना उगलै खेत-खेत म, इहां के खतुहर माटी ।।
नारी के सिन्दूर मांग के लपकै, पागा पुरुष पहचान रे
कवि किसान ....

तरिया उगलै अमृत पानी, नदिया शक्कर घोरै ।
बिरिछ के थांही मोती अरछे, चिड़िया अण्डा पारै ।।
पर्वत मन रखवारी म ठाढ़े, संझा अऊ विहान रे
कवि किसान ....

गाड़ा ढुलै खार-खार म, ओन्हारी भर-भर लाथे ।
मुटि यारी के विछिया पैरी,, चंदा अस मुसकाथे ।।
मेला-मड़ाई करमा फगुवा होरी छेरछेरा तिहार रे
कवि किसान ....



गणेश विश्वकर्मा

जन्म - ०१-०१-१९६० ग्राम खरोला (अकलतरा)
शिक्षा - मिडिल पास
उप. - अंचल के पत्र पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन, आकाशवाणी रायपुर तथा बिलासपुर से भी प्रसारण।
पता - गणेश विश्वकर्मा टेलर, शास्त्री चौक, अकलतरा, बिलासपुर ।

छत्तीसगढ़ के माटी म सोन गड़े हे

खेत के कमईया तोर भाग बड़े हे
छत्तीसगढ़ के माटी म सोन गड़े हे

बरसत पानी म, तय खेत ल कमाये
गरजत लहुकत ल तय कभू नई डराये
तोर रक्षा करइया, भगवान खड़े हे
छत्तीसगढ़ के माटी म सोन गड़े हे

तन ह सुखाये तोर, दिखे हाड़ा हाड़ा
अन्न ल उपजा के, सबके मूह म डारे चारा
धन हे ग किसान तोर, उपकार बड़े हे,
छत्तीसगढ़ के माटी म सोन गड़े हे

बड़े बड़े से बड़े बाबू भईया
गरीब किसान के नइये ग सुनइया
वोट बर बड़े बड़े नेता खड़े हे,
छत्तीसगढ़ के माटी म सोन गड़े हे ।



डा. कुंजविहारी शर्मा

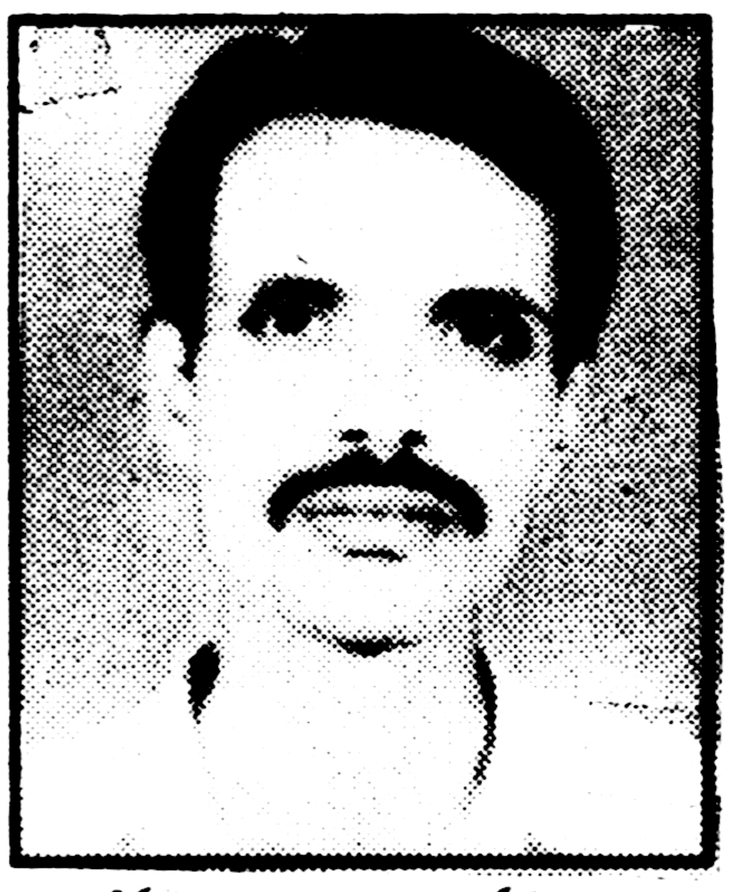
जन्म - ०३-०४-१९६०, शिक्षा एम.ए. पी.एच.डी. (राजनीति विज्ञान)

उप. - पिछले पंद्रह वर्षों से सक्रिय रंगकर्म । अनेक पत्र पत्रिकाओं में कला संस्कृति पर आलेख, समीक्षाए, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के स्वीकृत प्रस्तुतकर्ता कलाकार । शासकीय महाविद्यालय भिलाई ३ में सहायक प्राध्यापक के रुप में शैक्षणिक कार्य सांस्कृतिक संस्था रुपक के संस्थापक, निर्देशक ।

पता - कमासी पारा, रायपुर

सृष्टि

सृष्टि नाव नो हय भूगोल के
सृष्टि नाव नो हय जनसंख्या के
सृष्टि नाव नो हय सत्ता के
सृष्टि नाव नो हय सरकार के
सृष्टि नाव आय प्रेम के
नाव आय बंधना के
नाव आय इंसानियत के
नाव आय सभ्यता के


चंद्रिका मढरिया

जन्म - ०१-०१-१९६१ महका खुर्द (उतई)
उप. - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित । छत्तीसगढ़ के विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से संलग्न ।
पता - ग्राम महका खुर्द (उतई) पोस्ट पहडोर, जिला-दुर्ग

जे माटी के तिलक लगाही

घाम जाड़ बरसात मं उघरा-उखरा जांगर रंग बोहाही
ये माटी वोकरे संग देही जे माटी के तिलक लगाही

भरे जवानी गजभर छाती कुरिया मं खुसरे चुपरत तेल
करवट लेवइ घलो जियानै ले दे के पेल ढपेल
आज नहीं ते काल नहीं ते परसों खचित वो बोजाही

ता-ता थइय्या ले बल बइहां खार पछीना अंग ल धोले
महका के महर-महर मुलुक सरी समाज समोले
देख तहां माटी संग खेले फेर कइसे कोनो हाथ लजाही ।

जबाना के हवा बदलगे लोहा ल काट त अब लोहा
कुंभकरन नइ अलथे कलथे कतको पार ले सुख्खा दोहा
जांगर चोर जगाएं छेंके परही फोकट के बरवाही ।

पोथी के भरोसा बइठे मुरचा के जांगर ह कानी
मिहनत जांगर तोर धरम ये दिन बादर बरसहीच पानी
तोर संग नहीं ते अउ काकर संग इंद्रदेव खेलही हरदाही ।

हरियर हरियर सोनहा सोनहां खार खेत अन धन ओनहारी
रंग बिरंग फूल फर लदाए अइसन काकर मेर फुलवारी
चर चर भोंभरा बरसत अंगरा तभो सुरुज ल जे बिजराही ।



राजेश चौहान

जन्म - ०१-०१-१९६१ ग्राम बेलगहना (बिलासपुर)

उप. - अंचल के विभिन्न पत्रपत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन। सांस्कृतिक संस्था मया के मोटरी के संचालक ।

पता - बेलगहना, जिला-बिलासपुर

अब तो बिरान होगे

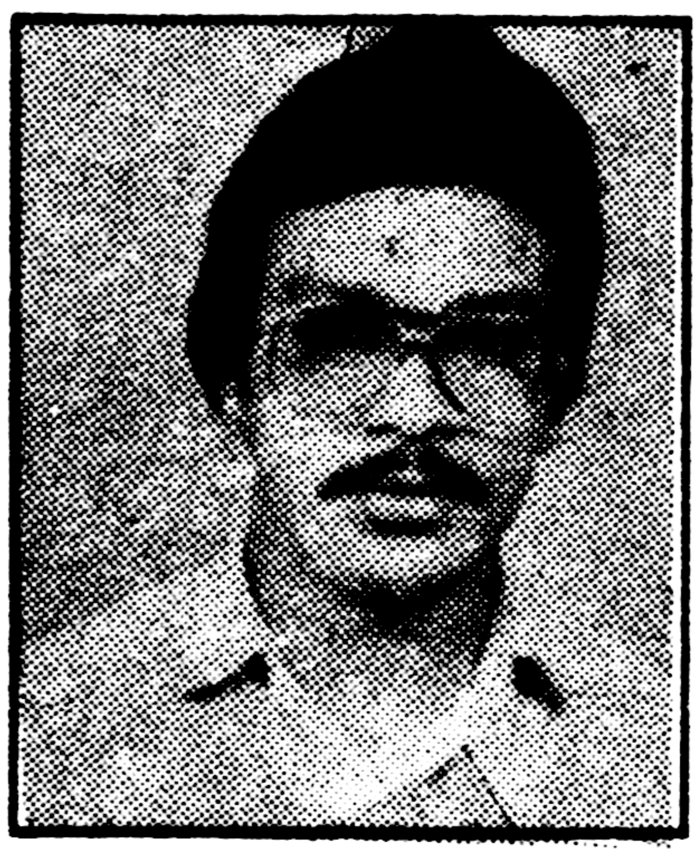
कइसे दुनिया हा अब तोरे बिरान होगे
घर के मनखे मन घलो अब तो आन होगे

रहय सुवारथ जागर, पूंजी मोहो मोहो करैय
ददा दाई कहिके गोड़ हाथ मिसैय
अब तो खटिया मं रे खोखत मरे बिहान होगे ।

मुंह खोझथे खाये बर, आनी बानी ।
अब तो जेवन नोहर होगे रेनई मिलय पानी ।
जेन वधवा रहय कुकुर के मितान होगे

डठके खाही डोकरी डोकरा मन नई तो मरैय
आभा सुनत बेटा पतो के अंतस जरय
अब तो करुहा रे, करेला कस जुबान होगे ।

जेखर दया धरम, अन् धनले मेछराथे
तेला दाना पानी, पसिया वर तरसाथे
करम ला गुनतधुनत, खटिया रे उतान होगे



जन्म - ०३-०३-१९६१ ग्राम-हथबंद (हसदा नं.२) रायपुर
शिक्षा - एम.ए. एम.फिल (भूगोल), आयुर्वेद रत्न
उप. - संत माता कर्मा आश्रम समिति के महामंत्री । समाज द्वारा प्रकाशित पत्रिकओं में लेख एवं कविता का लेखन। निम्न वर्ग के उत्थान के लिए प्रयत्नशील । अध्यक्ष - भामाशाह विद्यामंदर रायपुर ।
पता - छत्तीसगढ़ नगर, टिकरापारा, रायपुर

डा. हेमलाल साहू

जोंख बने माल गुजार

अड़वड़ सिधवा छत्तीसगढ़िया खाये नून वासी
दया मया के भाखा जाने नई जानेस झगरा लड़ाई ।

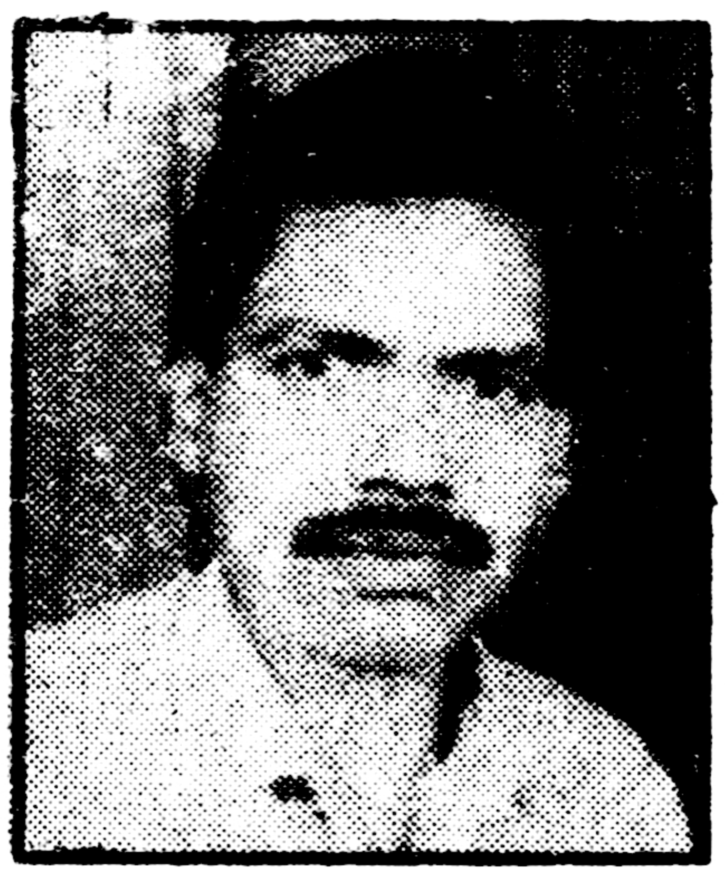
हपट हपट के बूता करे ठाठ वाठ नई जाने
लोगन के हित खातिर पछीना ओगराये
नांगर वखर के जोतइया करेस जग के भलाई ...

खून पछीना के अउट इया तेहा करेसगा कमाई
धरम करम के नाव मा होयय तोर लुट ाई
वहिरी के मनखे आके लूटे होगे तोर करलाई ....

सपूत कहाये तै माटी के निसदिन अन्न उपजाये
सिधवा पन ल देख विदेशी तोला भोकवा बनाये
अब पारखी बनके पराखव खून चूसवैया कैसे मोटाइ...

लोटा लेके लूटे आइन, जोख बनगे माल गुजार
माटीपूत कहिके तोला बना दिस गा बनिहार
रोटी अउ वेटी लुट गे देख तोर सिधाई ।

सरबस हरगे तूंहर भाई बांधव गा अब हिम्मत
सोना के उपजइया साथी वनावव तुम गा सुम्मत
मार भगावव अइसन बेंदरा ला हक बर करव लड़ाई ....



दुर्गा प्रसाद पारकर

जन्म - ११-०५-१९६१, बेलौदी (नगपुरा)
शिक्षा - एम.काम. एम.ए. (हिन्दी)
प्र.कृ. - सीधवा झन समझव (काव्य संग्रह)
उप. - अंचल के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन। प्रधान संपादक छत्तीसगढ़ी तिमाही पत्रिका छत्तीसलोक
पता - १४८ ई. रिसाली सेक्टर, भिलाई, जिला-दुर्ग

छत्तीसगढ़ कहां हे

भारत के नक्सा म
भोकवा ह गुरुजी ल पुछथे
गुरुजी ।
कते ठउर म छत्तीसगढ़ हे
देस बिदेस म
जेखर सोर बगरे हे
वोहा कतेक बड़ हे
गुरुजी कथे
भोकवा तोर बुध ल
मार दे हे लोकवा
अरे । छत्तीसगढ़ तो
भारत के
सहर-सहर अउ गांव-गांव म हे,
जउन ल जेन जगा
कांटा गड़ जही
मान लेबे बेटा
छत्तीसगढ़ उही पांव म हे
भोकवा ह
कुरिया म महतारी कर
जा के कथे
दाई । छत्तीसगढ़ देखे बर जाहूं
जल्दी आसीसदे
नहीं ते पछवा जहूं
पर बुधिया के
भोलापन ल निहार के
मने मन बिचार के
महतारी के आंखी ह
आंसू ल ढार दीस
देखते देखत
दुख के गंगा बोहागीस
महतारी कथे, बेटा ।
तै कहां जाबे
मोला देखत हस
बिन दवई के बिमारी म
मरत हवं
मय गरीबिन ममता के
सिवा, अउ काला दंव
जिहां जाबे
तयं मोला पाबे
गरीबी उपेक्षा जिहां जिहां हे
मान ले बे रे मोर दुलरुवा
उही अभागिन के कोख म
छत्तीसगढ़ हे ।



सुशील भोले

जन्म - २-७-१९६१ नगरगांव (मांढर) रायपुर ।
शिक्षा - हायर सेकेण्डरी
प्र.कृ. छितका कुरीया (छत्तीसगढ़ी काव्य संकलन) दरस के साध (लम्बी कविता)
उप. - छत्तीसगढ़ी मासिक पत्रिका "मयारूमाटी" का संपादन। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में व्यंग्य, काव्य का लेखन लहर, फूल बगीचा, जोगी-जोड़ा, आगे बसंत बहार, भोले बाबा, जसगीत आदि । आडियो कैसेट का निर्माण, लेखन तथा गायन ।
पता - छत्तीसगढ़ स्टूडियो, संजय नगर, रायपुर

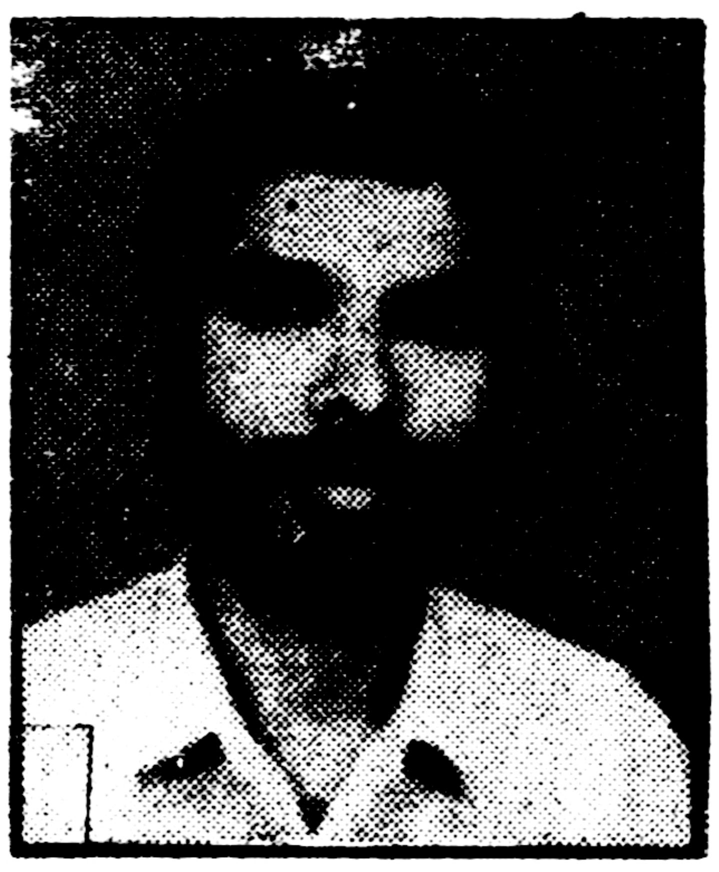
रेजा

चौड़ी आए हौं जांगर बेचे बर, मैं बनिहारिन रेजा गा
लेजा बाबू लेजा गा, मैं बनिहारिन रेजा गा ..

सूत उठके बड़े बिहन्चे काम बुता निपटाए हौं
मोर जोड़ी ल बासी खवाके रिकसा म पठोए हौं
दूध पियत बेटा ल फेर छोड़ाए हौं करेजा गा
लेजा बाबू लेजा गा, मैं बनिहारिन रेजा गा ..

बेरा उवत के खड़े-खड़े देखत हावौं मैं मालिक
मुंड म आगे सुरूज नरायन ले जा तैंह ए मालिक
जांगर भर कोड़हू कमाहूं एक बेर बेरा देजा गा
लेजा बाबू लेजा गा, मैं बनिहारिन रेजा गा ..

बनी बिना तो ए बनिहारिन रहि जाही लांघन
मैं नइ खाहूं त मोरो पिलवा कइसे पाही जेवन
मोर जोड़ी तो अपन कमई के नइ देवय एक बीजा गा
लेजा बाबू लेजा गा, मैं बनिहारिन रेजा गा ..



लूथर मसीह

जन्म - १०-०२-१९६२ खैरागढ़ (राजनांदगांव)
शिक्षा - एम.ए. लोक प्रशासन
उप. - विगत नौ वर्षो से सतत् रंग कर्म । विभिन्न हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी नाटकों में प्रदेश तथा प्रदेश के बाहर अभिनय एवं नेपथ्य कर्म । देश के प्रख्यात रचनाकारों की कविताओं के लिए रेखांकन । स्वयं निर्मित नाट्य मुखौटो का प्रदर्शन । सुप्रसिद्ध नाटक जरनैल सिंह का निर्देशन ।
पता - काली नगर, काली मंदिर के पास, पंडरी (रायपुर)

अब अंजोर होही

चारों मुड़ा अंधियार
अउ सन्नाटा मं

सुते रहिस छत्तीसगढ़ माई पिल्ला
दिया मं अभी तेल हावय

धीरे धीरे सुकवा उवत हे
पहाटिया के आरो होगे हे

ओखर लउठी के ठक ठक
बिहान होए के संदेशा
अब-

छत्तीसगढ़ के आंखी उघरत हे
अपन अधिकार बर लड़त हे

छत्तीसगढ़ मं
अब अंजोर होही
अब अंजोर होही ।।



राकेश तिवारी

जन्म - ०१-०५-१९६२ जेवरा (बेमेतरा)
शिक्षा - एम.ए. अर्थशास्त्र, लोक प्रशासन, लोक संगीत में डिप्लोमा
उप. - आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से गीतों का प्रसारण, वीडियो फिल्म लेड़गा ममा, जय मां बम्बलेश्वरी, अधर्मी, चटिया-मटिया के लिए गीत लेखन, अभिनय तथा संगीत निर्देशन । चित्रोत्पला लोककला परिषद के संस्थापक, निर्देशक ।
पता - २९/३८६ लिली चौक, रायपुर

सुवागीत (बारामासी)

अपन अपन घर ला लिपी-पोती डारव नारे सुवाना
के आवत हावय सुघ्घर तिहार

सावन हरेली अउ राखी तिहारे नारे सुवाना
के भाई मन हा राखी बंधाय, नारे सुवाना

भादो मं तीजा-पोरा, क्वारे दसरहा नारे सुवाना
के बहिनी लिहे बर जाय, नारे सुवाना

दिन देवारी कातिक महीना नारे सुवाना
के अघ्घन मं लक्ष्मी मड़ाय, नारे सुवाना

पुसे अउ मांघे मं मातर मड़ई नारे सुवाना
के फागुन मं रंगे उड़ाय नारे सुवाना

चईत मं रामनवमी, देबी जंवारा नारे सुवाना
के जगमग जोत जलाय, नारे सुवाना

बइसाख अउ जेठ म बरे बिहावे नारे सुवाना
के अषाढ़ मं रथे रेंगाय नारे सुवाना



डा. सीताराम साहू

जन्म - १६-८-१९६२ रावाभाठा (रायपुर)
शिक्षा.- एम.डी.ई.एच., आयुर्वेद रत्न, लोकसंगीत में डिप्लोमा।
प्र.कृ. - डोंहड़ी (काव्य संकलन), बंजारी धाम एवं बंजारी भजन माला।
उप. - अंचल के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में समय समय पर कविताओं का प्रकाशन, आकाशवाणी रायपुर से भी काव्य प्रसारण ।
पता - ग्राम - रावाभाठा, रायपुर

बसंत महराज

ऋतु राज बसंत के
पहुना कस अगुवानी बर
माघ के महिना
धरे लोटा भर पानी, खड़े हे
मोर बसंत आवत होही ।

डोंगरी के परसा
अगनित पेड़वा
बगिया के फूलवा
मोर बसंत आवत होही ।

श्रृंगारे हे अमुवा
मौरे हे डारी
गावत हे भंवरा
उड़ उड़ फुलवारी

पिंकयाय लागे महुआ
तेदूं अउ चार
आगे ऋतु राज, आगे ऋतु राज



विमल तिवारी

जन्म - ०१-०१-१९६३ केशकाल (बस्तर)
उप - अंचल के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित । आकाशवाणी केन्द्र जगदलपुर से भी कविता पाठ का प्रसारण ।
पता - केशकाल (बस्तर) मध्यप्रदेश

दीया प्रेम के जलाओगा

मया के बाती ले के
दीया प्रेम के जलाओगा ।
घर घर गली गांव
मिर जुल के सवझन ।
दीया प्रेम के जलाओगा ।
अज्ञान ला मिटाये बर
अंधकार ला भगाये बर
सहयोग ला बढ़ाये बर
प्रेम के दीया जलाओगा ।
जगमग अंजोर करव
भेदभाव ला दूर करव ।
गांव के भाग ला जगाओगा

प्रेम के दीया जलाओगा
सबके साथी दीया है
सबके घर म बरे ।
अंजोर करे बर
नई देखे छोटे बड़े ।
सबके जिनगी म

अंजोर बगराये बर
दीया जलगें
दीया प्रेम के जलाओगा ।।

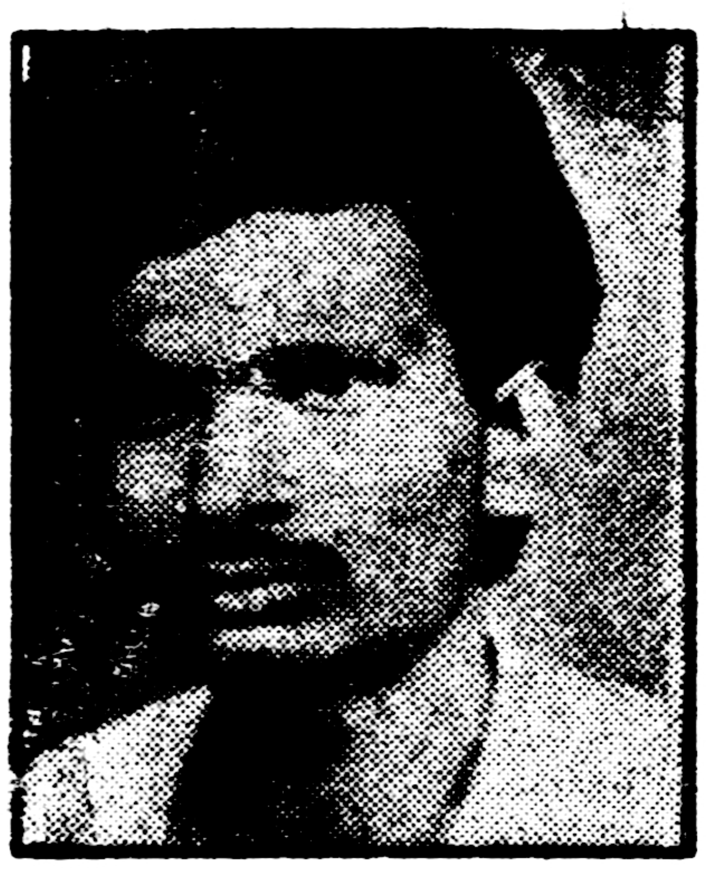


नरेन्द्र प्रजापति

जन्म - ०१-०१-१९६३ नगरी (रायपुर)
उप. - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के लिए काव्य लेखन ।
पता - नगरी, जिला - रायपुर

अक्षर ज्ञान कराना हे

लईहा के ला बईहा लेगे
नवां जमाना लाना हे,
सुवा मैना, कुकुर बिलई ला
बहुते सिखायेन पढ़ायेन
अब बेरा कहां हे
पशु पक्षी ला पढ़ाय सिखायके
अब तो हमला
अनपढ़ अज्ञानी मन खेला
पढ़ना लिखना सिखाना हे
थूंके थूक मा बरा नरतो चुरय
नारा लगाथे चम
हमर देश महान नइ बनय
तनिक फिकर करना हे
मनखे तन के मरम समझना हे
घर परिवार
समाज अऊ देश ला
सबले सुघ्घर बना ले
शहर के रेजा कुली
गांव के मजदूर बनिहार
कन्हू झन झूट य भाई बहिनी
अंधरा अऊ भैरा ला तको
अक्षर ज्ञान कराना हे ।।



किशोर कश्यप

जन्म - ०१-०१-१९६४ ग्राम - मल्हारी (नगरी)
सिक्षा - बी.ए. (द्वितीय वर्ष)
उप. - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के लिए काव्य लेखन ।
पता - ग्राम - मल्हारी (सिहावा नगरी), जिला-रायपुर

वाह रे मनखे तय

मनखे मन हा मनखे ला मारे के
उपाय खोज डारिन हे
परगति के नाव ले लेके
मनखे के दुरगति कर डारिन हे
बड़े बड़े घर बनाइन
अब जगा होवत हे कम
जीये बर आनी बानी के दवा त
मनखे मारे बर हे बम
अतका बड़ पीरिथवी ला
छोट कुन कर डारिन हे
डोंगरी ला कोन पुछय
चंदा मां पांव मड़हाइन हे
चिरी साही मनखे
आज हवा में उड़हावत हे
पानी मां मंगर साही
जिंनगी पहावत हे
अरे मनुख तय महाभारत के संजय साही
घर बइठे झगरा देखत हस
परदेश मा होवत हे क्रिकेट
अउ तय इहां से मंजा लेवत हस
सबो बात तो हे बने-बने
फेर काबर तय इंसानिय ला खोवत हस
मनखे मनखे बाटि क बांटा होयके
देव धामी ला घलो बांट दारत हस



छगनलाल सोनी

जन्म - २०-०३-१९६४ भिलाई,
शिक्षा - हायर सेकण्डरी,
उप० - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन । प्रलेस भिलाई का सक्रिय सदस्य,
पता - सुभाष चौक भिलाई -३

सरकार हमर

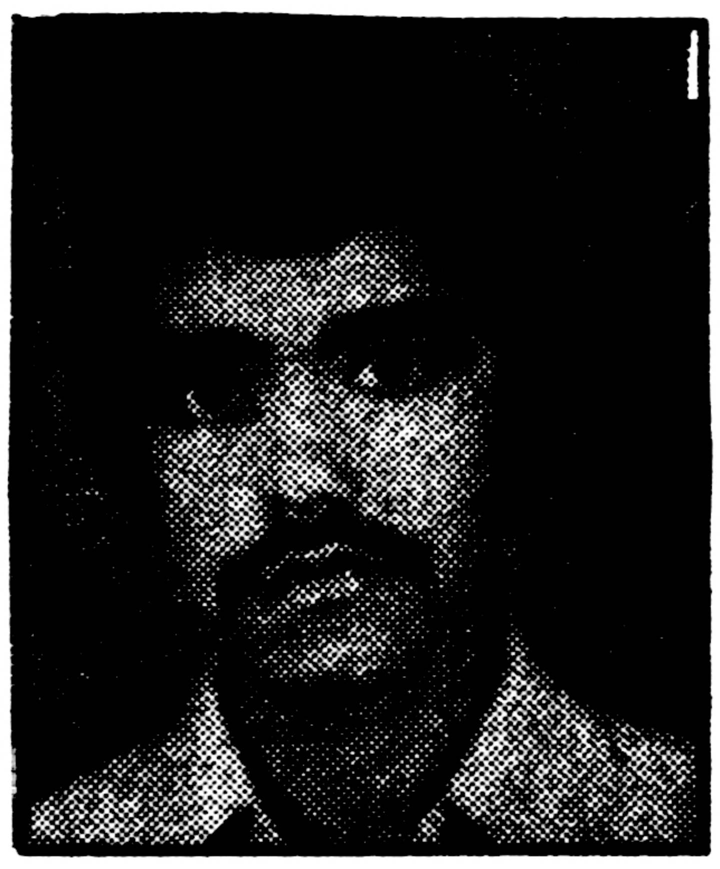
बेंदरा नाच नाचेथे संगी, अइसन हे सरकार हमर
आस जगाथे असवासन मं लबरा हे सरकार हमर

का जिनगी के जीयई ल कहिबे, करलई होगे पेट के आज
सुरसा कस मंहगाई बाढ़य घी कस भाव हे तेल के आज
मिन्झरा जीनिस के भाव हे दुना, अइसन हाट बजार हमर

छोड़ के भागे खेत खार ल नौकरी खोजय दाऊजी देख
विपत परे मं बैंक के करजा बाढ़ी मांगय खाउजी देख
काठा बोके मुठा लुवत हन, अइसन खेती खार हमर

चाय-पानी के चले चलागन, चारो कोति अउ सबो जगा
ठगे के कतको नौकरी करथे, जा पइसा दे तहूं ठगा
विकास धरागे गहना अब तो, अइसन भ्रष्टाचार हमर

टरक झंपाये मनखे उप्पर, रेल बिछलथे पटरी ले
देखव सुते हे सड़क बेवस्था, बस चलय बिन परमिट के
समधी भेंट बर रोज अभरथे, अइसन मोटर कार हमर



जन्म - २०-०४-१९६४
शिक्षा - बी.काम, एम.ए., एल.एल.बी.
उप. - विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में समय समय पर रचनाएं प्रकाशित ।
पता - शिक्षक, प्रा. शाला. खटोला (अकलतरा) जिला-बिलासपुर

छेदी शर्मा "अनल "

घर फोरवा दारू

हाय रे घर फोखा दारू...
हमर दाई नरियाय - हमर करम फूटे हाय, हमर करम फूटे हाय
हमर लइका नरियाय - हाय रे घर फोखा दारू..

एखर आनी बानि के नाम, पीके दिखथे अमली-आम
बुद्धि हमर सिरावे भइया, बिगरै जम्मो काम

पढ़े लिखे बर जाय न दूरी - दूरा बाढ़त जाय
तन के रोग लगावे दारू पइसा घलो सिराय

घर के भीतर माते झगरा बाहिर घलो सुनाय
दुनियां भर के मंजा लेवइया ठट्ठा हमर बनाय ।।
हमर करम फूटे हाय

हमर दाई नरियाय - हमर करम फूटे हाय, हमर करम फूटे हाय
हमर लइका नरियाय - हाय रे घर फोखा दारू.

महर करम के नाश करे बर दारूघर में आय
घर के पोल उजागर होवे इज्जत घर के जाय

ये दारूके नाम न लेवे जेखर नाम शराब है
धन औ धरम गंवाये दूनो ऐसन चीज खराब है

अंगना-अंगना बांधौ गइया, देखो तनिक निहारि के
कतेक बनाइस कतेक बिगारिस, सोचो तनिक बिचारि के

कतका दुख हम पाथन एमा जम्मो सुख ल मारिके
छांड़व जम्मो दारूसंगी, पीओ दूध तिहारि के
करनी सुघ्घर करे म संगी जग सुग्घर हुइ जाय ।। हमर दाई



संतोष कुमार कश्यप

जन्म - ०१-०१-१९६५ ग्राम डोंगाकोहरौद (पामगढ़) बिलासपुर।

शिक्षा - एम.एस.सी. (गणित)

उप. - आकाशवाणी रायपुर तथा बिलासपुर से छत्तीसगढ़ी कविता का प्रसारण तथा स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में कविता तथा लेख का प्रकाशन ।

पता - व्याख्याता, शा.बहु.उ.मा. विद्यालय जांजगीर (बिलासपुर)

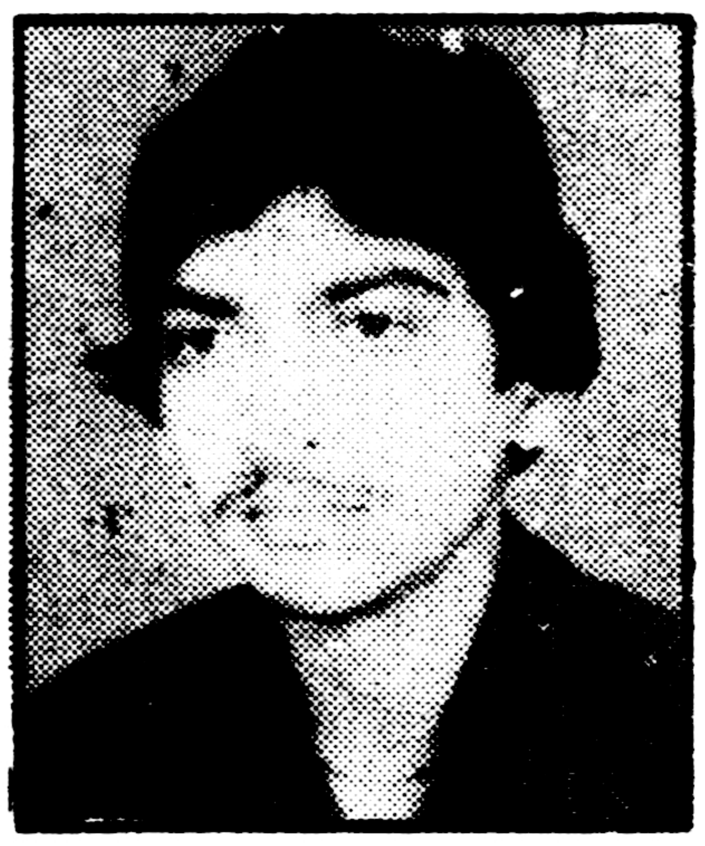
गरीबी

भारी दुखदाई ए गरीबी हर राम ।
जिनगी पहागे कभू नइ मिलीस अराम ।।

घर छितका कुरिया टिप टिप चूहै पानी ।
जुगुर जागर चिमनी म कटगे जिनगानी ।।
पेट रइथे उन्ना कतको करथन काम ।
भारी दुखदाई ए गरीबी हर राम ।।

जी रखाउल खाना अउ रुर घुर जिआई ।
सीथा बर लइकामन होथे लड़ाई ।।
उपर मंहगाई घर नइए छदाम ।
भारी दुखदाई ए गरीबी हर राम ।।

कतको बियाज देथन लागा नइ छुट ावैं ।
जाड़ बैरी कट जाथे कमरा नइ लेवावै ।।
भाग म हे चिखला अउ करा पानी घाम ।
भारी दुखदाई ए गरीबी हर राम ।।



चंद्रशेखर चकोर

जन्म - ०१-०१-१९६५ ग्राम - कांदुल
शिक्षा - स्नातक, शास्त्रीय संगीत २ वर्ष, लोक संगीत १ वर्ष ।
प्रकृ. - मड़वा तीर करसा (ददरिया संग्रह)
उप. - ददरिया संग्रह, प्रकाशन को लगभग तैयार । छत्तीसगढ़ी नाटक छत्तीसगढ़ के बेटा का लेखन तथा सफल निर्देशन । विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। पुधव सांस्कृतिक संस्था का निर्देशक ।
पता - ग्राम - कांदुल, पो. सुन्दर नगर, रायपुर

ददरिया

तंय कुहुक झन कोईली,
सुहावत नइये बोली ।

वइठे गोबरहिन बम्भूर छईहा ।
मोर खेती हे झुख्खा आंखी म लईहा ।

कउहा म खोंधरा झुलत हे डोरी ।
का मंगईया बनंव के करंव चोरी ।

ठों ठों हे दर्रा भरकाहा नहर ।
का खेती ल बेंचव जावंव सहर ।।

अइलाहा धान अउ हरियर कांसी
का लईका सुवारी संग लगा लंव फांसी ।

ठुड़गा त ठाढ़े गाहदे रुख हे चूप ।
होगे जिनगी भंवर अउ दुनिया कुलूप ।।

नवा है भांड़ी चिकन परदा ।
ये दे भट के मन देवता देखा दे निक रद्दा ।।



अनूप रंजन पांडेय

जन्म - २१-०७-१९६५ बिलासपुर (म.प्र.), शिक्षा - एम.काम., डी.आई.वी., बी.जे.एम.सी.।

उप. - सुप्रसिद्ध रंगकर्मी हबीब तनवरी के निर्देशन में विश्व प्रसिद्ध थियेटर हे मार्केट, लेसेस्टर, ट्रामवे, ग्लासगो में कला प्रदर्शन। देश के विभिन्न कला महोत्सव में शिरकत, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में विगत दस वर्षो से कला, संस्कृति से संबंधित आलेखों का प्रकाशन। साक्षरता से संबंधित प्रदेश में लगभग दस नाट्य गीत कार्यशालाओं का संचालन।

पता - अभिव्यक्ति राज्य संसाधन केंद्र ७ वैशाली नगर, कोटरा रोड, भोपाल

नंगरिहा

बड़े फजर ले चले नगरिहा, जोते बर हे खेत।
वेरा के ठढ़ियावत संगी, मुसुवा कुदय पेट।।
मुसुवा कूदय पेट, बइठ वंभरी के छईहा।
टूरी बासी लानय, खिंचय सरपट सईया।।
कह पांडे कविराय, नगरिहा धनतोर जांगर
जब देखौं तो फटहा निगौटी, खांध म नागर

चाय के महिमा

घर भर के जब सूत के उठय, मुंह ले निकलय चाय
डोकरी डोकरा लईका च्चिका, सब ला गजब मिठाय।।
सब ला गजब मीठाय, घर मा जब पहुना आवय।
चूल्हा म झट चाय के डेचकी चढ़ जावय।
कह पांडे कविराय, नंदागे दूध दही सब
बनगे हाबय अमरित, चाहा कलजुग केअब

भ्रष्टाचार

सुरसा के मुंह कस बाढ़त हे निस दिन भ्रष्टाचार
नेता, मंत्री, संतरी, साहेब, बाबू हवलदार।।
बाबू हवलदार, रंगे घूसखोरी रंग मा।
देश के बड़का मंत्री घलो, चलेहे संग मा।
कह पांडे कविराय, बैपारी गजब मंजा उड़ावय।
मंहगाई के मार के, जनता के नारी जुड़ावय।



जय प्रकाश मानस

जन्म - ०२-१०-१९६५ रायगढ़ (म.प्र.), शिक्षा - मास्टर डिग्री ।
प्रकृ. - हमारे लोक गीत, कलादास के कलाकारी (प्रथम छत्तीसगढ़ी व्यंग्य संकलन)
उप - १९८९ में म.प्र. लोक सेवा आयोग से चयनित होकर जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी के रुप में कार्यरत । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी कविता पाठ का प्रसारण । एवं देश के प्रतिष्ठित अखबारों एवं पत्रिकाओं में भी रचनाएं प्रकाशित । सृजन - सम्मान सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संख्या के संस्थापक सचिव ।
पता - जी११/२४ ई.ए.सी. कालोनी, रायपुर

ऋतु फेर बसंत के आगे

उत्तर दक्षिन पूरुब पश्चिम
जउन अंग देखबे तउन अंग
रुक राही जम्मो हरियागे
ऋतु फेर वसंत के आगे ।।

सूर सूर सूर सूर पवन चले
कू-कू-कू-कू कोयली बोले
राजा आमा चार मौरागे
ऋतु फेर बसंत के आगे ।।

झर-झर-झर-झर झरथे झरना ।
चल-चल-चल-चल नदी के कहना ।।
नस नस मां उमंग हा समागे
ऋतु फेर बसंत के आगे ।।

गम-गम-गम-गम महुआ महके ।
चम-चम-चम-चम फरसा चमके ।।
सरग ह धरती ले लजागे
ऋतु फेर बसंत के आगे ।।



नारायण बरेठ

जन्म - ०४-०५-१९६६, अकलतरा (बिलासपुर)
शिक्षा - बी.काम
प्र.कृ. - बोहनी
उप. - अंचल के सभी पत्र पत्रिकाओं में कविता, क्षणिका, गीत, गजल एवं गद्य रचनाओं का निरंतर प्रकाशन। आकाशवाणी रायपुर तथा बिलासपुर से भी रचनाएं प्रकाशित। साक्षरता अभियान में भरपूर हिस्सेदारी।
पता - अकलतरा, जिला-बिलासपुर

का करबे संगी

का करबे संगी कईसनों करके जी लेबो ग,
कभू रइबो लांघन कभू पसिया पी लेबो ग।

फरी तेल बिना तो तन निमगा भूसड़ीयाय रथे,
त खाय बर कहां ले हम डालडा घी लेबो ग।

धन तो कान हे त कथा ल सुने बर मिलिस,
हमर मेर पैसा नइये त का आरती लेबो ग।

खोदसना मार के देख झोइला बांचे हावय,
धोखा म झन रइहा समे म भभकी लेबो ग।

अराई कस कोंचत हे घर के दसना पीढ़ा ह,
बतावा चार पहर हम कइसे झपकी लेबो ग,

ले न ग एको कोहा खोभिया के आउ मार,
जीयत-जागत रइबो त तोर नाव नी लेबो ग।



राजेन्द्र पाण्डेय

जन्म - ०१-०३-१९६७ लिटीपुर (नवागढ़) दुर्ग
शिक्षा - एम.ए. (राज.शा.) एवं (संस्कृत) लोक संगीत में डिप्लोमा ।
उप. - आकाशवाणी द्वारा कविताओं का समय समय पर प्रसारण । अनेकों कवि सम्मेलन मंच पर कविता पाठ ।
पता - राममंदिर, बूढ़ापारा, रायपुर

छत्तीसगढ़ के माटी

मोर छत्तीसगढ़ के माटी मय खेलव भंवरा बांटी
सरग ले सुन्दर ये भूइंया मा छुटय मोर परान ।
चारो कोनहा म सुख के किरन
ना चोरी न भय के बात
ना झगरा ना झांसा भईया
दिन होवय के रात
अपन करम के रोजी रोटी म सुख उपजय ये मान
खेत खार मोर चारों धाम
ये नांगर, बइला, कांशी
मेहनत परगट महादेव
मय नित दरशन के पियासी
जेकर बल म धरती संगी- उगवय मोती धान
तोर कोख के रतन बेटा
होइन हे आज्ञाकारी
वीर-नारायण सुन्दर लाल
सिरी प्यारे लाल हितकारी
थके हारे मनखे मन के होंगय भगवान
भोरमदेव, डोंगरगढ़ पावन
राजिम चम्पारन सुखधाम
मनखे दरशन पांवय संगी
होवंय पूरन काम
महानंदी शिवनाथ हे गंगा- छत्तीसगढ़ हे महान
सरग ले सुन्दर ये भूइया म छुटय मोर परान



दिलीप कुमार ताम्रकार

जन्म - ०५-०३-१९६७ रायपुर (म.प्र.)
शिक्षा - एम.काम., मास्टर आफ फिजिकल एजुकेशन एवं बी. म्यूज
उप. - आकाशवाणी से कविताओं का प्रसारण । टेली फिल्म पिंजरा के मैना, संगी के मया, प्यार के बंधन, माटी मोर महतारी में अभिनय। छत्तीसगढ़ी कविता लेखन में व्यस्त ।
पता - ताम्रकार बाड़ा, कंकालीपारा, रायपुर

मोर भारत महान हे

मोर भारत महान हे संगी मोर भारत महान हे रे
ये खर दू इन वेटा संगी सैनिक अउ किसान हे रे
मोर भारत महान हे ---

ये किसान हर खेती करके सवके भूख मिटाथे,
अउ सैनिक हर लड़ाई लड़के देश ला वैरी ले वचाथे,
ये दूनों भाई के रे संगी हल अउ वंदूक निशान हे,
मोर भारत महान हे संगी मोर भारत महान हे रे

ये किसान हर देश के खातिर दुख पिरा के आंसू पीलेथे,
अउ सैनिक हर देश के खातिर मर-मर के जी ले थे,
यही दूनों हर देश के संगी देवता अउ भगवान हे,
मोर भारत महान हे संगी मोर भारत महान हे रे,

ये भारत के भुईयां मा संगी सवो जात धरम के वास हे,
कोनो किसान कोनो सैनिक वनके देश के लाज वचावत हे,
इहें नानक इहें ईसा संगी इहें राम अउ रहमान हे,
मोर भारत महान हे संगी मोर भारत महान हे रे



संजीव चंदेल

जन्म - १९-०६-१९६७
शिक्षा - स्नातक
उप. - छत्तीसगढ़ी एवं हिन्दी कविताओं का विभिन्न स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशन । अनेक काव्य गोष्ठियों में भागीदारी ।
पता - साहित्य भवन अकलतरा, जिला-विलासपुर

सहर के बिमारी

गांव के दूरी चिपरी ।
आन गांव के मोटीयारी ।।
जाइसे तोला सहर के रे ।
लागे हावय परेम विमारी ।।
गांव के दूरी ..

आंख म लगाए चसमा ।
जिऊरा नइ हे मोरे वस मा ।।
टुकुर टुकुर देखय पारा भर ।
गारी देवय तोरे महतारी ।।
गांव के दूरी ..

ओंठ म चढ़ाए लाली ।
कान म फंसाए वाली ।।
चूंदी म खापे फुलवा ।
हांसय देख तोरे महतारी ।।
गांव के दूरी ..

दगा दइथे सहर वाला मन ।
छोड़ी दइथे रद्दा म ओ मन ।।
एती के न ओती के तय रइवे ।
आवै तय हर अपन खोर दुआरी ।।
गांव के दूरी ..



जन्म - ०६-०४-१९६७ जिला-रायपुर
शिक्षा - बी.एस.सी., एम.ए., एम.फिल (हिन्दी)
उप. - हिन्दी तथा छत्तीसगढ़ी में कविता लेखन ।
पता - नया गंज वार्ड, भाठापारा (रायपुर)

कुमारी रंजना शर्मा

गोंदा के फूल

मोर मन बारी के गोंदा फूल
बिन पानी बिन जतन सुखागे
दिन हा ढरगे रात पहागे
चइत बीतगे फागुन आगे
हांसी बनगे डूमर फूल
खुशियाली के सुध बिसरागे
मोर मन बारी के गोंदा फूल
बिन पानी बिन जतन सुखागे
तोर आए के देखत रस्ता
सुघ्घर जनम अबिरथा गंवागे
ये मोर जिंदगी घोंघी के मोती
आंखी ले आंसू बन के बोहागे
मोर मन बारी के गोंदा फूल
बिन पानी बिन जतन सुखागे
मया मोह अउ मन के पिरीत
ठाड़े हे रुख जस नंदिया के तीर
थोकन पानी जोर से आगे
पेड़ हा गिरगे माटी बोहागे

मोर बारी के गोंदा फूल
बिन पानी बिन जतन सुखागे
काबर मन भुइयां ला छोड़े
काबर तैं अकास उड़ागे
कब ते परभु ला भजबे
जब बाती जरगे तेल सुखागे



देवनारायण शर्मा

जन्म - ०१-०१-१९६८, ग्राम भैसमुड़ी (रायपुर)
शिक्षा - एम.ए. हिन्दी
उप. - आकाशवाणी से कविता पाठ का प्रसारण विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचना प्रकाशन ।
पता - संजय नगर, रायपुर

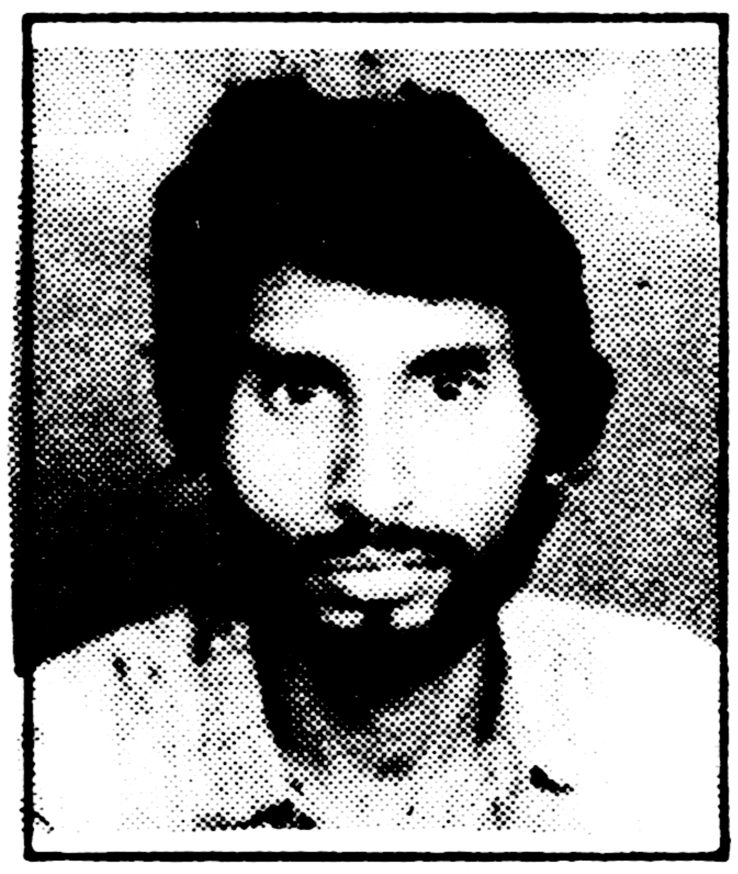
तैंहा खेत जा

खेती किसानी तोर करम ये तोर नसीव ये वेटा
चल धर ले नांगर रे, तैहा खेत जा ।

झगरा के वंजर भुइंया में, सुनता के धान उगावे ।
रस्ता के कांटा ला वीन के, मया के फूल लगावे ।।
तै मया के वादर रे, तैहा खेत जा ।

दुनिया के सेवा करवे तैं, देश के लाज वचावे ।
खून-पसीना तैहा वोल के, सव ला अन्न खवावे ।।
तोर हिरदे सागर रे, तैहा खेत जा ।

दुनिया हा मुंह जोहत हे, धर ले नांगर तुतारी ।
सोना जइसे धान लगा ले, तै भुइंया के पुजारी ।।
नई थकय ये जांगर रे, तैहा खेत जा ।



गोविंद धनगर

जन्म - ०५-०१-१९६८ बोरिय खुर्द रायपुर
उप. - आप कुछ छत्तीसगढ़ी गीत एवं भजन लिखे है । छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक पार्टि यों से भी सम्बद्ध है आप चित्रकार भी है ।
पता - बोरिया खुर्द, रायपुर

माटी के घरघुंदिया

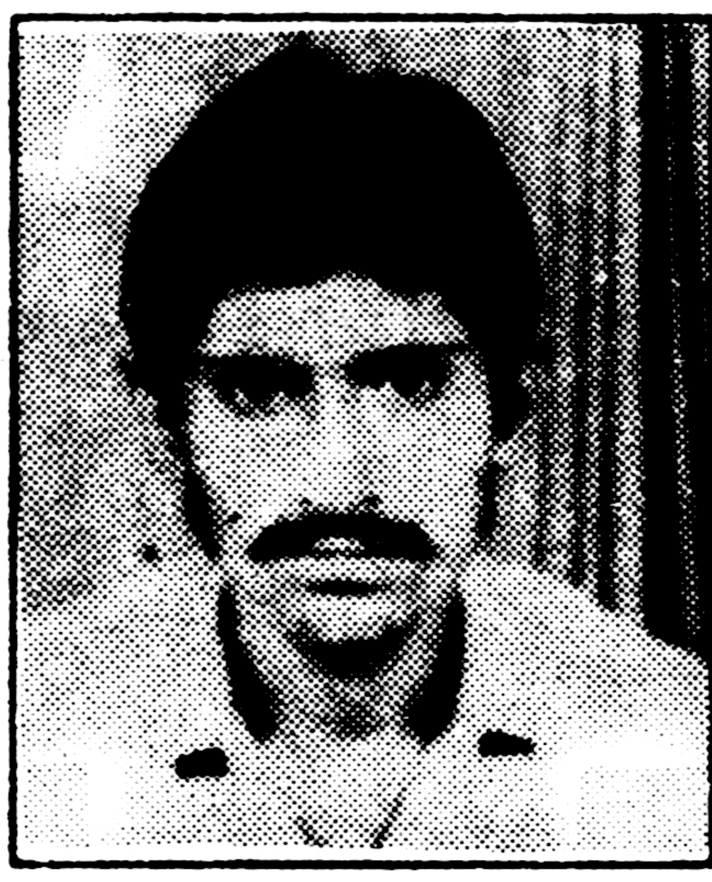
तन तोर माटी के घरघुंदिया हे
खेलउना बरोबर ....
छिन छिन दुख सुख आही जाहीं
पहुना बरोबर ..

माटी गोटी कस महल अटारी
सब छुट जाही अंगना बारी
धुर्रा कुदरी कस माल खजाना
माटी के पुतरी सब संगवारी
आही लेगइया रोवत जावे
गउना बरोबर ....

आही लेगइया चामुक बजावत
भांवर परही माटी संग
सगा तेलइ के आगी सिपचाही
पिंवरा गे माटी के रंग
झूठ लबारी के समधी सिरजाये
मिलौना बरोबर ....

भाई भाई धरती बाटे
पंच बलाइस बस्ती के
करम के खाता देखीन मालिक
चवगुना बियाज हे मस्ती के
भटकट रही जाही नाम बिना जीव
बिन पांखी के परेवना बरोबर........

सोंदे चिखे जिभा के परसादे
खाये खीर मलाई रे
करकाया के सत करम धरम
दुनिया खोजत रही जाही रे
ममहावत रही जाही नाम जगत में
टउना बरोबर ...



जन्म - ०६-०२-१९६९ जेवरा (बेमेतरा)

शिक्षा - एम.ए. बी.पी.एड.

उप. - कलयुगी ट्युसन व जय लंकेश (व्यंग्य छत्तीसगढ़ी में) संघर्ष पत्रिका में । विभिन्न आंचलिक कवि सम्मेलनों में भागीदारी ।

पता - शास्त्री सदन के सामने, गंजपारा, बेमेतरा जिला-दुर्ग

राजेश कुमार तिवारी

छत्तीसगढ़ म छंद (व्यंग्य)

ार्रा पर्रा लाई हे अउ छर्रा छर्रा भात
ात म वइहा वो नई मानय, घड़कौ तुमन लात

जगा जगा म देखव भइया, भाषन अडडवड़ वरसत हे
जनता दुखियारी हे भैय्या एक दाना वर तरसत हे

मोट यारी नोनी ह मुंह ल लुकालुका के भभकत हे
जनता मन मछरी ए, नेता मन रहि रहि के छपकत हे ।१।

भ्रष्टाचार अउ मंहगाई ह जव्वर मुह ल फारे हे
दिल्ली अउ भोपाल वाले मन, कुट कुट ले कुट डारे हे

अधकूचरा मनखे हो गेहे, सिधवा खावय लात
चोरहा हमला चुहक डरे हे, खपला गेहे परात

कतेक ल तुम लतियाहू, अउ कतका ल कट वाहू
करदव उखर नींद हराम, हाथ म लौड़ी धरके तुमन करदव गा संग्राम

शक्कर ल फक्कर ह फांकय, झूमरय वोहा वस्ती मं
जनता मन बस राय फांय हे, वो ह पीयय वस्ती मं

मोटियारी नोनी ल देखले, लटकत हावय फांसी मं
वेवस उखर महतारी हे, ददा मरय दमा खांसी मं

दहेज के लोभी अउ चोरहा ल, करदव चाऊर पिस
हाथ म लौड़ी धरके तुमन, करदव गा संग्राम ।३।



निरंजन सिंह साहू "विद्रोही"

जन्म - २१-०५-१९७० विरेझर (रायपुर)
शिक्षा - एम.ए. (अंग्रेजी)
उप. - कुछ छत्तीसगढ़ी रचनाएं स्कूल कालेज की पत्रिका में प्रकाशित।
पता - छत्तीसगढ़ नगर टिकरापारा, रायपुर ।

दिया खालहे अंधियार

जनता मरे पोट पोट देश में अतेक गरीवी हे ।
ओ वइठे हे खुर्सी में, वोकर कइसन नीती हे ।।

वो खाय हलवा पुड़ी, तोर खेखड़ाहा रोटी ये,
वो पहिने सोनहा धोती, तोर चिरहा निगोटी ये ।
तोर मन टुटहा के टुटहा वोकर वर सव सिद्धी हे
तोर तो सुदामा कुटी, वोकर महल हवेली ये

तोर तेल तीली अरसी, वोकर चम्पा चमेली ये ।
तोर लइका वर चैनस फराक, वोकर सलवार मिडी ये ।
अफसर के वेटा अफसर, नेता के वेटा नेता ।
तोर तो निचट गदहा होगे, वोकर होगे सचेता ।।

तोला वोहा टुं हू देखाय इही राजनीती ये
ते वोकर वर सरहा हस, मरहा हस, विमरहा हस
भाटा असन कड़हा अस, अउ कोतरी असन जरहा हस ।
मुंहु मे तो मीठे मीठे भीतरी ले वो जिद्दी हे

तोरे कमई ल खावत हे, तूही ल लतियावत हे,
वोह तर वैकुंठ जावत हे, पांच साल में आवत हे ।
भुइयां ल भुलागे, जिहाज म उड़ागे
गरीवी के घानी म जनता ह गुड़ागे
जनता के गरीवी मिटे
निरंजन साहू के ये विनती हे
वो वइठे हे खुर्सी में वोकर कइसन नीती हे ।
छोटे आदामी छोटे वात

कभू वासी कभू भात
कभू कटे सुक्खा दिन
तव कभू कटे सुक्खा रात ।

का तोला दुख गोठियावग, इही आप वीते ये ।
वो वइठे हे कुर्सी में वोकर कइसन नीती है



ज्ञानूराम भारद्वाज

मोर माटी के म
झन पीवे गांजा

दू पइसा
आही तोर

लग जाथे थोरक
मन नइ माढ़े गा

घर म नइ
दूसर करा

देहे नइ सकवे त
होवे तय वदनाम

भट्ठी म
पानी अस

लोग-लइका, दाई
सवो ल भूल जाथे

पी पारथे
नइ करम

खुद तो पीथे दूसर,
घलो ल पीयाथे गा ।

गली घोर म आके,
गारी मार घलो खाथे गा ।

दू पइसा जोर के रखवे,
आही तोर काम गा ।।

16635

अ

२१,